No.



ॐ सूर्य्याय नमो नमो नमः सूर्य्याय ॥

महाधर्म्मोपदेशः ।

काश्यामधिवसता श्रीकौशिल्यगोत्रोत्पन्न-बलदेवप्रसादवर्म्मणा-विरचितः ॥

संसार कोष न्याय पूर्व्वक प्रमाण

* * अन्याय सुखभञ्जन * *

वैष्णवविषयक गीत कन्ना ।

HINDI POEM.

Instructions to Vaishnavs.

COPY

Government House,
NAINI TAL :
21st, April 1904

Sir

I am desired to acknowledge the pages of the book you are writing forwarded with your letter of the 12th instant.

Yours Faithfully
Sd—H. G. S. Tyler, I. C. S.
Private Secretary,

Baldeo Prasad Mehrotra.
CALCUTTA.

Perusal of this poem is solicited.

श्रावण शुक्ल १५ सम्वत् १९६१

दाम अमुल्य १००० [illegible]र प्रथम बार प्रकाशित हुआ।



* अथ बलदेवप्रसाद मेहरोत्र २॥ घरस्थ-कृतम् *

कवित्त ।

जय जय श्रीशारदे, नारायणी मातेश्वरी, श्रीनागरी कृपा करो *
अनेक राग रागणी, प्रकाशमाण भाषणी, भव तारणी दया धरो *
अखण्ड विद्यासागरी, प्रचण्ड शक्ति आगरी, असुरनको ज्ञानी करो *
बलदेव को बसै मन, ध्यान तेरे चरण मे, कलयुग की माया हरो *

NOTICE

The undersigned requests the favour of the readers of this my religious book of going through it carefully and attentively during their leisure hours. It is hoped my readers will derive much benefit from the perusal of the Hindi poem.

Sd—Baldeo Prasad Mehrotra.
Khettry 2½ Ghur,
CALCUTTA.

दोहा

* रुम जन्म पविको फल यह, चौथि शुक प्रमान। बहुत मित्र जगमें रहैं, सज्जन नेक सुजान॥
करहिं राहुको फल, खल बहु होवें भ्रात। ऊपरसे रखैं मित्रता, भीतरिहि रखैं घात॥
सज्जन खल दोनों लखि, कलयुग में भर पूर। पशु सब रखते दुष्टता, अधमहिं लखिये क्रूर॥
सज्जन रखते सुजनता, खलहिं करहिं अन्याय। उपदेशक बलदेव यह, जगमें नीत लखाय॥

ग़ज़ल

सभा वह जानिये सची न होवे पक्षकी बातें *खु.शामद कीड़के यारो कहे जो लिकचरैं र बातें
हमारी आरज़ू सबसे सुनों मेरी सभी ज़ातें * लिखा हमने जो पुस्तकमें जो दिलमेंथी जमी बातें
शुरुसे आखरीतक देखिये प्यारी सही बातें *यह बलदेव प्रसाद मेहरोत्र की तहरीर की बातें

विज्ञापन।

अनुग्राहक पाठक सभोंसे मेरी यह प्रार्थना है, सो क्या? याने यह मेरी गद्य पद्य धर्म्मनीति विषय की पुस्तक पृष्ठ १८६ तांई अनुग्रह पूर्व्वक आदिसे अन्त तक एकक मात्रा सहित शिघ्रताके साथ में पढ़िये, और इस पुस्तक के गुण और अवगुणको समझिये, और न्याय पूर्व्वक नीत धर्म्मको विचार किजिये, और यह सब गद्य पद्य लेख मेरो निज कृत लघु बुद्धिके अनुसार इस पुस्तक के लेखको जांनिये, और मैंने इस पुस्तक के मुद्रित प्रकाशित में किसीसे सहायता नहीं लिया है, सो सब महाशयों से मेरी यह निवेदन है, सो क्या? याने जो कुछ को मेरी भूल चूक होय सो कृपाकरके क्षमा कीजियेगा, क्योंकि मैंने इस पुस्तक को इस मृत्यु लोकमें अत्यन्त दुसह नाना प्रकारके दुःख आपत्ति को पूरी तौरसे झेला, परन्तु तिस परसे भी पूरी तौरसे प्रकाशित नहीं कर पायाहै, क्योंकि अन्यायियों के आक्रमण के द्वारोंसे अबतक निरुद्ध रही, (शेर)

लिखूं तो क्या लिखूं यारो अपमान खालिया। दुनियांमें नेकी करनेकी मैंने जनम लिया॥

सनातन धर्म्मवालोंका सच्चा शुभचिन्तक न्याई

बलदेवप्रसाद मेहरोत्र खत्री आढ़ाई घर

श्रीकाशी निवासी—वरतमान कलकत्ता

सूचीपत्र

सूचीपत्र समाप्त।

दोहा ।

मृत्युलोकमें चाहिये, भजले शिवशङ्कर ।
जपरामहिं (१)बलदेवजू, (२)मिहरजहांमे (३)सर ॥



(१) श्रीकृष्णजी के भ्राता श्रीबलदेवरामजी अर्थात् श्रीदाऊजी थे, अथवा मैंश्री काशीनिवासी देहधारी इस मृत्युलोकमें, Baldeo prasad Mehrotra Khettry 2½ Ghur, Calcutta.

(२) मिहरबानी करनेवाला अथवा सूर्य ।

(३) सरदार-साहिब अथवा खलों-दैत्यों दुष्ट आत्माओं प्रकृतिवालोंको इस संसारमें निज लघु बुद्धिके अनुसार शास्त्रार्थ में, सर पराम्त करनेवाला. उतपन्न हूं—याने ज्ञानरूपी प्रकाशमान प्रचन्ड तीक्ष्ण सरबाणोंसे, इस कलिकालके समयमें जानिये—



श्रों सूर्य्याय नमो नमः नमो नमः सूर्य्याय ॥

काश्यमधिवसतः कौशिल्य गोत्रोत्पन्न

बलदेवप्रसाद वर्म्मणाकृतम्

महाधर्म्म उपदेश ।

वैष्णवविषयक

HINDI POEM.

INSTRUCTIONS TO VAISHNAVS.

COPY.

AJODHYA,
12th May 1903,

Dear sir,

I am directed by His Highness to thank you for the poems sent.

Yours faithfully,
(Sd,) Babu PURSOTTAM DASS
Manager Ajodhya Estate,

To

Babu Baldeoprasad Mehrotra Khettry 2½ Ghur Shickderpara Street No, 12 Room No, 32,
CALCUTTA,

Printed at the B. L. Press
No. 62 Cotton Street, Calcutta.



श्रीगणेशाय नमः ।

महाधर्म्म उपदेश ।

(No. 1) चौपाई ।

श्रीगुरु बन्दौं जयति गणेशा ॥ जयश्री जयश्री काशी महेशा ॥
श्रीविद्याधर नाथ गणेशा ॥ शारद करती बिनय हमेशा ॥
श्रुति गावत है बिनय तुम्हारी ॥ सो है १सुभग २अखिल भुज धारी ॥

दोहा ।

श्रीगणेशको करत नित, बिनती हाथ पसार ॥
बुद्धिदेहिं बलदेवको, गणनायक भुजचार ॥

—०—

(No. 2)

श्री १०५ कृपासागर सकलगुण नागर सर्वविद्यालंकृत सर्वोपरि बिराजमान जयतिः—श्रीमान् महोदय,—His Excellency the Right Hon'ble George Nathaniel Baron Curzon, of Kedleston, in the county of Derby, in the Peerage of Ireland P. C. G. M. S. I. G. M. I. E. Viceroy and Governor General of India.

—०—

(१) सुन्दर, सहज (२) पूर्ण,-सब ।

जयश्री जयश्री इकसौ पांचहि * पूजहि मनहिं सुमनसों सांचहि *
सब बिद्यालंकृत गुणवाना * जयश्री जयश्री कृपानिधाना *
जयश्री महोदय वाइसराय * श्री भारत हितकारी भाय *
जयश्री कर्ज़न सब गुण आगर * हिन्दुस्थान बिराजैं नागर *

दोहा ।

जयश्री वाइसराय की, जयश्री कृपानिधान *
प्रधानहिं नायक हिन्दकी, न्यायशील गुणवान *

—०—

(नज़म)

ऐ साहबे अताव मददगार बेकसां ।
बे क़दर दानों दादरस व आदले ज़वां ॥
करते हो तुम मदद जो ग़रिबों की रातोदिन ।
इसे तुम्हारा नाम है मशहूर दरजहां ।
दिलजां से दुवा देता हूं जनाब हर घड़ी ॥
कोई सुनता नहीं धरम की फ़रियाद को यहां ॥

—०—

(No. 3)

His Highness The Maharaja Sir Prabhu Narayan Shingh Bahadur K. C. S. I. of Benares.

चौपाई ॥

जय श्री रामनगर के राजा । सुखदायक महंराजधिराजा ॥
श्री काशी नरेश सुखदायक । बिराजैं रामनगरमें नायक ॥

जय श्री जय श्री प्रभुहि नरायण। परजहि पालक १ नितहि २ परायण ॥
करते राज धरम (३) से नागर। बेद पुराण के रक्षक (४) आगर ॥
दया धरम के नाथ सुरेशा। जय श्री जय श्री काशी नरेशा ॥
जगसुमिरत श्री प्रभुहि नरायण। भारत गावत श्रीहि रमायण ॥
नाम अपारहि प्रभुहि नरायण। सुमिरै शङ्कट जाय परायण ॥
के, सी, यस, आई, सरकारी। पदवी बिदित जगत में जारी ॥
सिंघहि बहादुर पर उपकारी। प्रभुहि नरायण जगहितकारी ॥
शिव सम दरश नरेश तुम्हारा। काशी महातम महं बिस्तारा ॥

दोहा।

राम नगरके निकटमें, श्री गङ्गाकी धार ॥
बस्ती बिदित सोहावनो, श्री काशी के पार ॥
बिश्वनाथ काशी पुरी, शिव शङ्कर दरबार।
जन्म भूमि बलदेवकी, जानत है संसार ॥
श्री काशी गङ्गा निकट, बस्ती सुन्दर जान ॥
राम नगर में जानिये, बेदोव्यास बखान।
बेद उचारें व्यास जी, मुखसे बारम्बार ॥
उपदेशक बलदेव यह, धर्म केर है यार ॥
पुत्र हमारो देखिये, असुरन से है रार ॥
हितबांनो बलदेवकी, फीको मार कटार ॥

—०—

(१) हमेशा और अर्थातुनीत (२) बेदशास्त्र पुराण इत्यादिकों के हितैषी (३) अत्यन्त चतुर, और श्री देवनागरी हिन्दी भाषाके रक्षक (४) प्रवीण ॥

श्रीकाशी निवासी बलदेव प्रसाद मेहरोत्र षढ़ाई घरस्थ महाधर्म्म उपदेश कृतम् ।

(COPY.)

(No. 4) The 2nd July 1903.

Dear sir,

I have to acknowledge the receipt of the Various Hindi poems composed by you and sent for perusal of his Honour the Lieutenant Governor,

Yours faithfully
(Sd.) E. L. L Hammond,
I. C. S, Private Secretary Bengal

To

Babu Baldeo Prasad Mehrotra Khettry ½ Ghur Shickderpara Street No. 12 Room No. 32,
Calcutta,

—o—

(No, 5) सवैया ॥

बसुधा पैसुधा कहो है की नहीं ?
धरती भरेको भार गजपर, सींगके ऊपर है की नहीं ?
घृत पकवानहिं दूधमलाई, धन उपजावत है की नहीं ?
गाय पुत्र हलजोतैं गाड़ी, मृत चर्म को चादर है की नहीं ?
बसुधा पैसुधा बलदेव कहैं, कहो है की नहीं, कहो है की नहीं ?

—o—

(No, 6) सवैया ॥

प्रेम करौ परमेश्वर से नित, तब निज आशा पूरि करौगे ॥
दया धरम को मन में राखो, पैहितबात में ध्यान धरौगे ॥

निरङ्कार आकार ब्रह्म को, नारायण बलदेव भजोगे ॥
नीतज्ञान उपदेशको मानौं, अब भव सागर पार तरोगे ॥

—०—

(No, 7) कवित ॥

नीत को न मानें, रीतको न जानें, खेलें जूवा जहांनमें ॥
पुलिसको मिलावें, जूवा खेलें औ खेलावें, देवालीके दरम्यानमें ॥
जूवा खेल नित चोरिहि करैं, मारपीट खावें, खुले मैदानमें ॥
हित बलदेवको न मानें, इज्जतको बिगाड़ें, सारे हिन्दुस्थानमें ॥

—०—

(No. 8) क़ाफ़िया ।

नीतको न मानेंगे, पुरानको न जानेंगे,
कमर टेंटमें पैसा नहीं, खेलें जूवा जहांनमें ॥
पुलिस को सांटेंगे, जुवा खेलेंगे, न मानेंगे,
पुरानी चाल न छोड़ेंगे, देवालीके दरम्यानमें ॥
चोरीको करेंगे नित, जूवेमें हारेंगे जब
मारपीट खावेंगे, जेहलखाने के मकानमें ॥
हित बलदेवको न मानेंगे, महाजन को बिगाड़ेंगे,
जुवारी खेल खेलावेंगे, कुल शहर हिन्दुस्थान में ॥

—०—

(No, 9) शेर ॥

मशहूर जहां में है रिशवत खोरि पुलिस की ॥
ज़र रहो नहीं है यार हमेशा न किसीको ॥

(No. 10) **सवैया ॥**

मान अपमान भयो जबसे, तबसे परमेश्वर नेह लगाई ॥
ध्यान लगायके ब्रह्म लख्यो, निगमागम जाकर पार न पाई ॥
नाना भांतिके जीव बसैं जग, बेद पुरानहिं ग्रन्थहि गाई ॥
बलदेव को न्याय करै नहिं कोई, बिचार करो जगमें यह भाई ॥

—०—

(No. 11) **सवैया ।**

अपनो अपनो हांकत हैं सब, अभिमानी निज करहिं बड़ाई ॥
अहङ्कारसे नीत न मानै, अन्याई खल रखहिं लड़ाई ॥
धन से जग में लेत नहीं जस, अपजस में धन देत गंवाई ॥
लख बलदेव अजीरण धनको, अन्त समय यह सङ्ग न जाई ॥

—०—

(No. 12) **छप्पै ॥**

भैंसके आगे बीन बजावो भैंस लगी पगुराई ॥
पशुवनको उपदेश करेसे असर न उनपर जाई ॥
चिकनें घड़ेपर गेंद को फेको कबहुं न ठहराई ॥
अङ्गरेजो सतयुग राज के अन्तर कलयुग फैलाई ॥
जूवा चोर औ बैमानों की कलकत्ते में (१)बनिआई ॥
बलदेव प्रसाद मेहरोत्र जगतका हितकारी भाई ॥

—०—

(१) बनीआई गौरी, अथवा धन पड़ी ।

(No, 13) **क़ाफ़िया ॥**

यह मिन्यु सुपुल्टी को काटती (१)बिल बड़ी शिकन्दर ॥
क्या भिख मक़्सेसे भीख मांगती शहरके अन्दर ॥
बिलपर बिल बढ़ाती घटाती हुक़मटिकस बड़ी है ॥
हिसाब किताब चुकाती सबसे तड़ा पड़ी है ॥
आफत की मारी प्रजा दुखारी गरीब रोती खड़ी है ॥
बलदेव कहैं खुदरा बकचों पर चूंगी कठिन पड़ी हैं ॥

—o—

(No. 14) **क़ितेबन्दी शेर ॥**

क़लम कहती है मैं शाहे जहां हूं ॥
क़लम कसको तवक्कुर में बनाऊं ॥
अगर (२) कमवक़्त होवे तो करूं क्या ॥
मगर मैं फिर भी दौलत पर बैठाऊं ॥
यह कलयुग का ज़माना है गुनहगार ॥
बलदेव प्रसाद गरीब अब लिखे क्या ॥

—o—

(No, 15) **दोहा ॥**

यह उपदेशको जानिये, धर्म्म विषय संसार।
हितकांगी बलदेवकी, फीकी सो है यार ॥ १ ॥
नींद भरी अज्ञानमें, सोता है संसार।
हितकांगी बलदेव की, जाग पढ़ो सब यार ॥ २ ॥

---

(१) हिसाब किताब की बिल अथवा पिल, और याने बिल्ल अर्थात्‌चूहा खानेवाली बिल्ली ॥

(२) कलिकाल बरतमान यमें खराब ज़मानें कालमय।

नीत अङ्गरेज़ी राजको, चमक रही सब तौर।
सिंह बकरी इक घाटपर, पीते निरमल नीर ॥ ३ ॥
होली में यह जानिये, नीच करें उत्पात।
सड़कों में कीचड़ चलै, गली में पनहीं लात ॥ ४ ॥
होली के त्योहारको, खेलो सब के सङ्ग।
कुम कुम भर के मारिये, अबीरहि बुक्का रङ्ग ॥ ५ ॥
पिचकारी को छोड़िये, भर के गुलाब रङ्ग।
यह मानो बलदेव की, कीचड़ में है जङ्ग ॥ ६ ॥
खल शत्रुन को बुद्धिपर, राहु शनीचर केत।
जग्य पवि बलदेव लख्यौ, मूरख रहैं अचेत ॥ ७ ॥
जूवाचोरी मतकरौ, अधरमकेर प्रचार।
उपदेशक बलदेव को, यह मानौं सब यार ॥ ८ ॥
नीतहि मेरी परखिये, लखिये नियत बिचार।
उपदेशक बलदेव यह, नीतधरमसों यार ॥ ९ ॥
अधर्म्म सभा में जानिये, धर्म्मकेर है हार।
हितबानी बलदेव की, जग में रही पुकार ॥ १० ॥
जहां नीत तहं धरम है, जहां धर्म्म तहं नीत।
उपदेशक बलदेव की, धरम सभा मे जीत ॥ ११ ॥
अच्छे को पागल कहैं, अन्याई सब लोग।
हितबानी बलदेवकी, पशुवन के नहिं योग ॥ १२ ॥
कला हमारी परखियें, कला हमारी नीत।
उपदेशक बलदेवकी, पशुवनसे है जीत ॥ १३ ॥
निरलज्जन को जानिये, हया नहीं संसार।
पशुवन को बलदेव की, बार बार धिक्कार ॥ १४ ॥
नीत लिखत है लेखनी, बारंबार हमार।

शत्रुनको बलदेव करै, पशुवन को फटकार ॥ १५ ॥
रखै भरोसा जो कोई, सुनिये श्रीरघुनाथ।
बिनय करत बलदेव यह, कर जोरे दोउ हाथ ॥ १६ ॥
हाकिम परमेश्वर सदा, करहिं भक्ति पर प्रीत।
हितबानी बलदेव को, करहु सबै पर तीत ॥ १७ ॥
राजनीत परमान से, करिये लेख बिचार।
समझिं मिताई धरमको, लखिये सबै प्रकार ॥ १८ ॥
अचल भई यह जगतमें, काट सकै न गंवार।
राज भक्ति बलदेव को, बिदित सकल संसार ॥ १९ ॥
बैष्णव कटरा कौन है, कलकत्ते दरम्यान।
काट काट माछी बिकै, जंह यह धरम मकान ॥ २० ॥
कसाई कटरा बिदित है, बैष्णव का सरनाम।
मीन काट के बिकै जहां, आवै पैसा दाम ॥ २१ ॥
बैष्णव बकुले भगत को, जानैं सकल जहांन।
उपदेशक बलदेव को, लखिये नीत प्रमान ॥ २२ ॥
बकुले को जगमान है, पंछिन में हुशियार।
सांच कहैं बलदेव यह, मीन करे फलिहार ॥ २३ ॥
मीनों की है हाट में, आवत है बदबूह।
पुष्प के बदले यह बिकै, बैष्णव को खुशबूह ॥ २४ ॥
कलकत्ते में जानिये, कटरे की है हाट।
नीर तरोई काट के, तौल बिकाती बांट ॥ २५ ॥
जहां काट के बिकत है, मन्दिर आमद जान।
सांच कहैं बलदेव अब, लालच जलै मशान ॥ २६ ॥
यह १ सेवक भगवानको, बकुले को यों जान।

---

(१) संसार।

उपदेशक बलदेव को, लखिये नीत प्रमान ॥ २७ ॥
यदि पशुवन के मांश सब, नाना भांति बिकाय ।
तब मन्दिर को जानिये, नफा बहुत बढ़ जाय ॥ २८ ॥
बुढ़ीपर पत्थर पड़ा, सांई को इकलीत ।
कौड़ी कबुर की फेरिये, बैष्णव मत को चेत ॥ २९ ॥
असमसान को जानिये, को है कौड़ो लेत ।
राजनीत बलदेव की, करिये मनमें चेत ॥ ३० ॥
गङ्गामें सब खपत है, गड़ही में यह नाहिं ।
महंराजन को उचित है, परजन को जग नाहिं ॥ ३१ ॥
नद में मैला खपत है, गड़ही में उत्तराय ।
लखहु नीत बलदेव की, परखहु सब जग भाय ॥ ३२ ॥
और सुनौं उपदेश को, सज्जन चतुर सुजान ।
हित बानी बलदेवको, मानौं नीत प्रमान ॥ ३३ ॥
जो देते बलिदानको, जीव अजागलकेर ।
पुनि इनको यह जानिये, लेते बदलाफेर ॥ ३४ ॥
श्रीदुर्गा है बैष्णवी, नहिं चाहत बलदान ।
*अजा बिचारे जीव को, छोड़ो सबै सुजान ॥ ३५ ॥
श्री काली नारायणी, जगकरती कल्यान ।
शिवकी शक्ती जानिये, लखिये देवि पुरान ॥ ३६ ॥
जगदम्बे को जानिये, जगको मात बखान ।
जीव न चाहत पुत्रकी, पशु नर एक समान ॥ ३७ ॥
जो मानै जगदम्बको, श्री फल कर बलदान ।
यह मानौं बलदेवको, ज्ञानी चतुर सुजान ॥ ३८ ॥
श्री देवी पाखान की, कुबै नहीं बलदान ।
पुण्य नहीं यह काममें, अजा न मारो जान ॥ ३९ ॥

खसी जाय निज जान से, खवैन को उत्पात।
यह मानों बलदेव को, बकरी पाती खात ॥ ४० ॥
समर भूम में लेत है, असुरनको बलदान।
भला बिचारे जीव को, नहिं चाहत है प्रान ॥ ४१ ॥
मांश बढ़ावत मांश को, खाहिं करहिं बलदान।
यह मानुष पिन्डा जानिये, अन्त में जले मशान ॥ ४२ ॥
यह पिन्डे में बसत है, ईश्वर शक्ती जान।
बलदेव कहै ज्ञानी नर, अज्ञानी पशु समान ॥ ४३ ॥
जबलौं मनमें घृण नहीं, तबलौं खाते मांस।
बलदेव कहैं ज्ञानी नर, अब यह छोड़ैं खास ॥ ४४ ॥
यह बचनहिं अनमोल है, धरम लेख नहिं दाम।
हितबानी बलदेव को, आवे सबके काम ॥ ४५ ॥
सात पुश्तलौं नहिं घटै, अमीरी की खुशबूह।
यहि लगिपीढ़ी जानिये, ग़रीबी की बदबूह ॥ ४६ ॥
सूमनिर दई जानिये, परको धन हर लेत।
यह मानो बलदेव को, नीत कहै सब देत ॥ ४७ ॥
खेतमें बोते धान को, गेहूं नहिं उपजाय।
कुतियन के पिल्ले जानिये, १ रङ्ग बिरङ्ग जनाय ॥ ४८ ॥

(१) जैसे एक कुतिया के चार रकम के पिल्ले पैदा होते हैं, याने-एक सफेद-दुसरा-काला-और तीसरा-लाल-और चौथा याने चितकबरा, सो नाह नजार कुत्तेका प्रमाण यह है, जैसे जिस कुतिये को सोहबत जिसरङ्गके कुत्ते से हुई, वही रङ्ग ढङ्ग का पिल्ला उत्पन्न जानिये, यदि काली कुत्तिया और काले कुत्ते से कहीं सफेद पिल्ला पैदा होय तो यह प्रमाण नीतके अनुसारसे जानिये, की कहीं सफेद कुत्तेसे उस कुतियेसे भूलेसे सोहबत धोखा धोड़ीमें हो गई है।

काले से काला लखो, गोरेसे गोरा जान ।
नाहन जार के योग को, सोहबत से पहिचान ॥४८॥
कलिकाल में जानिये, लखिये स्वान प्रमान ।
यह नीत बलदेव को, और लबेद बखान ॥ ५० ॥

—०—

*और लख योनीमें बकरा एक बहुत गरीब जन्तु पशु जानवर है सो उसका उद्धार करने के लिये श्री प्रचण्ड परम बैष्णवी भगवती के निकटमें बलदान लोग करतेहैं, एक छोटा सा प्रमाण यह संसार में विदित है, सो क्या? दुर्बलो दैवं घातिकः, क्या सिंह लख योनीमें नहीं है ? क्या खर और शूकर लख योनी में नहीं है ? सो इन तीनों जन्तुओं का बलदान श्री देवी परम बैष्णवी के निकट क्यों नहीं होता है ? जब श्री भगवती नें असुरों के दलों को संग्राम के समर भूम में संहार किया है, सो उस समय में श्री अष्टभुजा श्री देवीजीने आज्ञा अपनी सेना योगिनियों को यह दिया है, कि तुम सब सेना असुरों के दलों को रक्त पान करके मांस रुधिर इत्यादिकोंका भक्षण करो, यदि यहकहा जावै कि श्रीदेवी भगवती की सेना के लिये योगिनियों शक्तियों दासियों के नवित यह प्रसाद अर्पण बलदान प्रचार श्री भगवती के निकट होता है, सो यह दासी शक्तियों का प्रसाद भोग दासों के लिये उचित है, अथवा श्री भगवतीजीके परम भक्त अर्थो बैष्णव पुरुषों के वास्ते नहीं है, महाशयो एक छोटा सा प्रमाण बरतमान समय में परखिये, और यह प्रमाण बङ्गवासी व भारतमित्र कलकत्ते सप्ताहिक पत्रों के द्वारों से संसार में यह समाचार प्रसिद्ध है, सो मैं यह प्रमाण सब महाशयोंको देखलाता हूं, कि जब अङ्गरेजी बृटिश गवर्मेण्ट की सेना संग्राममें ट्रान्सवालकी घोर युद्धमें उपस्थित हुई, तब उनकी सेना इत्यादिकों

को श्रौचटमें पड़ जानें से भोजन का सामन नहीं मिला, तब उन लोगोंनें क्या भोजन करके अपने अपने प्राणों की रक्षा किया, याने अखाद्य अथवा अकथ्य मांश इत्यादि कों से अपनी क्षुधाओं को रोका, और दूसरा प्रमाण यह संसार में प्रसिद्ध है, कि किसी समय में, मुसलमान महाशयों के मज़हब में घोर संग्राम हुआ है, तब उस समय में मुसलमानी सेनाओं को कुछ अहार करने को नहीं मिला था, तब किसी हज़रत मोहम्मद साहब पीर पैगम्बरनें अपनी सेनाओं को यह अज्ञा दिया कि गाय कुर्बी करके सब सेना अपनें क्षुधा पीड़ीत प्राणीं को रक्षा करें, तब सब सेनाने यह प्रार्थना किया, कि प्रथम आप भोग लगाइये, तब हम सब सेना दल आपकी प्रसादी लूंगा, तब हज़रत महाशयनें लाहचार होकर गाय कुर्बी कराया, तब फिर उस मांशपर सात परत कपड़ेका रख करके अपनी हाथकी एक छोटीसी कांनी अङ्गुलीके द्वारेसे छू करके तब फिर बाद इसके निज जिह्वामें स्पर्श किया, तब फिर सब महाशयकी सेनोंने स्वामी की प्रसादीको स्वीकार किया, सो वही रेवाज़ अबतक व्योहार के साथ चला जाता है, कि साल में एक मरतबह कु़रबान बक़रीदके दिन गाय कुर्बी होती है, सो हे भाइयो वैसेही इसी प्रकार से जानना चाहिये कि जो श्री देवी और देवता लोग जो खल और असुरों के संग्राम में किसी समय व्यतीत में बेधर्म्म हो गये हैं, सो उन लोगोंनें एक भैरवी चक्र स्थापित किया, सो इस भैरवी चक्रको जो लोग पूजतेहैं,सो वह लोग मांश मदरा इत्यादिकों को सेवन करते हैं, और यह बात संसारमें प्रसिद्ध है, कि प्रथम जङ्गली मनुष्यलोग कपड़ा पहिननें नहीं जानते थे, यानें नङ्गे नङ्गे बेहूदा घूमते थे, और अपनेंही आल औलाद को मार मारके भक्षण करते थे, सो अब वही मनुष्य लोग ज्ञानी संसार में प्रसिद्ध हैं, अब

पशु थे तब मनुष्यों का मांश खाते थे अब कुछ ज्ञान उत्पन्न हुआ, सो मनुष्य का मांश त्याग करके अब सब पशुवों का मांश खाते हैं, मैं आशा यह करता हूं, कि जब ज्ञान उत्पन्न होयगा, तब सब मांश अहारी लोग मांशों से घृणा करके छोड़ देंगे, फिर सदाही मांशों से घृणा रखेंगे, और फिर परम वैष्णव होकर हरिबोल ! हरिबोल !! हरी बोलेंगे।

—०—

(No 16) राग चेतौनी ॥

अजर है, अमर है, अधर है, अकारा।
निरङ्कार स्वामी की महिमा अपारा ॥
परब्रह्म ईश्वर की माया अनन्ता।
सर्वज्ञ व्यापक है घट घट में रमता ॥
नहीं देख पड़ता कहीं है जहां में।
ज्ञानों से लखिये नहीं है कहां में ॥
दुनियां के चक्कर की चिन्गी है तारा।
वही है फलक में जो छिट का सितारा ॥
सितारों की गरदिश जगत में है आती।
कभी रोशनी तेज़ मध्यम लखाती ॥
रखो याद गारी सभी से यह प्यारी।
करो यार नेकी रहो नेक यारी ॥
मोहब्बत की फोटो को दिल में उत्तारी ॥
वफाई सफाई सचाई नहारी।
दिल की अदालत अदलसी सुधारी।
छिताई मिताई की बातें बिचारी ॥

यह बन्दे (१) खोदा की इबादत निहारो।
भरमजाल संसार माया बिसारो॥
बुरे की बुराई को कूड़े पर डारो।
हिम्मत को मेरो जगत में बिचारो॥
यहो तन से नाता सभों से है यारो।
अपने खुद गरज से हिमाकत न मारो॥
किसी शख्स का दिल न काटो नफारो।
यह बलदेव की बानी को हितसे बिचारो॥

(No 17) टेक।

कलिकाल बरतमान है उलटा है जमाना।
कंठी की लाज है नहीं पलटा है जमाना॥

---

(१) जैसे-आम-अम्बह-म्यागोज वैसे परमेश्वर-खोदा-गाड,—

Errata.

अशुद्ध	शुद्ध
प्रथम पृष्ठमें काश्यमधिवसतः	काश्यामधिवस्तः।
पृष्ठ २में पंक्ति २की में काशी महेशा	काशि महेशा।
पृष्ठ ४की पंक्तिमें काशी नरेशा	काशि नरेशा।
काशो महातम	काशि महातम।
पृष्ठ ५ निबासी	निवासी।
बलदेब	बलदेव।

पृष्ठ ८ मे कितै बन्दो ग़ैर की अन्तकी पंक्तिमे-हरोब-मेहरोब।

अच्छा नहीं है काल अब खोटा है ज़माना।
अब कैसे रहै आबरूह बिगड़ा है ज़माना॥
जंजाल भरम जाल में भूला है ज़माना।
अपनें मौज और रङ्ग में भटका है ज़माना॥
कलिकाल वरतमान है उलटा है ज़माना।
कंठी की लाज है नहीं पलटा है ज़माना॥ १॥

अन्तरा।

नेकी के एवज़ मे बदी रखता है ज़माना।
पैसा नहो तो पास तो पूछे न ज़माना॥
नीत सनातन वो डुबाता है ज़माना।
सच्चे के लिये ख़ास कर है शख़्त ज़माना॥
कलिकाल वरतमान है उलटा है ज़माना।
कंठी की लाज है नहीं पलटा है ज़माना॥ २॥

अन्तरा।

किसी के सङ्ग गया नहीं ज़र माल ख़ज़ाना।
कोई मानता नहीं है वेद शास्त्र पुराना॥
देखैं भला किसी का तो नहीं है सुहाना।
अच्छा नहीं होता है बेगुनाह को सताना॥
कलिकाल वरतमान है उलटा है ज़माना।
कंठी की लाज है नहीं पलटा है ज़माना॥ ३॥

अन्तरा।

स्त्रीके वसीभूत हो माता को न मानैं।
अबोध के कारण से अभिमान बखानैं॥
छिपके पाप करते हैं धरम को न मानैं।
कलिकाल वरतमान से ईश्वर को न जानैं॥

कलिकाल बरतमान है उलटा है ज़माना ।
कंठी की लाज है नहीं पलटा है ज़माना ॥ ४ ॥

अन्तरा ।

कलयुग के ज़माने मे लोग ईमान न मानें ।
इनसान वह नहीं है जो अनीत बखानें ॥
हैवान वही शख्स है जो गुण को न जानें ।
शरीफ वह नहीं है जो रफीक न मानें ॥
कलिकाल बरतमान है उलटा है ज़माना ।
कंठी की लाज है नहीं पलटा है ज़माना ॥ ५ ॥

अन्तरा ।

अनेक ग्रन्थ अनेक मत अनेक पुराना ।
एहसान फरामोश है कलयुग का ज़माना ॥
अकसर देवाला मार कर ईमान गँवाना ।
इजलास पर हमेशा हलफ झूठो उठाना ॥
कलिकाल बरतमान है उलटा है ज़माना ।
कंठी की लाज है नहीं पलटा है ज़माना ॥ ६ ॥

अन्तरा ।

कोई देख नहीं पड़ता है अपना न बिराना ।
यारों में यारी है नहीं पैसों का याराना ॥
जाल औ फीरेब से दौलत को कमाना ।
टोपी को हया है नहीं पगड़ी को लजाना ॥
कलिकाल बरतमान है उलटा है ज़माना ।
कंठी की लाज है नहीं पलटा है ज़माना ॥ ७ ॥

खमसा।

उपदेश को न माने जो जगतमें बखाना।
अध्याय बरतमान से है नीत रवाना॥
श्री काशिवासी नामवर रोशन है जहांना।
बलदेव प्रसाद मेहरोत्र पढ़ाई घरमें प्रधाना॥
कलिकाल बरतमान है उलटा है ज़माना।
कंठी को लाज है नहीं पलटा है ज़माना॥ ८॥

COPY.

ALLAHABAD
22 Jauly 1901.

Dear Sir,

H. H. The Maharaja has no time to see you as he is going away tomorrow morning.

Yours faithfully
Babu ___________,
(Sd.) Vindeshwari Prasad.
Private Secretary.
Ramnagar Benares.

(POST CARD.)

REPLY

To

Baldeo Prasad C/o B. Ramnarain * Right & Co.
ALLAHABAD.

---

* बाबू रामनरायन हमारे सगे मामूके साहब ज़ादह हैं, हमारे पिता की दो शादी हुई थीं, प्रथम शादी की हमारी माताजी इनकी सगीबुआ थी, और बाबू रामनरायन श्रीमान् बाबू कृष्ण-बिहारीलाल व बाबू लालबिहारीलाल खत्री पक्के ४ घर पिनशिन याफ्तह हेड आफिस इलाहाबाद बङ्क इलाहाबादके आप एकाउन्टेन्ट थे।

अथ पञ्चमोऽध्यायः।

प्रमाण मनुस्मृतिः स० पृष्ठ ३०६ श्लोकार्थ,—

जो पुरुष देवता और पितरों की पूजा (श्राद्ध आदि) के बिना पराये मांस से अपने मांस को बढ़ाया चाहता है उससे अन्य पाप कर्म्म कोई नहीं है ॥ ५२ ॥

अब यह कहते हैं कि मांस भक्षण की निवृत्ति धर्म्मके अर्थ है, जो मनुष्य सौ वर्षतक वर्ष २ में अश्वमेध यज्ञ करे—और जो मनुष्य सौ वर्षतक मांस भक्षण न करे उन दोनो को पुण्य का फल (स्वर्गादि) तुल्य होता है ॥ ५३ ॥

जिस फलको मांसके त्याग से प्राप्त है उस फल को पवित्र फल और मूलके भक्षण और मुनियोंके नीवार आदि अन्नोंके भोजन से नहीं होता है, इससे मांस भक्षण को सर्वथा त्याग दे ॥ ५४ ॥

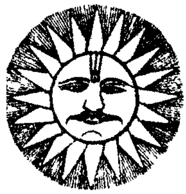
महाशयो।

यह एक धर्म्म विषय का उपदेश मैंने लिख करके ता० २।११।३ ई० को श्रीभारतमित्र कलकत्ता सम्पादक की सेवा में धर्मार्थ परमार्थ अर्पण किया था, सो महाशयने यह कौवोंके उपदेश पर मुझे यह रसीद अनुग्रह के साथ कृतार्थ किया, सो मैं यह रसीद धर्म्म सम्बन्धी विषय का पाकर संसार में आपको निज लेखनो द्वारासे धन्यवाद देता हूं।

COPY. ६ नवम्बर सन् १९०३ ई०

बाबू बलदेवप्रसाद जी मेहरोत्र—,के यह धर्म्म सम्बन्धी विचार प्रशंसा के योग्य है, धर्म्मात्माओं को इन पर खूब ध्यान देना चाहिये—,

श्रीमान् बाबू वैश्यकुल भूषण—
द० बालमुकुन्द गुप्त।
हिन्दी सम्पादक भारतमित्र कलकत्ता।



॥ ओं सूर्य्याय नमो नमो नमः सूर्य्याय ॥

काशग मधिवसतः कौशिल्य गोत्रोत्पन्न बलदेवप्रसाद वर्म्मणः
महा धर्म्म उपदेशः कृतः।

शेर।

लाख कोई कहै न मानैंगे। अपने धरम की रह निकालैंगे॥

—o—

"यह मेरा केवल उपदेश धर्म्म विषय का धर्म्मार्थ परमार्थ कौवे पंचियों—याने परिन्दों के वास्ते है, परन्तु मनुष्यों के वास्ते नहीं है।

शान्तिः! शान्तिः!! शान्तिः!!!

हे परमेश्वर! यह भतखौवा माछी मांस खानेवाले कौवों की बुद्धियां क्योंकर सुन्दर होंयगी,—

क्षमाकरो! क्षमाकरो!! क्षमाकरो!!!

(No 18) **चौपाई।**

मांस मछरिया खाते कौवा। कों कों करते हैं भत खौवा॥
ताक् धिक्*गावत हिरदय खोल। हरिबोल! हरिबोल!! हरीबोल

(*) धिक्कार है, क्या देखता है, अर्थात् ताक्धिनाधिनधा...

उलटो मतहै कौवन केरी। ज्ञान बघारत हैं बहुतेरी॥
मांस मछरिया छोड़ी कागा। पुनि जग मोहै हरिहर रागा॥

दोहा।

मछली मुरदा खात है, राम राम है राम।
हित मानो बलदेव की, छोड़ भजो हरिनाम॥
सुर निकालत कौं कौं की काले काले काग।
भावत नहिं बलदेव को, राग रागणी राग॥
जल तरौंई कबहुं न छोड़ै, नीच कहावत काग।
धुधुकुट् धुधुकुट् धुक्, तक्धिक् तक्धिक् * भाग॥
नोद भरी अज्ञान में, सोते होतो जाग।
काग सुनें बलदेव को, ताक् धिना धिन् राग॥

राग तिल्लाना।

यह कागन को उचित है, ताक् धिक् ताक् धिक् बांचो।
ताक् धिना धिन् ताक् धिना धिन्, घुंघुरू पहिनके नाचो॥
ताक् धिक ताक् धिकता,
ताक् धिना धिन् ता,

राग काफिया।

सब कौवन की नानी मरगई ताक्धिनाधिन् लाग।
धरम की बानी 'कौ' लेखनी क्या शक्ति कला है † जाग॥

अथवा मृदङ्ग की आवाज़, ताक्धिनाधिन्ता,—हरिबोल! हरिबोल!! हरीबोल!!!

(*) भागना, अर्थात् हिस्सा रागिणीका, अथवा—क़िसमत याने प्रालब्ध।

† जगमगाती कला अथवा सोते हुये को जगाना।

मैढाई घर नहिं गाता हूं मिरदङ्ग ढोल पर राग।
बलदेवप्रसाद मेहरोत्र खत्रीको नहिं भावै फाग॥
ताक् धिक् ताक धिक्ता———
ताक् धिना धिन्ता—

—०—

COPY.

२२।७।३०ई०

बाबू बलदेव प्रसाद मेहरोत्र अढ़ाई घर जीने होटल के विषय में एक लेख हमें भेंट किया है, जिस्मे बाबू साहब का विचार वर्त्तमान दशा को खूब सोचनीय दशा से बतलाता है, हम उक्त महोदय जी को हार्दिक धन्यवाद देकर और सज्जनों से प्रार्थना करते हैं, कि बाबू साहब के विचार पर विशेष ध्यान देकर काय मनो बाक्य से सहायता दें।

श्रीमान् सर्व पूजनीय द्विजबर अडीटर—
भवदीय,—
द० पण्डित शिवप्रसाद सम्पादक
हिन्दी सुखप्रचारक
काटनष्ट्रीट न० ४६ कलकत्ता।

—०—

शेर।

हिन्दुस्थान के दरम्यान मे कलकत्ता है बन्दर।
मशहूर जहां में है श्रीगङ्गाके निकट पर॥

बङ्गवासी सप्ताहिक समाचार पत्रके सम्पादक महाशय हिन्दी अडीटरने ता० २५ वीं नवम्बर सन् १६०१ ई० को हमारे होटल के बिषय के उपदेश पर आपने यह समालोचना अनुग्रह से किया है,-

काशी के बलदेवप्रसाद जी आप लावनी बनाने में दिन बदिन उन्नति करते जाते हैं। यह लेख मैंने अपने हाथ से लिख करके दिया था,—

और आपने ता० १ डिसम्बर सन् १६०१ ई० के सप्ताहिक पत्रमें मेरे लेख का यह समालोचना किया है, सो मै धन्यबाद देता हूं, सो क्या ? श्रीबलदेवप्रसाद मेहरोत्रने छोटे लाट साहब बङ्गालके मरने पर एक शोक कथा लिखी है, सो यह पत्र एक हजार मुद्रित होय कर संसार में बट गया है,—

महाशय बङ्गवासी सम्पादक कलकत्ता पण्डित हिन्दी लेखक आप बहुत दानाई बोनाई और चतुराई हुशीयारी के साथ संसारमें हिन्दी लेखनी की कला रखते हैं, आपने मेरी कबिता कारनेशन देहली दरबार के बारे में ता० २२ जून सन् १६०३ ई० को आपने सप्ताहिक पत्रमें यह समालोचना किया है, सो मैं धन्यबाद देता हूं क्षमा करियेगा, आपने अपनी लेखनी द्वारा से यह लिखाहै कि, कबिता अच्छी नहीं हैं, सो बहुत ठीक है, महाशय आप अनुग्रह करके मेरी भूल चूक को मेरी लघु बुद्धी के अनुसार से मेरे लेख को स्वीकार कीजिये और मैं तो आपके इस इबारत का यह अर्थ समझता हूं, सो क्या ?

याने यह कबिता सज्जनोंके लिये क्या है ? मानो शिरोमणि है, परन्तु खल और कुटिल व कण्टक अथवा असुरोंके वास्ते यह कबिता ललित सुन्दर नहीं है, और आपने अपने समालोचना में यह भी

विदित किया है, कि इस पुस्तकमें इस पुस्तक का दाम कुछ लिखा नहीं है, सो बहुत ठीक है, इसका दाम अनमोल मेरे एक एक बचनों का है, सो जो कुछ मुनासिब प्रभु बड़े लाट साहब और प्रभु छोटे लाट साहब समझेंगे सो मेरे मेहनतका मेहनताना अपने हस्त कमलके हाथोंसे कृपाकी अनुग्रह से कृतार्थ करेंगे, और इस कारने-प्रन देहली दरबारके लेखके बारे का दाम प्रजाओंसे नहीं है, इस लेखका दाम प्रभु बड़े लाट साहबसे है, अब सब महाशयोंसे मेरी यह निवेदन है, कि इस पुस्तकके (No 8) की कविता जो इस पुस्तक में प्रकाशित होकर धर्मार्थ परमार्थ है, सो इसका दाम भी अनमोल है, याने एक एक बचनोंका एक एक लक्ष रुपया है, क्योंकि यह उपदेश कौए परिन्दोंके वास्ते है, परन्तु मनुष्योंके वास्ते नहीं है, चुपरहो ! खामोश रहो !! अबतो यह सुनके सब कुटिलों की नानी क्यों मर गई ? नहीं ! नहीं !! नहीं !!! पेटोंमें हलचली मच गई, यह कविता क्या है ? मानो घी चीनी का लेड़ वा है. एक छोटा सा दृष्टान्त यह संसारमें प्रसिद्ध है, सो क्या ? याने घी चीनी का लेड़ुवा टेढ़ा भला होताहै, चाहे गोल खाव, चाहे टेढ़ा, चाहे लम्बा, परन्तु स्वाद गोल टेढ़ा लम्बे घीके चीनीके लेडुवे का यह तीनोंमें से कोई रङ्गका खानेसे एक समान हृदय को सन्तुष्ट तरवतर करनेवाला है, और घी चीनी का लेड़ुवा चाहे टेढ़ा होय, चाहे लम्बा होय, चाहे गोल होय, परन्तु एक समान मीठे स्वाद से लज्जत ज़बानको देता है, और जिभ्या को अत्यन्त मुलायम करता है।



(No 19) **दोहा ।**

सत्यनरायण भानु जग, सोहैं लक्ष्मी साथ ।
बलदेवके हियमे बसैं, तीन लोकके नाथ ॥
तीन लोकके नाथ को, पूजै सकल जहांन ।
लक्ष्मीपति मेरी सुनौ, नारायण भगवान ॥
कर जोरे सुमिरण करों, श्री प्रभुको गुण नाम ।
उपदेशक बलदेव कर, भगवतको परणाम ॥

चौपाई ।

जयश्री नारायण भगवन्ता । महिमा जग विस्तार अनन्ता ॥
ब्रह्मरूप नारायण स्वामी । घट घट व्यापक अन्तरयामी ॥
निरङ्कारको रूप न पाया । जगमे सोह अपरमित माया ॥
सङ्कटमोचन नाम तुम्हारा । गावत बेद पुराण अपारा ॥
श्रीपति राजन सिन्धु कृपालू । प्रभु लक्ष्मीपति दीन दयालू ॥
अगम नीर सागर जहं धारा । शेष नाग पर शैन तुम्हारा ॥
सुनहु नाथ प्रभु बिनय हमारी । मै शुभचिन्तक जगहितकारी ॥
पालन पोषन सबकी करहू । पति राखन दारुण दुख हरहू ॥

श्री लक्ष्मीपति की बलिहारी। प्रभु तुम जगकी रक्षा कारी॥
माया अपरम पार बिचारी। मांगहु दास भक्ति अधिकारी॥

दोहा।

पार ब्रह्म माया लखो, तेरो कछू न जाय।
उपदेशक बलदेव यह, बिनवत बिनय बनाय॥

(Copy.)

श्रीयत्री लाला बलदेव प्रसाद, योग संघ बङ्गाल इलाहाबाद से, गौरीनाथ खज़ांची को जैगोपाल बचने, आगे समाचार १ बंचने आगे पत्र आपके नगर२ पहुंचे, आपको धन्यवाद है, कि ऐसे ऐसे कार्य्यमें मेहनत करते हो, और इन किताबो में इसकदर रुपया खर्च करते हो, आपको पर उपकारका बहुत ख्याल है, आपको हम बहुत तरह से धन्यबाद देते हैं, आगे ज्यादः शुभ।
तां० २७ मई सन् १८०३ ई०,—

विज्ञापन।

विदित हो कि मैंने कलकत्ता बन्दरमें ३००० पत्र मुद्रित करके संसारमे अर्पण किया था, १००० श्रीभारतेश्वरी जीके स्वर्गवास विषयका, और १००० प्रभु छोटे याट साहब बङ्गालके स्वर्गवास विषय का, और १००० देहली दरबारके विषय का, आश्चर्य की बात यह है, कि मैंने यह मुद्रित पत्र सब राजस्थानमें बजरिये डांक के द्वारासे रवाना किया, मगर पहुंच मैंने किसी कोई राजस्थानसे एक पैसे के पोष्टकार्ड के द्वारासे नहीं पाया, और इस समय बरतमान मे मैंने जोकि देहली दरबार के बारे मे पत्र

मुद्रित किया था, सो मैंने ११० पाकेट परदेश मे रवाना किया, याने राजस्थान और मिश्र इत्यादिकोंको पोष्टाफिसके द्वारासे भेजा, और पोष्टिज इष्टाम्प रु० ६॥) का खर्च किया, महाशयो! मैंने केवल एक पाकेट का पहुंच पाया, जो कि इस विज्ञापनके ऊपर चिट्ठी की नकल मुद्रितहै, और मालुम नहीं कि हमारा १०९पाकेट बुक, जा बजा डांक के द्वारासे ठीक तौर पर पहुंचा, या नहीं? इसलिये सब महाशयों कि सेवामें यह निवेदन है कि कृपा करके यह जो पाकेट रवाना होता है, सो इसकी पहुंच एक पैसेके पोष्ट-कार्डके द्वारा से कृतार्थ करना चाहिये, और जो जो पाकेट रवाना किया है, सो हमारा पाकेट रवाना किया हुआ वापस कहींसे नहीं आया है।

(No 20) दोहा।

मुद्रित चन्दा पत्रको, लियो सभोंसे यार।
उपदेशक बलदेव की, धन्यवाद संसार॥
गुरु ब्राह्मणके चरण मे, बार बार परणाम।
पृथ्वीके हैं देवता, ओहिज चौबे नाम॥
दशहिं नवम्बर जानिये, सकलै विदित प्रचार।
सन उनीस सौ तीन को, इक्षो है संसार॥
काटन की ष्ट्रीट है, कलकत्ते दरम्यान।
नम्बर बासठ जानिये, जहं यह पत्र छपान॥
बी. एल. प्रेस मे जानिये, मनेजर बांके लाल।
बलदेव कृत् उपदेश यह, मुद्रित धरम विशाल॥

धन्यवाद ।

नीचे लिखे हुए श्रीभारत हितैषी असहाब महाशयोंने इस पत्रके छपाने मे प्रेसकी छपाई चन्दा देकर सहायता की है, सो मैं इसके नीचे लिखे हुवे सुधर्म्म रचकोंके नामको सुशोभित करके श्री भारत हित सुधाकरोंको मैं श्री काशि निवासी बलदेव प्रसाद मिहरोत्र अढ़ाई घर उपदेशक संसारमें धर्म्मविषय धन्यवाद देता हूं ।

१८॥) न्यू चीनाबाजारके ब्रोकर आफ गवर्मेण्ट पेपरके महाशय से पाया ।

१) श्रीद्विज मान् सर्व पूजनीय दामोदर जी चौबेका जमा ।

१) श्रीद्विज मान् सर्व पूजनीय बेनीमाधो जी चौबेका जमा सिकन्दरपाड़ा ष्ट्रीट (नं० ४०)

१) श्रीद्विज मान् सर्व पूजनीय झाऊलाल जी चौबेका जमा ।

१) श्रीद्विज मान् सर्व पूजनीय छबिनाथ जी चौबेका जमा ।

१) श्रीद्विज मान् सर्व पूजनीय रामदयाल जी चौबे का जमा, हस्ते महराज बिश्वम्भर नाथ जी मिश्र सिनीयर क्लर्क चीफ् इञ्जीनियर दफ्तर नैनीताल से पाया ।

१) श्रीद्विज मान् सर्व पूजनीय पितम्बर दास व बेनीमाधो जी, चौबेका जमा ।

१) श्रीद्विज मान् सर्व पूजनीय देवीप्रसाद जी चौबेका जमा ।

१) श्रीद्विज मान् सर्व पूजनीय रङ्गलाल जी चौबेका जमा

१) श्रीद्विज मान् सर्व पूजनीय मोहनलाल इन्द्रमणि जी चौबे का जमा ।

१) श्रीद्विज मान् सर्व पूजनीय लालजी चौबे का जमा । बांसतल्ला ष्ट्रीट (नं० २१) से पाया ।

॥) श्रीद्विज मान् सर्व पूजनीय मदनमोहन जी गोरखी पहलवान चौबेका जमा।

१) श्रीद्विज मान् सर्व पूजनीय मन्नालाल जी चौबेका जमा।

१) श्रीमान् गणेश जी प्रोहित मारवाड़ी का जमा,

१) श्रीमान् बाबू ललितबिहारीलाल कपूर खत्री का जमा।

१) श्रीमान् बाबू शिवदत्त राय प्रेमसुख जी कम्पनी का जमा।

१) श्रीमान् बाबू बिशुनदयाल गजानन्द जी का जमा।

१) श्रीमान् बाबू हरदयाल जी पोद्दार कम्पनी का जमा।

१) श्रीमान् बाबू नरसिंह दास जी भिवाणी का जमा।

१) श्रीमान् बाबू लक्ष्मीनरायण व रामकिशुन दास जी मुदरा का जमा।

१) श्रीमान् ठाकुर डोंगर सिंह जी का जमा।

१८॥)

१) श्रीमान् बाबू लालबिहारीलाल जी रोड़ा खत्री काटन ष्ट्रीट (नं० ४३) का जमा

१) श्रीमान् बाबू गुलाब राय, राजा शिव बक्स जी बहादुर काटन ष्ट्रीट (नं० ५७) का जमा।

१) श्रीमान् बाबू रामचरण दास व हजारीमल जी का जमा। हस्ते श्रीमान् बाबू सनहीराम जी से पाया, (नं० १२) कालीगोदाम अफीम का चौरास्ता

२) श्रीमान् बाबू भजनलाल महादेवप्रसाद जी लोहिया का जमा। हरीसन रोड कोठी (नं० ८०)

१) श्रीमान् बाबू गणेशदास गङ्गाबिशुन जी रोड़ा खत्री हंसपोखरिया (नं० १०) का जमा,

॥) श्रीमान् बाबू ज्वाहिरमल रामगोपाल जी का जमा।
(नं॰ ११) पर्गइयापट्टी

१) श्रीमान् लाला पूरणचन्द्र दिलवाली सिंह कपूर २॥ घर जो
का जमा (नं॰ २७) राजा बरदवान का कटरा।

१) श्रीमान् बाबू सीताबचन्द जी साहब जौहरी
सिकद्दरपाड़ा ष्ट्रीट (नं॰ १८।१) का जमा।

३) मनोहर दास जी के कटरे (नं॰ ११३) के साथ
मर्चण्ट महाशयों का जमा।

१) श्रीमान् बाबू चुन्नीलाल हरदान जी से पाया
१) श्रीमान बाबू बीजराज चुन्नीलाल जी से पाया।
१) श्रीमान् बाबू मगनीराम कनहैयालाल जीसे पाया

१) श्रीमान् बाबू चुन्नीलाल बिनानी जीसे पाया
अफीम का चौरास्ता (नं॰ १४)

३२)

(COPY)

Government House
Naini Tal
15 th. September 1900.

* Undersigned has the honour to acknowledge receipt of the poems submitted by Baldeo Prasad Khattri under cover of his petition the 8th. instant.

Baldeo Prasad Khattri
C/o Wright & Co. Johnstongung.
ALLAHABAD.

(Sd) W. B. Douglas, Capt:
Pt. Secy. to H. H. the L. G. C.
C. N. W. P. & Oudh.

अतः,—

और टन्डन खत्री और कपूर खत्री श्रीचण्डिका श्री देवी जी के उपासक हैं, किसी समय में यह मांस अहारी लोग बकरे का बलदान श्री देवीके निकट करते थे, और कहीं२ यह रसूम व्योहार चलन बलदान बकरे का होता है, और जो मांस अहारी लोग हैं सो अपनी पुरानी मर्य्यादा को नहीं छोड़े हैं, सो अजा का बलदान करते हैं, अथवा ,कहीं२ श्रीफल का बलदान भी होता है, और हमारे मेहरोत्र बंश सब श्रीशिवाय श्रीदेवी शक्ति के उपासक हैं, और हमारे मेहरोत्र बंश में श्रीशिवाय माता जी के निकट श्रीफल का फल चटकाते हैं, याने टन्डन कुल बैष्णव खान्दान खान्दानी बैष्णव बंशमे नहीं है, और मेहरोत्र कुल बैष्णव खान्दान खान्दानी हंसके समान देवता तुल्य हैं, जिस कुल पवित्र मे मेरा जन्म हुआ है, सो दया सहित देवताके समान यह मेहरोत्र बंश संसार मे प्रसिद्ध हैं।

अतः—

बिदित हो कि २ बर्ष के निकट ब्यतीत होता है, कि जब से मैंने श्रीभारतेश्वरी जोके स्वर्गबास बिषय का पत्र उपदेशके साथ मे मुद्रित करके संसार मे अर्पण किया था, और संसार मे बांटा था, तब से हमारे सब नातेदार अधर्मो अथवा असत्य की रक्षा करनेवाले सम्बन्धो लोग मुझसे अत्यन्त बोनीत होकर मुख,तलिफ बरखिलाफ हो रहे हैं, और तभी से खासकर हमारे रिशतेदार लोग मुझसे बिरोध रखते है, और हमारे उपदेश मात्र पत्र इत्या-दिकों के बारेमें, जो कि संसार मे हमारा महाधर्म्म उपदेश जोकि बिख्यात है, उसके यह सब लोग द्रोही हैं, और दो बर्ष से यह लोग हमारे सहायक नहीं हैं; बलकि हमारे धर्मके यह लोग

रक्षक नहीं हैं, और बल्कि कम ख्याली अबोधी लोग नाशक हैं, बाज़ बाज़ कण्टक मुद्दाशय हसद और रशक करनेवाले लोग हमारे इज़्ज़त और आबरूह और प्राणों के भी भूखे होकर ग्राहक हैं, और यह बात संसार में प्रसिद्ध है कि, देवता लोग दूसरोंके धर्म्म इत्यादिकों की रक्षा करते हैं, परन्तु असुर अर्थात् दैत्य याने दया रहित लोग जो हैं, यदि कोई पुरुष जो ग़रीब है, सो वह जो अपने धर्म्म कर्म्म इत्यादिकों की जो रक्षा करता है, सो उसके धर्म्म और ईमानके बागी होकर अधर्म्मी लोग नाश करतेहैं,हमारा निष्पक्ष उपदेश क्या सबके धर्म्मोंका रक्षक नहीं है ? जो लोग की मेरे हितैषी नहीं हैं, सो उन लोगों को मैं संसार में धन्यबाद देता हूँ।

(No 21) (शेर)

क़लम खींच कर क़तल करना नहीं यह रवा अमीरों को *
हमेशा चाहिये रखना अदल से याद गरीबों को *

उद्देश्य ।

चौपाई ।

हे परमेश्वर नीत तुम्हारी * ब्रह्मा वचन वेद मुखचारी ॥
ब्रह्मको ज्ञान चार है वेदा * अनेक ग्रन्थ जगकेर लवेदा ॥
वेद पुराण न मानैं कोई * कलिमें रहै न महिमा होई ॥
राजनीत से चलै न कोई * कलयुग में अनीत सब होइ ॥
परस्वारथ में कुटिल कुढ़ाई * खलनन केरी बुद्धि मूढ़ाई ॥
सब कण्टक को मतलब गूढ़ा * नीत न मानै बालक बूढ़ा ॥
अज्ञानी अज्ञान उड़ाते * खलहि मण्डली नहीं जुड़ाते ॥

जो नर अपने हैं विश्वासी * घटिआई करते हैं खासी ॥
बरधन केरो बुद्धि बुढ़ाई * जस कीरत सों असुर कुढ़ाई ॥
अज्ञानी बकियाके ताऊ * जूवाचोरि न करिये काऊ ॥
निरलज्जन को लाज न आती * अन्याइनको नीत न भाती ॥
असुरनसे हम रहत निरासी * उलटीमत है पलटी खासी ॥
परस्वारथ में अनीत छोई * अनहित करें सबै जन कोई ॥
परमेश्वर जग दीनदयालू * मो पर कीन्हीं कृपा बिशालू ॥
भई अनुग्रह ईश्वर केरी * प्रभुहि लार्डने करिहि न देरी ॥
तबहि आई इज्जत सरकारी * कम्पलीमेण्ट भई जग जारी ॥
दया सहित आई यह पाती * कृपा बिदित जगमें है भाती ॥
पश्चिम उत्तरके जयकारी * प्रभु लाटहि शोभित अधिकारी ॥
सार्टिफिकट मोहिं भेज्यो आला * आनर इज्जत केर हवाला ॥
मान बड़ाई दौड़ी आई * आनर चार की चिट्ठी पाई ॥
बङ्गालहि लाट बिराज बङ्गाला * न्यायधीश प्रभु हाकिम बाला ॥
प्रभुहि निहाल अनुग्रहि कीन्हा * धनहि बाः मुबारिक दीन्हा ॥
अयोध्यापुरिके नाथ सुरेशा * धनहिं बाद माहिं दीन्ह नरेशा ॥
यह सब ईश्वर की है माया * जग प्रकाश जो हमने पाया ॥
गर्व करहिं अन्याई बन्धू * अज्ञानी नर हियके अन्धू ॥
यह सब नाता देहं से भाई * नाते दारी सङ्ग न जाई ॥
रे अभिमानी मिथ्या चोला * अन्त समय बोलहि नहिं बोला ॥
घट घट व्यापहि अन्तरयामी * पाप पुण्य निरखत जग स्वामी ॥
दस इन्द्री दस गुणहि बखाना । मन नहिं जीत सके बलवाना ॥
यह पिण्डा दस इन्द्रिन केरा । मन सेवत चोला बहु तेरा ॥
चञ्चल चोला चितहि चलावै । पाप करम में मनहिं लगावै ॥
नित चाखत मन दूध मलाई । तकन चलते परहि लुगाई ॥

कण्ठी पहिनके माला फेरैं। पर नारिन सों नैन तरेरैं॥
कण्ठी पहिनके करहिं ठगाई। परधन हरते नेह लगाई॥
कण्ठी पहिनके मिथ्या चलैं। पर उपकार लखैं तो जलैं॥
दया रहित नहिं पर उपकारी। अन्याई सदा बिभिचारी॥
अज्ञानी अज्ञानमें भूले। अनहित करत मगनमें फूले॥
पाठ करहिं श्रीभगवत गीता। अन्तर कपट प्रगट बिपरीता॥
कहँ लगि बरनों यह अनरीता। प्रथम चरण कलयुग कर बीता॥
भरम जालमें सब जग लटका। अन्त समय मनुवां तन सटका॥
सब कर मन माया में भटका। परमेश्वरका उर नहिं खटका॥
अनुचित बोलैं झूठो बानी। बातहिबात सौगन्ध लखानी॥
नीत न मानैं धरम गंवाई। असुरन की लखिये प्रभुताई॥
माथे सुन्दर तिलक लगाई। रोलिहि श्रीहि निमान जमाई॥
कलयुग के पाखण्डी लोगा। अधरम से करते सुख भोगा॥
जबलौं नहिं मारहिं देवाला। तब लौं नहीं महाजन लाला॥
अज्ञानी नर पशुहि समाना। निरबुद्धी हैवान बखाना॥
अभिमानी सैतान समाना। राजनीत की यह परमाना॥
धनकी गरब में जो नर भूला। जानहुँ पापकी जगमें मूला॥
खलनन केरि निशाचरि माया। अधरम सेवत धरम गँवाया॥
बरतहिमान समय कलिकाला। छिनहि बिचार करो सब लाला॥

दोहा।

राजयोग सनमान हित, उपदेश भयो समार।
यह मानों बलदेवको, नीत न त्यागो यार॥

सोरठा।

यह जानत संसार, जहां नीत तहं धरम है
करिये मन बिचार हित बानी बलदेवकी।

(COPY)

Government House

ALLAHABAD.

Dated the 6th January 1904.

Sir,

I am desired to acknowledge your letter of the 22nd instant, together with the 3 printed books of your own composition which you have sent.

Yours faithfully,

Sd—H. G. S. Tyler, I. C. S.,

Private Secretary.

To

Baldeo Prasad Mehrotra.,

CALCUTTA.

(COPY)

Government House,

CALCUTTA.

12th, January 1904.

Sir,

I am directed to acknowledge the receipt of the Hindi poems forwarded with your letter of the 23rd ultimo

Yours faithfully,

Sd—John, .O Miller, (C. S. I.) I. C. S.

Private Secretary to the Viceroy

Lala Baldeo Prasad Mahrotra.

यह चिट्ठी बज़रीये डांक हाज़ा अङ्गरेजी की मुवर्खः १२ जनवरी सन् १९०४ ई० शुब को, आंजनाब आली जाह, वाइसराय हिन्द, बहादुर दाम इक़बालहुके दस्तफ़ैज़ शरीफ मुबारिक अटलसे सादिर होकर मरहमत हुई, इस पुस्तक का ४ फरमा मुद्रित आंजनाबके ख़िदमत शरीफमे बज़रिये डांक हाज़ाके रवाना किया था, सो उसकी रसीद बज़रिये डांक हाज़ा ता० २३-१२-३-ई० को पोष्टाफिस खेङ्गड़ापट्टी कलकत्ता की रजिष्ट्री, A. D. शुदह No. 148 को एकनालिजमेण्ट ता० 27—12-3 ई० को पायी।

(COPY)

श्रीपत्री भाई बलदेवप्रसाद योग्य लि० शिवप्रसाद को जयगोपाल बंचने, आगे समाचार १ बंचने,—

आगे तुमने हमारे यहां बरस ६)) के क़रीब काम किया, (इज़नाय गवर्नमेण्ट ख़ज़ानों में कई ज़िले में ख़ाजाञ्चगरीका) काम बहुत ईमान्दारी से किया है, और कोई बैमानी किसी तरह की नहीं किया है, और चाल चलन, जबतक, तुम हमारे यहां रहे, हमने बहुत ठीक पाया, आगे ज्याद: शुभ ता० २३ अगस्त सन् १८९३ ई०

यह सार्टिफिकट मिनजानिब जनाब राय
लाला शिवप्रसादजी साहब बहादुर
*रईश कानपुरने दिया,— ता: ६-७-३ ई० कलकत्ता-,
Babu—
Sd—Surju Prasad.

---

* रईश शब्द उच्चारणका दो टुकड़े करनेसे यह अर्थ प्राप्त होता है, र—अर्थात् रयासत—ईश—अर्थात् मालिक यानि अथवा रईश,

LIEUTENANT GOVERNOR OF BENGAL.

The Hon. Sir Andrew Fraser,

K. C. S. I. बिराज मान हिन्द जयतिः—

(No 22) **चौपाई**

जय श्री जय श्री फ्रेजर साहब। राजधानि बङ्गालके १नायब॥
जगमे सोहै मान बड़ाई। पर उपकार की कीरत छाई॥
धर्म्महिं के हितकारी भाई। परजन के रक्षक सुखदाई॥
जय श्री फ्रेजर साहबकेरी। जय जयकार होत बहुतेरी॥
जय श्री जय श्री सज्जन आगर। परजहि पालक जगत उजागर॥
मधुर शब्द जयकार को शोरा। जय जयकार होत चहुंओरा॥

दोहा

जय श्री फ्रेजर लाट की, सोहै जय जयकार।
हितकारी बङ्गाल के, विदित सकल संसार॥

—०—

१ सरदार { ता० २६-१२-३ ई० को इस पुस्तक का ४ फर्मा बज्-रिये डांक हाजा A. D. रवाना कियाथा, सो ता० २८-१२-३ ई० को पोष्टाफिस बड़ाबाजार का एक-नालिजमेन्ट No 39 का पाया।

—:०:—

LIEUTENANT GOVERNOR OF UNITED PROVINCES,

The Hon. Sir James John Digges La Touch,

C. S. I. बिराजमान हिन्द जयतिः—

(No 23) **क़सीदा**

सरजान लाट लटउच की जयकार हो रही।
क्या क्या सिफत बयांन औ तारीफ हो रही॥
सुनते हमेशा आप गुरबों की पुकार को।
दिल जां से लोग देते हैं दुवा सरकार को॥
हनूद मुसलमानों की करते हैं खातरी।
बलदेव प्रसाद मेहरोत्र यह लिखता बहादुरी॥

—:०:—

इस पुस्तक का चार फर्मा मुद्रित किया हुआ, बज़रिये डांक हाजा, A. D. रवाना किया था, सो ता० २२-१२-३ ई० का एकनालिजमेन्ट No. 20 पोस्टाफिस बड़ाबाज़ार का ता० 24-12-3 ई० को पाया, और नं० २२ व नं० २३ की यह दोनो गद्य पद्य लेख ता० १२-१-४ ई० को प्रातःकाल प्रेस मे मुद्रित को दिया।

—:०:—

३२) मीज़ान टोटल इस पुस्तक के चन्दे छपाई पृष्ठ ३१ को—

१) श्रीमान् बाबूलाल गङ्गाप्रसादजी सोनी ब्रोकर न्यू चीना-बाज़ार का जमा,

१) श्रीमान् बाबू चुन्नीलालजी जौहरी बांसतल्ला लेन नं० ३२, का जमा,

१) श्रीमान् बाबू केदारनाथ भावसिंहका ब्रोकर आफ रैली-बिरादर्स, हरिसन रोड (नं० १२६) का जमा,

१) श्रीमान् महंराज महन्त आनन्दगिरजी गोस्वामी मिरज़ापुर निवासी का जमा, ता० 3-1-04 ई० "गोस्वामी अपःभ्रंश गोसांई,

१) श्रीमान् बाबू डोंगरसिंह दास भावसिंकाजी का जमा, नीमतल्ला (नं० १८)

१) श्रीमान् बाबू विश्वेश्वर दास कसेराजी का जमा, श्रीठाकुरकी गली (नं० २)

१) श्रीमान् बाबू नाथूराम रामकिशुन खेम का साथ मर्चेन्टजी का जमा, मनोहर दास का कटरा (नं० ११३)

१) श्रीमान् लाला मनोहर दासजी मेहरोत्रा २॥ घर का जमा, सूतापट्टी नं० ८५

---

८) बांसतल्ला ष्ट्रीट न० २६ के मर्चेण्ट से पाया।

—:०:—

१) श्रीमान् बाबू गौरीदत्त चौधरीजी से पाया,

१) श्रीमान् बाबू रामप्रसाद चिमनलाल गन्डेड़ीवाला से पाया,

१) श्रीमान् बाबू आसाराम घासीराम झुंझुनवालेसे पाया,

१) श्रीमान् बाबू दिलसुख राय रामजस से पाया,

१) श्रीमान् बाबू जैदेव बांसदेव चूड़ीवाले से पाया,

१) श्रीमान् बाबू रामचन्द्र बन्सीधर से पाया,

१) श्रीमान् बाबू शिवनरायन रामनरायनजी से पाया,

१) श्रीमान् बाबू बीजराज मैनसरियाजी से पाया,

---

८)

---

४८) मीज़ान कुल टोटल—

—:०:—

माई लार्ड,—

भारतमित्र सप्ताहिक पत्र का क्रोढ़पत्र ता० १६ जनवरी सन् १९०४ ई० का वरतमान समय कलिकाल का भयङ्कर रूप श्रीभारत के सनातन धर्म्म और मर्य्यादा पुराचीन डुबाने का नाश प्रगट करता है, सो क्या ? गत २८ वीं दिसम्बर को मुरादाबाद में एक विधवा सम्बन्ध हुआ, बिजनौर के ज़मींदार सोती शङ्करलाल के साथ नाहन निवासी पं० मूलचन्दकी विधवा लड़की की शादी हुई, महाशय श्रीमान् भारतमित्र, विदित हो कि यदि यह मनुष्य ब्राह्मण अथवा क्षत्री है, सो इसको यज्ञोपवीत पहिनने का अधिकार नहीं है, यदि पहिने तो उस पुरुष की बिरादरी यज्ञोपवीत तोड़ने का अधिकार रखती है, और उस पुरुषको उसकी बिरादरी से दन्ड होसक्ता है, जो ब्राह्मण और क्षत्री बाल विधवाका गन्धर्व विवाह करते हैं, फिर वह ब्राह्मण और क्षत्री नहीं होसक्ते हैं, बल्कि विधवा का पुनर विवाह शूद्रों के वास्ते उचित है, परन्तु ब्राह्मणों और क्षत्रियोंके वास्ते नहीं है, यदि जो ब्राह्मण और क्षत्री अपनी पुरानी मर्य्यादा त्याग करके बाल विधवा का पुनर विवाह करें, सो वह पुरुष अपनी बिरादरी मे शामिल किसी हालत से नहीं होसक्ता है।

नवां अध्याय, प्रमाण मनुस्मृतिः सं० पृष्ठ ५५२ श्लोकार्थ।

अर्यमणंनुदेवम्, इत्यादि विवाह के मंत्रों में किसी भी वेद की शाखा में नियोग् नहीं कहा है, और विवाह की विधिवाले शास्त्रमें

भी फिर विधवा का विवाह नहीं कहा है ६५॥-पृष्ठ ५५३ श्लोकार्थः-, बुद्धिमान् (दान के गुण दोषों का ज्ञाता) मनुष्य किसी वरको कन्या को देकर और फिर उसी कन्या को अन्य मनुष्य को न दे, क्यों कि एक को देकर दूसरे को देता हुआ मनुष्य पुरुष के अनृत झूंठ हजार२ अणके दण्ड को प्राप्त होता है, यह वचन इस लिये है, कि विवाह के समय यदि सप्त पदी न हुई हो, और दैव वश लड़का मर जाय तो उस लड़के की भार्या न होने से कन्या को किसी अन्य लड़के को न दे, किन्तु विधवाओं के धर्मों मे वह लड़की रहे-७१॥—

Sd—Baldeo Prasad Mehrotra,
Khettri 2½ Ghur-,
CALCUTTA.

मैंने एक अपूर्व यह बात नई चाल निराली बहुधा आश्चर्य की अवसर जब मैं इलाहाबाद मे था, तब यह देखा करता था, सो क्या? याने जब कोई खत्रियों में धनाढ्य बुड्ढा मरता है, तब दशमे के दिन लोग गोल, गोल, मोतीचूर का गुप चुप लेड़वा बांटते हैं, सो इस लेड़ूवाके लालच से बिरादरीके लोग मुरदनीमे सैंकड़ों पुरुष नर व नारी एकठ्ठा होते हैं, याने मर्द और औरतें, बहुतसी घाट पर जाती हैं, यहां तक कि जिनके मुंह मे दांत नहीं है सो वह भी आठ महीने का बच्चा लेड़ुवा लेनेको जाता हैं, याने लेड़ुवे के लालच से अमीर और गरीब यह दोनों मुरदनी में इकट्ठा होते हैं, और जब कोई बुड्ढा या जवान मर्द या औरत गरीब का मरता है, तब साथ पड़ी २ गन्धाती और सड़ती है याने कोई साथ का

उठानेवाला बिरादरी मे, बिरादरी का मनुष्य दिखलाई नहीं पड़ता है, सो हे भाईयो लड्डू बांटनेवाले और लेनेवाले, यह दोनों को संसार मे धिक्कार है।

एक छोटा सा चुटकुला, चुटपुटे के साथ मे लोगो की दिल्लगी बाजी क्या है? एक फर्जी नाम की मुसम्मात गोबिन्दी बीबी मेहरी चठला कर चलती है, और मटक चमक कर क्या कहती है? गिरी तो वह गिरी, मै ना गिरी, अगरचे: वह ना गिरती, पर मै गिरती, तो गिरती, याने बिजुली गिरी कुवें मे, मै ना गिरी, फिर क्या कहती है? बढ़ी तो वह बढ़ी, मै ना बढ़ी, अगरचे: वह ना बढ़ती, पर मै बढ़ती तो बढ़ती, याने नदी बढ़ी, मै ना बढ़ी, फिर क्या कहती है? मरी तो वह मरी, मै ना मरी, अगर वह ना मरती, तो मै मरती पर मरती, याने नागिन मरी, वह मरी, मै ना मरी, फिर क्या कहती है? चढ़ी तो मै चढ़ी, वह ना चढ़ी, अगर वह ना चढ़ती, तो मै चढ़ती पर चढ़ती, याने दरख्त पर चढ़ गई, अगर वह ना चढ़ती, तो मै अदालत में पकड़ जाती।

मनेजर-भारतमित्र, महाशय, कलकत्ता सम्पादकने ता० १६-१-४ ई० के सप्ताहिक पत्र में यह अपना विज्ञापन दिया है, सो क्या? याने दो तोले कोढ़पत्र के लिये तौल मे होने से दाम ३०) अङ्कन तीस रुपया संसार मे प्रसिद्ध मुद्रित कराई का मोल रखः है, सो यह मोल महाशय हमारी राय मे बहुत कमती है, सो हमारी राय मे क्या बात आती है? याने ३०) अङ्कन तीस रुपये पर एक सुन्न, और फिर इसके बाद एक बिन्दी, और बिन्दी के आगे एक झल झलाता हुआ बुंदा याने सिफरभी होना चाहिये, और १०) अङ्कन

रुपये तीस का हज़ार गुणा, तीस हज़ार रुपया दो तोले का दाम रखना चाहिये, क्योंकि हमारे कौवों के उपदेश का एक २ बचन का दाम एक २ लच रुपया है, और बकुले भक्तों की कथा का दाम एक २ बचन का मोल पचास हज़ार रुपया सब बकुले भक्तों से है, क्योंकि हमारी सहादत यही है, जो कि बकुले भक्तों के कटरे में वह चीज़ बिकती है, महाशय! अब आप अपने क्रोढ़ पच का दाम दो तोले का दाम यानि जब आप तीस हज़ार रुपया रखेंगे, तब हमारे कौवों और बकुले भक्तों की कथा का दाम भी संसार मे विशेष बढ़ेगा, वरना नहीं, इस लिये आपको अपने क्रोढ़पत्र को बहुत इज़्ज़त करना चाहिये।

और इस पुस्तक का ४ फर्म्मा १ पृष्ठ से परयन्त ३२ पृष्ठ मुद्रित पत्र बज़रिये डांक हाज़ा के H. H. the Maharaja of Ramnager Benares की सेवा में बज़रिये (रजिष्ट्री A. D. के द्वारा से, ता० 24-12-3 ई० को पोष्टाफिस हवड़ा से रवाना किया था, सो (No. 168) का एकनालिजमेन्ट ता० 27-12-3 ई० को पाया।

श्रीकाशि निवासी बलदेवप्रसाद मेहरोत्र अढ़ाईघरस्य बर्म्मणः महाधर्म्मः उपदेशः कृतः।

शेर।

ऐयाशी ऐयाश जो करने को जाते हैं।
रन्डिके बन्टे से बहुतेरे पान खाते हैं॥
हिन्दू का नाम मात्र हैं, हिन्दू कहलाते हैं।
बलदेव प्रसाद मेहरोत्र क्या ताने उड़ाते हैं॥

दोहा ।

आया है सो जायगा, राजा राव फकीर ।
हितबानी बलदेव की, न मानो यार हकीर ॥
कांटे गाछ मे उगत है, बसहि गुलावहि फूल ।
उपदेशक बलदेव की, लखिये नीत न भूल ॥

टेक ।

एक बात नई ख्वाब की सबको सुनाते हैं ।
होटल में लोग चोरी से खानेको जाते हैं ॥
हम सचा हाल ख्वाब विषय बानोगाते हैं ।
वह ख्वाब चाहे ग़लत होय हम कह सुनाते हैं ॥
हम ठीक ठीक सचा हाल मुंह पे लाते हैं ।
अधरम विषय के हाल को कुछ कह सुनाते हैं ॥
एक बात नई ख्वाब की सबको सुनाते हैं ।
होटल में लोग चोरी से खानेको जाते हैं ॥ १ ॥

अन्तरा ।

जात बरन वेद औ कुल को लजाते हैं ।
होटल में खोल बोतल मुंह मे चुका जाते हैं ॥
होटल को देख टोटल को सब भूल जाते हैं ।
होटल में खाना खाने से आराम पाते हैं ॥
एक बात नई ख्वाब की सबको सुनाते हैं ।
होटल में लोग चोरी से खानेको जाते हैं ॥ २ ॥

अन्तरा ।

सब मुफ्त ज्ञान धरम को दिल से गंवाते हैं ।
फिर घरमे आके बीबीमे लब को मिलाते हैं ॥

लाकर ब्रांडी बीबी को अपने पिलाते हैं ।
डरते नहीं खोदा को न कुछ खौफ खाते हैं ॥
एक बात नई ख़्वाब की सबको सुनाते हैं ।
होटल में लोग चोरी से खाने को जाते हैं ॥ ३ ॥

अन्तरा ।

लखन के पास चाहे चुरुट पीने जाते हैं ।
मय पीके पाव रोटी औ बिस्कुट उड़ाते हैं ॥
होकर नशे में ओम फूल बोले जाते हैं ।
हिन्दुओ मुसलमान जो लखन होजाते हैं ॥
एक बात नई ख़्वाब की सबको सुनाते हैं ।
होटल में लोग चोरी से खानेको जाते हैं ॥ ४ ॥

अन्तरा ।

उन्हो के साथ बैठ कर होटल में खाते हैं !
होटल में खाना खाके सभों से छिपाते हैं ॥
पक्षों के साथ हुक्के को पीते पीलाते हैं ।
गर शख़्स कोई पूछे तो शरमाय जाते हैं ॥
एक बात नई ख़्वाबको सबको सुनाते हैं ।
होटल में लोग चोरी से खानेको जाते हैं ॥ ५ ॥

अन्तरा ।

सच यह दोनों क़ौम जो लखन होजाते हैं ।
तब जेन्टिलमैनी हाथ मिलाकर गिट् पिटाते हैं ॥
करते हैं नाश धरम वह दोज़ख में जाते हैं ।
आप तो डूबते हैं औरोंको डूबाते हैं ॥

एक बात नई ख़ाब की सबको सुनाते हैं।
होटल में लोग चोरी से खानेको जाते हैं॥ ६॥

अन्तरा।

पीकर शराब ख़ूब मजे भी उड़ाते है।
कलयुग के लोग धरम नाश करते जाते हैं॥
रख कर शरम को ताक़ पर जो चाहे खाते हैं।
दुनियां में वही लोग बड़ा ज़ुल्म ढाते हैं॥
एक बात नई ख़ाब की सबको सुनाते हैं।
होटल में लोग चोरी से खानेको जाते हैं॥ ७॥

अन्तरा।

ग़रीब बेगुनाहों को सभी सताते हैं।
सब ख़ाता दौलतवालों को छिपाते जाते हैं॥
बल्देवप्रसाद काशी बासी कह सुनाते हैं।
मिहरोत्र खत्री वंश में हम ढाई कहाते हैं॥
एक बात नई ख़ाब की सबको सुनाते हैं।
होटल में लोग चोरी से खानेको जाते हैं॥ ८॥

विदित होकि जो यूरुपियन ख़ान्दानी महाशय पहले बिलायती लन्डन निवासी हैं, सो वह लोग यह बात नहीं चाहते हैं, कि कोई नेटिव आदमी हमारे खाने पीने मे शरीक होकर तवाज़ा अर्थात् जेवनार आनन्द टीफिन इत्यादिकों के समय मे शामिल हों, लेकिन ख़ुशामदी नेटिव अङ्गरेजीदां लोग साहब लोगों के साथ मे, खाना पीना अपनी बड़ी भारी इज्जत समझते हैं, यदि कदाचित शिफारिश से हो भी जांय तो मानो बैकुण्ठमें न उनके सब पुरखे पित्र इत्यादिक लोग तर गये।

और इस होटलके विषय का दूसरा लेख निज लेखनी से लिख करके अपने ख़ुद हाथ से ता० 4-7-3 ई० को हिन्दी हितवार्त्ता छापिके होट (No 1) कलकत्ता बन्दर के मनेजर बाबू नबीकिशोर चटर्जी के हस्ते दिया, और इस लेख की ३ कापी अपने हाथ से लिख करके, मासिक हिन्दी सम्पादक पत्र, बाबू दुलीचन्द सेखसरिया, मनेजर, हिन्दूमित्र, माडवगञ्ज, डाकघर सकरीगली, को ता० 4-7 3 ई० को डाक के द्वार से भेजा, और चौथी इसकी नकल अपने हाथसे लिख करके बङ्क आफ बंगाल आगरा खास आगराके खजाञ्ची हजरत वर्तमान सन् १९०३ ई० में जो बंकके कारपरदाज हैं, सो जब वह कलकत्तेमें तशरीफ लाये थे, तब मैंने उनके हवाले किया था, और पांचवीं इसकी नकल अपने हाथसे लिख करके और इस पुस्तकमें जो (No. 18) की लेख उपदेश मुद्रित है, सो शार्ट इबारतके साथमें, बजरिये डाक हाजा रजिष्ट्री शुदह No. 48 पोष्टाफिस हबडाके द्वारासे श्रीमहाराजा साहब बहादुर श्रीकाशी नरेश की सेवामें ता: 19—9—3 ई० को रवाना किया था, सो नं० 48 का एक नालिजमेन्ट पोष्टफिसका ता० 25—6—3 ई० को पाया, और छटवीं होटल और इस पुस्तकके २१ पृष्ट (No 18) का लिख कौवोंके उपदेशके विषयका संक्षेप इस पुस्तककी इबारत चन्द अपने हाथसे लिख करके बजरिये डाक हाजा रजिष्ट्री शुदह पोष्टाफिस जनरल No G 944 के द्वारासे, A. D. Private महाराजा साहब महाराजा अयोध्या श्रीनरेशकी सेवामें रवाना किया था, सो अभीतक No G. 944 इकनालिजमेंट पोष्टाफिसके द्वारका रसीद नहीं कतार्थ हुआ है, और सातवीं नकल होटल खवाब विषयकी मैंने अपने हाथमें लिख करके और किसीको एलावह इसके नहीं दिया है, हे भाईयो, यह तो हमारा मिथ्या स्वप्न है, जिस महाशयको सच्चा स्वप्न तसदीक अर्थात् सही करना होय तो ता० 16 अगस्त सन् १९०२ ई० का साप्ताहिक पत्र श्रीभारतमित्र कलकत्तेके समाचारके फोटोको देखिये, और उस तसवीर को जो कि उसमें मुद्रित है, सो उस शोभायमान बलिहारी चित्र बिचत्रोंके द्वारों से देख करके मेरा स्वप्न ख़ुवाब को वरतमान फल सच्चा जानिये।

और मैंने इस कलिकाल समयमें महाराजा साहब बहादुर महाराजा जयपुर राजपूताना को प्रशंसा कई अख़बारोंमें पाया, सो क्या ? कि आप लन्डनके जानेके समय और आनेके समय, और वहां जांकरके और फिर भारतमें लोटती यात्रा समयमें अपने खास धर्मकी श्रीठाकुरजीकी पूजा करते हुवे जहाजमें और खास लन्डनमें अत्यन्त भली भांति रक्षा किया है, इस विषयमें आपकी संसारमें बहुतसी प्रशंसा हो रही है, सो इस धर्म विषयमें मैंभी महाराजा साहब श्रीमान्

महोदयजीको धर्मके पक्षपर अनेकवार धन्यवाद देकर आपकी विशेष प्रशंसा धर्म विषयमे अस्तुति करता हूं, अतः श्रीमणि मुकुट महँराजा साहिब धर्मात्माओंके धर्मात्मा और श्रीभारतके महँराजा धर्मरक्षक अथवा परउपकारी सुवेश सोभाधमान श्रीभारतके नरेशकी संसारके चारों दिसावोंमें क्या खूब जयपुरके राजपुतानाकी जय जयकार शब्द धुनी आनन्दके साथमे सोभायमान हो रही है।

श्रीवेंकटेश्वर सप्ताहिक समाचार पत्र बम्बई शुक्रवार ता० २४ मार्च सन् १८९९ ई० का यह उपदेश संसारमें प्रसिद्ध है।

—:०:—

अन्यच्च।

(१) लन्डनमे वासकर, पासकर, आवतही शङ्कर सलौने मैन, मिस्टर कहाविंगे। बूट पतलून, औ कम्फाटर, टोपी डाट, जाकटकी पाकटमें वाचिलट कावेंगे। नाविल पढेंगे नये टेबिल बजाय पोर्ट, वाइन पियेंगे, मीट होटलमें खावेंगे। फारसीको फारसी उडाय, अंगरेजी वाज, हाय देवनागरी को धूरिमें मिलावेंगे।

(१) सन् १८९४ ई० मे, जब मैं नैनीतालमें था, सो एक रोज मैं एक बेंचपर बैठा था, और उस जगह पर कई युरुपियन महाशय भी मौजूद थे, सो एक पहाडी पुरुष कोट पतलून और अंगरेजी टोपी दीये हुवे, वे इतहाय एक घोडं को दौडाये हुवे चलाजाता था, सो सब युरुपियन महाशय यह कहने लगे, कि देखो तो सही, यह काले मुंह का नेटिव बन्दर हमारी कापी उतारता है, सोरे भाइयो जो खास बिलायती युरुपियन महाशय शरीफ खानदानी हैं सो वह लोग इन बातो से बहुत चिढते हैं, सो इस लिये अपनी पुरानी मर्य्यादा किसी महाशय को न त्यागना चाहिये, और न अपना सनातन धर्म को छोडना चाहिये।

Errata.

अशुद्ध।	शुद्ध।
पृष्ठ द्वितीय दो पंक्ती के बाद।	
श्रुति गावती है विनय तुम्हारी—	श्रुति गावत है विनय तुम्हारी।
पृष्ठ ८ (No. 4) पंक्ती २ की मे—	
कमवकृत—	कम्वकृत्—कम्बुकत्।

अशुद्ध।	शुद्ध।
पंक्ती ६ की, हरोच अर्थात्— धारा में, खिलदी, बेमान, दगाबाज, बिश्वासघातिक, यानी अपने मतलबी, जुवाचोरों से—	मेंहरोच।
पृष्ठ १२ (No 47) के प्रथम दोहे की पंक्ती मे, सुमनिर दई,—	सुम—निरदई।
पृष्ठ १७ अन्तरा २ के ३ की पंक्ती में, मीत सनातन वो डुबाता है जमाना—	मीत सनातन यह डुबाता है जमाना।
पृष्ठ १९ अन्तरा ४ की पंक्ती में, बलदेव प्रसाद मेंहरोच चढ़ाई घर में प्रधाना—	बलदेव प्रसाद मेंहरोच चढ़ाईघर हैं प्रधाना।
पृष्ठ २२ राग काफिया की २ पंक्ती में, धरम की बानी की लेखनी क्या शक्ति काला है आग—	धरम की बानी लेखनी क्या शक्ति काला है आग।
पृष्ठ २३ की शेर का (No 24) —	
पृष्ठ २७ बिज्ञापन, की ६ पंक्ती मे, याट—	लाट।
पृष्ठ २८ के दोहा के (No 20) की ५ पंक्ती में, दर्शहिं नवम्बर जानिये, सकल बिदित प्रचार—	दर्शहि नवम्बर जानिये, सकलहि बिदित प्रचार।
पृष्ठ ३० बारहवें नाम की पंक्ती के नीचे, तेरहवें नाम में, सनहीराम—	सनेहीराम।
पृष्ठ ३१ की अंगरेजी चिट्ठी मे Johnston-gung—	Johnstongunj.
पृष्ठ ३४ चार पंक्ती के बाद ९ की पंक्तीमें तबहि चाई रजत सरकारी—	जबहिं चाइ रजत सरकारी।

रजत, अथवा रज्जत अर्थात् सोना, चांदी, इसकी दर्शनी हुन्डी नोहरत की क्या है? यानी प्रभु बड़े लार्ड साहब का कमृशीन व और प्रभु छोटे लाट साहब पंजाब की

अशुद्ध।	शुद्ध।
धन्यवाद और चिट्ठियां और प्रभु छोटे लाट साहिब इलाहाबाद राजधानि के आनर की ४ चिट्ठियां हैं, सो इन सब चिट्ठियों का अभी तक भुगतान नहीं हुआ है, सो क्यों? याने हसद और रशक व पश्चाताप जलन करनेवालों के. याने जरिये द्वारों से निरुद्ध होकर मेरे उपकार मे विघ्न पडा है, और हिन्दूस्थान मे ना इत्तफाकी क्यों फैली? याने हसद और रशक के वजह से,—	
पृष्ठ ४० चार नाम के निचे, ईंडिग मे मर्चेन्ट से—	मर्चेन्टो से।
पृष्ठ ४४ की होटल के विषय का (No 25) —	

उपदेश।

इस कलिकाल मे प्रागराज के, निवासी लोग अपने को बहुत धर्म्मात्मा समझते हैं, शोच का विषय यह है कि, इस कलिकाल के प्रथम चरणने निज प्रचण्ड अबोधके बाणों से सज्जनो की बुद्धी को पलट डाला है, ब्राह्मणों के यह धर्म्म हैं, कि गौवों को रक्षा करना, और विधवाओं के धर्म्म इत्यादिकोंकी रक्षा करना, और मंत्रादिक विद्या इत्यादिकों को शिक्षा लेना, और देना, चाहिये, और क्षत्रियों और वैश्यों के यह धर्म्म हैं कि अपने मात्र पक्ष इत्यादिकों की रक्षा करना चाहिये। खेदका कारण यह है कि एक दिन मुझ से आल्हाराम गोस्वामी उपदेशकने इलाहाबाद के गौशाला की शिकायत किया, कि, यहां की गौशाला का कुछ ठीक प्रबन्ध

नहीं है, मैंने गौवों की रक्षा के प्रबन्धके वास्ते, मैंने गौशाला स्थापित, स्थान कौट गंज मे किया, सो इस्का प्रबन्ध गड़बड़ी लोग गड़ बड़ रखते हैं, सो हे भाइयो गोस्वामीजी का इस्मे कोई दोष नहीं पाया जाता है, क्योंकि बाल्हाराम गोस्वामी जीने केवल धर्म्म मार्ग दरसा करके धर्म्म उपदेश किया है, सो उस उपदेश को ग्रहण करना और प्रबन्ध रखना ब्राह्मणों व क्षत्रियों और वैश्यों के धर्म्म हैं, अत:—श्रीगोस्वामी कृत् भजन गो रक्षा उपदेश मंजरी बाल्हारमाजीकी, क्षीन प्रेसमे पन्डित स्वामी दयाल के प्रबन्ध से मुद्रित प्रथम बार यह पोथी एक हजार, माह मई, सन् १८८२ ई॰ मे हुई है, जिस्का मोल)॥ आना है, यह पुस्तक देखने के काबिल है, सुनते हैं, कि मुद्रा कुछ गौशाला के बाबत इकट्ठा किया गया है, सो वह रुपया किसी लाला जी के द्वारा से किसी बङ्क मे जमा है, और उसका ब्याज दिन बदिन बढ़ता जाता है, क्या खूब, एकदिन मैं, जब कि प्रयागराज मे था, तब मे एकदिन, प्रथम जेष्ट संबत १८५८ के दिन मै अकसमात रमता हुआ, गौशाला को देखने के नेम से कौट गंज पहुंचा, सो मैं वहां जाकर क्या देखता हूं, कि ४ गौवें भूखी प्यासी मुख बांधे बिचर रही हैं, सो हे भाइयो, प्रयाग निवासियो, सब सज्जन महाशयों से मैं यह निवेदन करता हूं, कि प्रयाग राजकी गौशाला का प्रबन्ध कुछ ठीक तौर पर नहीं है, सो इस्का प्रबन्ध ठीक तौर से रखना, धर्म्म का नेम सब हिन्दू मात्र बंशों का है, जिस्मे गौवें बेचारी भूखी प्यासी न मरें, और मेरा गौ विषयका उपदेश संसार में प्रसिद्ध है, सो उस धर्म्म उपदेशको प्रसन्नता से स्वीकार करके धारण कीजिये, और प्रयाग आर्य्य सब निवासियों से यह प्रार्थना है, कि गौशाला का प्रबन्ध इस्का बहुत

ठीक तौर पर रखिये, और इस बारे मे श्रीमान पण्डित मदन मोहन मालवीजी बालिष्टर हाई कोर्ट इलाहाबाद को क्या करना चाहिये, याने अङ्गरेजी वकालतकी बालिष्ट्री धारण करके, कुछ सनातन धर्म्म की भी, वकालत धर्म्मसे करना चाहिये।

कलकते की गौशाला पिंजडापोल का बन्दोबस्त सुनते हैं कि मारवाड़ी वैश्य इत्यादिकों के हाथों से बहुत अच्छा इस समय के अनुसार प्रबन्ध है, मैं यहां पर दोवर्ष मे हूं, परन्तु अभीतक गौशाला देखनेका इत्फाक नहीं हुआ है, इसलिये यहां के गौशाले का हाल बेगैर देखे भाले मालुम कीये हुवे, कुछ नहीं लिख सक्ता हूं, हां! यतना मैजानता हूं, कि इन्तजाम गौशाले कलकते का बहुत अच्छा सुनाई पड़ता है।

व्याख्यान।

एक मनुष्यने मुझसे यह सवाल किया, कि जब पुरुष का पुनर विवाह होता है, तब फिर बाल विधवा का भी होनाचाहिये, तब बाद इस्के मैंने यह उस पुरुषको उत्तर दिया कि, जब बाल विधवा का. याने पुनर विवाह हुआ, सो फिर सब बृद्ध विधवांका भी पुनर विवाह होना चाहिये, याने जब बृद्ध विधवाका पुनर विवाह हुआ, तब बाद इस्के माता पुत्र मे भी यह सम्बन्ध पुनर विवाह का होना चाहिये, याने-जब माता पुत्रमे विवाह हुआ, तब बाद इसके फिर पशु और मनुष्यमे क्या फरक रह गया, क्योंकि पूर्व जन्मके महाघोर पापोंसे लड़की बाल विधवा होती है, सो पूर्व जन्मके अपराधों का मोच इस जन्म मे, बाल विधवा, कर्म्मानुसार होनेके बाद उपाय क्या

है ? याने व्रत धर्म इत्यादिकों से और सच्चिदानन्द परब्रह्म परमेश्वर मे, लौ लीन होकर केवल ध्यानरूपी चरण पादुका मे, प्रेम भक्ति से साधन रखना चाहिये, यही धर्म कर्म स्त्रीके पतिके मरने के बाद उचित है, और घृत के पकवान भोजन इत्यादिकों को त्याग करके, थोड़ासा भोजन साधन करना चाहिये, देखिये हमारी बिरादरी मे, अब तक यह रेवाज़ क़ायम है, कि जिस स्त्रीका पति मर जाता है, तब वह बिधवा बाद इसके एक साल लंघन करती है, याने केवल दिया बत्ती अर्थात् चिराग़ जलने के बाद संक्षेप साधारण थोड़ा सा भोजन करके, अपनी बसर करती है, और जो बिधवायें दूध, मलाई नित खाती हैं, सो वह स्त्री कुलतारन दोनो कुल मे. धब्बा लगासकती हैं, हमारे बिरादरीके लोगोंने लंघन क्यों रखा ? इसी कारण से, जिस्मे बिधवा स्त्रीका काया जले, और धर्म बचे, सोई भाइयो यह भारत खण्ड तपो भूमि पुनीत स्थान है, हम इस बातको बहुत आश्चर्य मानते हैं, सो क्या ? याने जो लोग बिधवा का पुनर बिवाह करते हैं, फिर उस बाल बिधवा की कन्यादान देनेवाला कौन पुरुष ठहरता है ? याने प्रथम जिसने कन्या दान देकर अपने जमाई का चरण पूजा, फिर उस कन्याका पिता अधिकारी नीतके अनुसार अपनी कन्यापर अधिकार रखने वाला नहीं रहा, क्योंकि कन्यादान देनेसे वह कन्या दूसरेकी गोत्रमें हो गई, और न फिर उस स्त्री बिधवाको उसके श्वसुर जेठ देवर इत्यादिक अपने घर की स्त्री बहूपोतोह को दूसरे पुरुषको मरने पर भी नहीं दे सक्ते हैं, सो हे भाइयो जो लोग कि बिधवा का पुनर बिवाह करते हैं, सो वह लोग किस बिधी से करते हैं ?

माई लार्ड,

प्रमाण चमत्कार चिन्तामणि, हमारा तुला लग्न मे जन्म है, और शुक्र चतुर्थ स्थान मे है, सो ऋषी मुनी का वाक्य यह प्रमाण के साथ मेरे वास्ते है, कि शुक्र चतुर्थ स्थानमें होने से वह पुरुष सब पुरुषोंसे अधिक माननीय पुरुष होता है, और दूसरा प्रमाण वरतमान समयका यह है, कि जनाब आलीजाह वाइसराय हिन्द बहादुर दाम इक़बाल हू, कि और जनाब लफटिनेण्ट गवर्नर साहिब बहादुर बंगाल और मग़रबी व शमाली अवध के और महराजा साहिब बहादुर श्रीकाशी नरेश अथवा श्रीमहराजा साहिब बहादुर श्रीअयोध्यापुरीजी के श्रीनरेशने, इन सब महोदय मान्यवरोंने, इस ख़ाकसारको मान्य इज्जत करके संसार मे बुजुर्गों कृतार्थ किया है, सो सब महाशयों से मेरी यह निवेदन है, कि सब ब्राह्मणों और क्षत्रियों, और वैश्य इत्यादिकों को यह बात उचित है, कि मेरे उपदेशों को ग्रहण करके मेरा सनमान करें, और इन सब महाशय, उत्तम कुल ख़ान्दान, शरीफ अशराफों को मेरे कलमे बचनो पर खूब अच्छी तरह से ध्यान देना चाहिये, और अज्ञानता अहङ्कार को कुर्ड पर फंक करके, मेरे अनुशासन बचन को ग्रहण करके इज्जत के साथ मे हमारी आज्ञा को अताअत दह करना चाहिये, सो हे भाईयों हमारा उपदेश आप लोगोके धर्म्म की रक्षा क वास्ते यह है, सो क्या? याने बिधवा फन्ड क़ायम होना चाहियें, और वह रुपया हर ज़िले इजलाय गवर्नमेन्ट के ख़ज़ानों मे जमा होना चाहिये, और ईस फन्ड का प्रबन्ध मेरे तअलुक होना चाहिये, यदि कोई पुरुष यह मेरा अनुशासन उपदेश के द्वारा कदाचित कोई न स्वीकार करे, तो ज़िला हाकिम को यह चाहिये, सो क्या? याने उस पुरुष से बाल बिधवा के पुनर बिवाह का दस्तख़त कराया जावे, याने जो मनुष्य बिधवा फन्ड के चन्दा देने मे उज्र अथवा इनकार करके ना मनज़ूर करे तो उसके वास्ते यह अनुशासन हमारी मानना चाहिये।

———:०:———

(No. 26) ग़ज़ल।

बतावो मेहरबानो सब हिमाक़त से करोगे क्या?
बहुत ईज़ा उठाया हम तकब्बुर से करोगे क्या?
कठिन तकलीफ को पाया धरम रक्षा के कारण हम।
मेरा कोई नहीं जगमे मेरा ख़ाली अकेला दम॥
मेहरबानी अता होगी या होगी या नहीं होगी।
यही दम से भरोसा है मुलाक़ातें न फिर होगी॥

यह कह' नेकी सभों में संग न कोई साथ देता है ।
फ़क़त मन याद करता है श्रीभगवत नाम लेता है ॥
नहीं करिये बहाना अब कबूल होवें मेरी बातें ।
मुद्दत से भटकता हूं बिचारो यह सबै जातें ॥
नहीं खाने को विधवों के न कपड़ा पास है उनके ।
गरीबिन को न होना चाहिये कलयुग का डण्ड उनके ॥
मिले भारत को हक़ चन्दा बेवों की याद गारी में ॥
खज़ानों में जमा होवै हर एक जिले सरकारी में ।
बलदेव प्रसाद मेहरोत्र पढाई घरने क्या किया ।
मनकी उमंग तरंग को जग में विदित किया ॥

No. 27

शेर ।

व्याख्यान ।

यह झूठी बाज़ी न खेलो साहब सुनो यह मेरा कलाम प्यारो ।
जो सत्य बादी हैं खल्क़ अन्दर वह रहते अन्दर रज़ाके यारो ।

शरीफ रईश किस्को कहते हैं ? जो अपने इज़्ज़त आबरूह के बारबर, गरीब इज़्ज़तदार शरीफ खन्दानी आदमी की इज़्ज़त आबरूह, योने अपने इज़्ज़त आबरूह के बराबर समझे, और इन्सानियत चे: मानी दारद ? याने इन्सान के माने क्या है ? चूंकि, इन्सान तलफ़ुज़ का दो टूकडा करने से, इस लफ़ज़का यह माने पैदा होता है, इन—सान—, अर्थातु हैवान, नातिक़,— और नातिक़ के माने क्या है ? अकिल-याने, आक़िल अर्थात् बूद्धी, और मनुष्य और पशु में क्या फरक़ है ? मनुष्य में ज्ञान अर्थातु बुद्धी प्रवेश होती है, और याने पशुवोंको नहीं, जो आजकल

समय प्रतिकूल यानी ज़माना कलिकाल अर्थात् सिया वक़्त्ती वर खिलाफ़ से व बाजे२ रईश लोग अज्ञानता और अहङ्कार और द्रव्यके अजीरणके कारण से, इन्सानियत और अशराफियत जानते नहीं हैं, कि यह शय किस चिड़िया का नाम है, यानी बाज़२ रईसों को इन्सानियत ज़रा भी छू नहीं गई है, यानी हम चुनी दीगर नेस्त, के कारण से, बाज़२ लोग पशुके तुल्य हो रहे हैं, यानी अपने खुद ग़रज़ मतलब के आगे दूसरेकी ग़रज़ को नाचीज़ समझते हैं, अगरचेः कोई शख़्स उनके खास मतलब के वास्ते, उनकी फरमाबरदारी मे जावे; तो वह लोग सीधे मुंहसे बात करते हैं, वरना नहीं गुफ्तगूह् करते हैं।

(No. 28) क़ितै:,—

यों तो दुनियां मे पेड़ लाखों हैं दौलत वाले।
उनका बन्दा हूं जो बन्दे हैं मोहबत वाले॥

एक छोटा सा क़िस्सा चुटकुले के साथमे निमक मिरचे से पड़ पड़ानेवाला और चटपटानेवाला इस समय कलिकालको क्या है?

यानी किसी ज़माने मे, एक अन्धा बाज़ार मे बैठा हुआ था, सो उस ज़माने मे एक बादशाह की सवारी निकली, सो बादशाह ने, उस अन्धे सूरदासजी से, क्या दरियाफ्त फरमाया?

यानी शीरीं ज़बान से यह कलमां इस्तिमाल किया, और यह मधुर शब्द उच्चारण करके क्या आप पूछते हैं? अजी सूरदासजी साहिब आप क्या बाज़ारमे बैठे हुवे करते हैं? तब बाद दरियाफ्त फरमाने के, सूरदासजी ने यह उत्तर देकर जवाब दिया, कि यह खाक सार बाज़ारमे, बैठा हुआ मखी मार रहाहै, फिर बाद इसके वजीर की एक सवारी निकली, तब वजीर ने यह दरियाफ्त

फ़रमाया, कि अजी सूरदासजी. आप बाज़ार मे बैठे हुवे क्या कर रहे हैं ? तब सूरदासजी ने, यह जवाब दिया, कि यह खाकसार बैठा हुआ, बाज़ार मे. खाक उड़ा रहा है, फिर बाद इसके एक (सईश*) की सवारी एक घोड़े खच्चर के ऊपर निकली, तब उस सईश ने ऐंठ ऍंठ कर ऐठासूरने, यह सूरदास जीसे फटकार करके पूछा, सो क्या ? अरे सुरवा का करत बायरे, तब सूरदासजी ने, यह जवाब देकर, यह उत्तर दिया, सो क्या ? तोहैरा केरे मालुम नाहीं होत बाय, अरे रौंवां बैठल बाटी हो, फिर बाद इसके कोई साहिब दरियाफ्त करने को निकले, कि इस बाज़ार की सड़क के राह से, किसकीर सवारी निकली थी, सो कोई बाज़ार मे नज़र नहीं आया, सिर्फ़ खाली एक अन्धा बज़ारमें बैठा हुआ देखलाई पड़ा, तब उस अन्धे से उसी शख़्सने यह दरियाफ्त किया, कि अजी सूरदासजी, इस बाज़ार से किसकीर सवारी निकल कर गई है, फिर बाद इसके सूरदास जीने यह जवाब देकर, यह उत्तर दिया, सो क्या ? याने. बादशाह, वज़ीर, और एक सईश, तब बाद इसके उस शख़्सने फिर यह पूछा, कि तूतो अन्धा है, तुझे क्यों कर मालुम हुआ, कि कौन बादशाह है ? और कौन सईश है ? तब फिर बाद इसके सूरदास जीने यह उत्तर दिया, कि जब बादशाह की सवारी निकली, तब बादशाहने मुझसे यह दरयाफ़्त फरमाया, कि अजी सूरदासजी साहिब आप बाज़ारमे बैठे हुवे क्या कर रहे हैं, फिर बाद इसके जब वज़ीर की सवारी निकली तब वज़ीरने मुझसे यह फरमाया,

---

(१) सईश शब्दका दो टुकड़े लफ्ज़, बांटे करने से यह अर्थ मुत़लाला होता है, सु—अर्थात ताज, ईश अर्थात् स्वामी, अथवा घोड़े के साज का स्वामी कौन ? यानें सईश।

कि अजी सूरदासजी आप बाज़ार में बैठे हुवे क्या कर रहे हैं, सो हे भाई ! मैंने बादशाह और वज़ीरको इस वजह से पहिचाना कि बादशाहने मुझे साहिब का कलमा फरमाया, और वज़ीरने मुझे साहिब नहीं अपनी ज़बान से इस्तमाल फरमाया, खाली, जी, कह कर रह गये, और सईस गंवार को मैंने इस वजह से पहिचाना कि उसने मुझे शख्त् कलमा कहा, अरे सुरवा बैठल का करत बायरे, तब उस शख़्सने यह दरयाफ्त् किया, कि अन्धे काए किस्म के होते हैं, फिरवादइसके 'यह जवाब दिया कि, याने एक आंखका अन्धा और दुसरा हृदयका अन्धा, सो हे भाइयों हृदमे ज्ञान न होने से भी वह मनुष्य मूर्ख अन्धे के तुल्य होता है, याने रुपया पास हुआ, और इल्म पास हुआ, और ल्याकत न हुई तो वह शख़्स बिलकुल हियका अन्धा कहा जायगा ।

---

(४८) मीज़ान कुल टोटल इस पुस्तकके चन्दे छपाई पृष्ठ ४० की।

२) नरायनप्रसाद लैन सूर्य्यमलकी कोठीके (No 4) के मर्चेण्टोंसे पाया।

१) श्रीमान् बाबू चोखचन्द कालूराम जीसे पाया। ता० 18—1—4 ई०

१) श्रीमान् बाबू सरदारमल जैसराजजी ओसवालसे पाया, ता० 24—1—4 ई०

२) कालीगोदाम अफीम का चौरस्ता (No 15) की कोठी के मर्चेण्टों से पाया।

१) श्रीमान् बाबू बागमल बद्रीदास जीसे पाया, ता० 18—1—4 ई०

१) श्रीमान् बाबू शोभाराम शिवदत्त रायजी से पाया
ता॰ 20—1—4 ई॰

१) श्रीमान् बाबू छबूलालजी जौहरी ढांकापट्टी
(No 41) से पाया, ता॰ 19—1—4 ई॰

३) जगत सेठका कटरा (No 47) के मर्चेण्टों से पाया।
१) श्रीमान् बाबू हरीसिंह निहालचन्द सिंघी जी से
पाया, ता॰ 23—1—4 ई॰
१) श्रीमान् बाबू जवाहिरमल प्रेमसुखजी सरावगीसे पाया
१) श्रीमान् बाबू प्रतापमल चुन्नीलालजी श्रोशवाल
डूगरसे पाया।

८) सूर्य्यमलकी कोठी बरतल्लाष्ट्रीट, (No 71) के मर्चेण्टों
से पाया।
४) श्रीमान् बाबू सेवाराम भीमराजजी सिकृतियाका जमा
.ह॰ श्रीमान् बाबू भीमराजजो साहिब धर्म्मानुशासन
के प्रेमी महाशयजीसे पाया। ता॰ 3I—1—4 ई॰
२) श्रीमान् लच्छीराम हनुमानप्रसाद जीसे पाया।
ता॰ 28—1—4 ई॰
१) श्रीमान् बाबू हरनन्दराय फूलचन्दजीसे पाया।
१) श्रीमान् बाबू नन्दराम हरदयालजी से पाया।
१) श्रीमान् बाबू मोहनलाल ओङ्कारमल जीसे पाया।
ता॰ 4—2—4 ई॰

५) श्री अफीमके चौरस्तेके पहाईतियों पञ्च महाशय
महाशयों से पाया।
नाम Private, ता॰ 10—2—4 ई॰

७०) मीजान कुल टोटल—

Errata.

अशुद्ध ।	शुद्ध ।
पृष्ठ १४ की पंक्ती मे बुढाई—	बुढाई ।
पृष्ठ ५२ की ८ पंक्ती मे, आल्हारामजी—	श्रीआल्हारामजी ।
पृष्ठ ५४ की ९ पंक्ती मे, फरती है—	करती है ।
पृष्ठ ५४ की १३ पंक्ती मे, सोहे यह भारत आर्यो खण्ड तपो भूमि—	सो है आर्यो यह भारत खण्ड तोपोभूमि ।
पृष्ठ ५४ की २१ पंक्ती मे बहु पोती हूं—	बहुपत्नी हूं ।
पृष्ठ ५५ की ४ पंक्ती मे, इक़बाल हूं—	इक़बाल हूं ।
पृष्ठ ५५ की १५ पंक्ती मे, ईस—	इस—
पृष्ठ ५६ की शेर के नीचे की पंक्ती मे आक़िल—	आक़िल

——:o:——

माई लार्ड, *

(No 29) **दोहा ।**

कमश्रीमेन्ट माथे धरो, पारस समझो (१)नाथ *
पारस लोहे को करे, संगहि कञ्चन साथ *
मेरे मत मे जानिये, सबको है उपकार *
भारत मे बलदेव को, रहे नाम आगार *

शेर ।

जिस आप का काम किया सब मिलाई मेरी गज़ट भई *
धन्यवाद प्रभु लाट को भाई, अनुग्रह जगमे प्रगट भई *

(*) लार्ड,—मालिक, ओहदा, अर्थात् श्रीश्रीनाथजी ।

(१) नाथ,—मालिक ।

नसर ।

मिले अब मुझे ज़िन्दगी की बसर *
सुनो मेरी यारो न रखिये कसर *
जिगर में बिचारो हम दरदी असर *
जहां में है रोशन हमारी क़दर *
इनायत मरहमत अता हो नज़र *
हो जिस्से हमेशा बलदेव की गुज़र *

—०:*:०—

मुबारक बादी ।

ख़ुशी में श्रीनाथ को है मुबारक *
मेरी सब नसीबों को सो है मुबारक *
रहै नाम दुनिया में रोशन मुबारक *
इबादत खोदा की में हर है मुबारक *
अदल से यह पैदा जहां में मुबारक *
ख़ुशी में मिले इक ख़ुशी की मुबारक *
जो दुश्मन मेरे उनको ज़िल्लत मुबारक *
हो जिस्से ख़ुशी दिलको मेरे मुबारक *
क्या ख़ूब छाई है जगमें मुबारक *
यह शादी मुबारक वह शादी मुबारक *
हमेशा रहै नाम होवे मुबारक *
खोदा की इबादत से मोबिद मुबारक *
बलदेव प्रसाद को क्या है मुबारक *
मैहरोब बर्मन को जग में मुबारक *

—०:*:०—

एक छोटा सा किस्सा, सहस्रासुर रजपूत हारेका दृष्टान्त क्या है ?

याने किसी ज़माने में, कोई एक बरेठा, अर्थात् धोबी था, ओउसके पास एक गदहा याने बेचारा मदन खचर था, सो वह काम क्या करता था, यानें कपड़ा, पक्कार अथवा कहीका बोझा

लादा करता था, सो यह बरैठा. इसको अपने पुत्रके समान में इसको जानता था, और बड़े प्यारके साथ इसको सम्रासुर रजपूत पुकारता था, सो यह अब सम्रासुर रजपूत याने मौत पाकर अपनी क़ज़ा से अब मर गया, तब बाद अज़ां चूंकि इस जानवर का मालिक एक बहुत ग़मनाक होकर एक हज्जामके पास गया, और उस हज्जाम से कहा कि, तू मेरी हजामत बनादे, तब बाद इसके उस हज्जामने उस बरैठे से, यह बात दरियाफ़त् किया, सो क्या? याने यह बात आज नई क्यों? तब बाद इसके उस बरैठेने यह उत्तर दिया कि क्या तुमने यह बात सुना नहीं? याने सम्रासुर मर गया, तब बाद इसके उस हज्जामने यह उत्तर दिया कि प्रथम मैं अपनी हजामत बनवाउंगा, फिर बाद इसके मैं, तुम्हारी बनाउंगा, क्यों कि सम्रासुर का प्रथम शोक मैं मनाउंगा, ख़ैर बाद इसके वह हज्जामने क्या किया, याने अपनी और उसकी हजामत बनाकर अब फ़ारिग़ हुआ, तब बाद इसके वह हुज्जाम अपनी मोछ मुडाये हुये, एक बनिये बक़ाल की दूकान पर सौदा लेनेको गया, तब बाद इसके, उस बक़ालने, उस हज्जामसे पुछा कि तुमने मोछ क्यों मुड़ाया? तब बाद इसके उस हज्जामने यह उत्तर दिया, सो क्या? याने तुमने यह बात किसी शख़्ससे सुना नहीं, तब उस मनुष्य बनियेंने न यह उत्तर देकर जवाब दिया कि, मैंने कुछ नहीं सुना, तब बाद इसके वह हज्जाम शोकातुर होकर एक बड़े ग़मगीन के साथ में यह बात धीरे से आह भरी उच्चारण किया, सो क्या? याने सम्रासुर मर गया, तब उस बक़ालने उस हज्जाम से कहा कि तू भी मेरी मोछ मूंड दे, फिर बाद इसके वह बक़ाल अपनी ख़ास हजामत बनवाकर अपनी दूकान पर बैठा, फिर बाद इसके एक कानिस्टिबिल पुलिस का आदमी, उस बनिये के दूकान पर सौदा लेने को गया, तब बाद इसके उस पुलिस के आदमीने उस बक़ालसे यह बात दरियाफ़्त किया, सो क्या? याने तुमने मोछ क्यों मुड़ाया? तब बाद इसके उस बनियेंने यह उत्तर दिया, क्या तुमने यह सुना नहीं? याने सम्रासुर मर गया, तब उस पुलिस के आदमीने कहा कि मैं भी अपनी मोछ मुड़ा डालूं, फिर बाद इसके वह चपरासी पुलिसका अपनी मोछ मुड़ाकर कोतवाली में गया फिर बाद अज़ां इसके, कोतवाल साहिबने उस कानिस्टिबिल से पूछा कि तुमने मोछ क्यों मुड़ाया है, तब बाद इसके उस मातहत चपरासीने रपोर्ट देकर यह जवाब दिया कि हुजूर सम्रासुर मर गया, तब बाद इसके कोतवाल साहिबने कहा कि मैंभी अपनी डाढ़ी मोछ मुड़ा डालूं, फिर बाद इसके, कोतवाल साहिब अपनी डाढ़ी मोछ मुड़ा कर वज़ीर आज़मके दरबार में हाज़िर हुये, तब बाद इसके वज़ीर आज़मने कोतवाल साहिब को देख कर यह जवाब तलब किया, कि तुमने मोछ डाढ़ी क्यों मुड़वाया है? तब बाद इसके कोतवाल साहिबने यह उत्तर दियाकि हुज़ूर सम्रासुर मर गया, फिर बाद इसके वज़ीर आज़मने एक हज्जाम को बुलाकर अपनी डाढ़ी मोछ सब मुड़ाकर

बादशाह सलामत के दरबार में अपनी तशरीफ लेगये, फिर बाद इसके वज़ीर आज़म से, यह जवाब तलब फरमाया, सो क्या? याने तुमने डाढी मोछ क्यों मुडाया, फिर बाद इसके वज़ीर आज़मने यह जवाब दिया कि हुज़ूर सङ्कासुर रईस आज़म मर गया, फिर बाद इसके बादशाह भी ग़म से भरे हुये डाढी मोछ मुडा कर अपने खास महल शरीफमे गये, फिर बाद इसके बेगमसाहिबाहने, यह दरियाफ्त फरमाया, कि आपने डाढी मोछ मुडाकर इसकदर ग़मनाक क्यों कर हुये हैं? तब बाद इसके बादशाहने ग़म की भरी हुई आह खींचकर यह जवाब दिया, सो क्या? याने सङ्कासुर रईस आज़म मर गया, फिर बाद इसके। बीबी बेगम साहिबह अकिलमन्दने बादशाह सलामतसे यह दरियाफ्त फरमाया, सो क्या? याने सङ्कासुर रईस आज़म कौन था?

तब बाद इस्के बादशाहने यह उत्तर दिया कि मुझे मालुम नहीं कि वह कौन था, फिर बाद इस्के बादशाहने वज़ीर आज़म से दरियाफ्त् फरमाया, तब वज़ीर आज़मने यह जवाब दिया कि हुज़ूर मुझे भी मुतलक मालुम नहीं, कि सङ्कासुर कौन था, फिर बाद इस्के वज़ीर आज़मने दरजे बदरजे से सभों से तहक़ीक़ात करके दरियाफ्त फरमाया, याने फिर बाद इस्के अलक़िस्सा यह साबित हुआ कि सङ्कासुर रईस आज़म नहीं था, बल्की एक धोबी का लदुवा गदहा था, फिर बाद इस्के वज़ीर आज़मने यह बादशाह सलामत से रपोर्ट किया, सो क्या? याने खता माफ् फरमाइये, सङ्कासुर रईस आज़म नहीं था, तब बाद इसके बादशाहने पूछा कि वह कौन था? तब वज़ीरने जवाब फरमाया, कि हुज़ूर एक धोबीका लदुवा ख़चर पशु सङ्कासुर था, तब बाद इसके बादशाहने उस धोबी बरेठे को तलब फरमाया, फिर बाद इस्के जब वह बरेठा हाज़िर हुआ, तब वह धोबी हुज़ूर के साम्हने बहुत रोया, कि हुज़ूर सङ्कासुर मोर मरगैल, तब बाद इसके बादशाह सलामतने रहम खाकर पूछा, सो क्या? याने तुमने इलाज उसका क्या कुछ नहीं किया? तब उस बरेठेने जवाब दिया

कि हुज़ूर मैंने ओकार इलाज दवा बहुत कीली, तब बादशाहने कहा कि तुमने किस का इलाज किया. जो वह मर गया, तब फिर बाद इसके उस बरठेने यह उत्तर दिया कि हुज़ूर एक बड़े नामी गामी हकीम का इलाज कीली, तब बाद इसके बादशाह ने यह जवाब दिया कि वह हकीम साहिब का नाम क्या था, फिर बाद इसके उस बरठेने यह उत्तर दिया कि हुज़ूर हकीम साहिब का नाम यह रहल, याने हम चुंनी दीगरनेस्त साहिब, फिर बाद इसके हम चुनी दीगरनेस्त साहिब को बादशाह सलामत ने तलब फरमाया, और यह बाद इसके जवाब तलब किया, सो क्या ? याने तुम किस मर्ज़ की दवा हो ? और तुमने कैसा इलाज किया कि, सङ्गासुर रजपूत खच्चर लद्दू इस बरठे का मर गया, फिर बाद इसके हम चुंनी दीगरनेस्तने यह जवाब दिया, कि मैंने उसको बहुत अच्छा परचा इलाज का दिया था, मगर अफसोस है, कि इस नेकेबक़्त ने अपने खच्चर का इलाज किया नहीं, फिर बाद इसके हकीम साहिब से उसके इलाज का परचा तलब करके वज़ीर आज़म को यह हुकुम दिया कि यह पारचा इलाज का मेरे रूह बरूह पढ़ो, फिर बाद इसके वह परचा इलाज का बादशाह को सुनाया गया, सो क्या ? याने उस पारचा मे यह मिसरा लिखा हुआ था—.

पुरा चीगा प्रमाणा ।

नसर

मुलेठी मुनक्का बफ़्तमी ससोरे ।
मिला करके मिसरीमें सब थोड़े थोड़े ॥
पियो ओस देकरके यह सुबह् शाम ।
कहां की थी खांसी कहां का ओकाम ॥

फिर बाद इसके बादशाहने हकीम साहिब से जवाब तलब किया, कि क्या उसको खांसी व ज़ोक़ाम था, तब हकीम साहिबने जवाब दिया कि हां हज़ूर, उसको अकि़लके अजीरणसे रोग खांसी व ज़ोक़ाम पैदा हुआ था, तब बादशाह ने उस बरेठे से जवाब तलब किया कि तुमने इस परचे के बमोजिब इलाज किया या नहीं किया ? फिर बाद इसके उस बरेठेने यह उत्तर दिया कि हज़ूर इस दवाके पारचेसे हमार रजपूत सङ्गामुर मरगैल, फिर बाद इसके बादशाह ख़फ़ा होकर यह कहा कि अच्छा हुआ कि वह बरचोद मर गया, चुप रहो ख़ामोश रहो, हम मुक़द्दमा दायर करके इसका फैसला करेंगे, फिर बाद इसके बादशाह सलामत ने, इस चंगो दीगरनेस्त हकीम साहिब पर पांच हज़ार ठणठनाती हुई गिन्नियां नक़द जुरबाना किया, फिर बाद इसके हकीम साहिब ने उज़ुर पेश किया, मगर बादशाह नै उज़रदारी ख़ारीज कर दिया। तब बाद इसके हकीम साहिबने पांच हज़ार रुपया दाख़िल सरकार में करके यह नोटिस संसार में दिया, सो क्या ? याने, ख़ोदा किस को क्या न दे ? याने हां में हां मिलाने वालेका मुन्सफी का बाज़ार,—

श्रीकाशि निवासी, बलदेवप्रसाद, मेहरोत्र चढ़ाई घरस्थ, वर्म्मणा: श्री श्रीनाथ जीकी विनय ध्यान क्रत: ।

मासिक नाव्यपत्र प्रयाग राजके ता० १ अक्टूबर सन १८०१ ई० को यह लेख मुद्रित हो चुका है, सो सब महाशयोंको पुनि पुनर्वार यह लेख संसार में प्रसिद्ध करता हूं, देखलाने को प्रमाण के साथ।



No 30) **ग़ज़ल ।**

श्रीसांवलिया मई सावला मुकुन्दलाल है*
घुंघुर वाले बाल सुन्दर बाँके लाल है*
शीश मुकुट मोर मोहन तिलक भाल है*
कानन कुण्डल शोभित मणि हीरा लाल है*
गले में विराजमान अनमोल माल है*
हाथ में बंशी को लिये नन्दलाल है*
नाचत गावत आवत नित नई चाल है*
पीताम्बर की कछनी काछे कृष्ण बाल है*
रसीली बांकी चितवन मोहित कमाल है*
चरण कमल की झांकी तो खूबै जमाल है*
घन घोर घटा अङ्ग की नीलम मिसाल है*
भक्तों को दान देता है भक्ती विशाल है*
हरवक़् कृष्ण जी के चरण में ख़याल है*
बलदेव काशी बासी दरश से निहाल है*

खल परिचय उपदेश ।

· दोहा ।

दैत्यन सम्बो जानिये, खल कुशील परमान ।
कह बलदेव सुशीलता, धरम मूल की खान ॥

प्रथमहिं श्रीगणेश मनाऊं । खल समाज की कथा सुनाऊं ॥
अधम खलनको लाज न होई,। खलकुल की अनीति कह सोई ॥

खल समाज का अधरम खेला। रण्डीबाजी का नित मेला॥
खल देखहिं काहू की बिपती। हिय कठोर से होवहिं कुमती॥
खल समूह के जितने भ्राता। असुर समान होत सब बाता॥
खल के बचन कुठार समाना। मुख से बोल भयङ्कर नाना॥
खल समाज की यह प्रभुताई। अपने स्वारथ करहिं मिताई॥
होहिं महाजन धनहिं चोराई। ये नहिं जानहिं पीर पराई॥
सुधहु पाय खल जन बौराई। पर उपकार होइ नहिं राई॥
लिखत लेखनी थकित बिचारी। खल नहिं होति पर उपकारी॥
बुधि भ्रष्ट सब खल जन केरी। सत्य बानि सुनु सज्जन मेरी॥
जितने हाकिम सब संसारा। बिनय करत हौं बारम्बारा॥
जितने राजा हैं गुणवारे। करौ प्रणाम अनेक प्रकारे॥
मैं शुभचिन्तक यह जग माहीं। मिटै दोष गुण होय सदाहीं॥

दोहा।

मैं चाहत सब को भलो अनहित चाह न होय।
शुभचिन्तक बलदेवको, * बुरा न चेतहि कोय॥
निज माता के चरण मो, जो नर भक्ति अपार।
हित बानो बलदेवको मोहै मित्र हमार॥
कलियुग में लखिये सदा, अज्ञानिन की खानि।
भारत हितु बलदेवको, जानै सकल जहांन॥
शुभचिन्तक बलदेव यह, बर्म्मन कुल सर नाम।
बिश्वनाथ काशी पुरी, जहँ मेरो है धाम॥
मेहरोत्र कुल बिदित है, सेवत प्राग निवास।
खत्रि बंश बलदेव यह, मल्ल अढ़ाई ख्वास॥

* मैं किसीका दिलसे बुरा नहीं चाहता हूं, फिर इलाहाबाद और कलकत्ते की ख्वाम सभापतिने हमारी हतक इज्जत क्यों किया?

महाशयो !

और अब यह सुनते हैं कि, इस हिन्दूस्थान का पुनीत बादी फूट फल सब जगह जा बजा हर एक टापुवों के स्थानों में, सौदागरी के द्वारों से पहुंच गया है, सो क्या ? याने वहां यह फल नहीं पैदा होता था, सो बहुत अच्छा हुवा कि यहां का प्रसाद बादी फूट फल हर एक टापुवोंमें जा पहुंचा है, और जा बजा फैल गया है, सो अब ख़ास कर लोग हिन्दूस्थान के फूट बादी फल को याने पहुंच जाने से, बख़ूबी स्वाद और लज़त के साथमें खा रहे हैं, वाह ! वाह ! ! वाह ! ! ! क्या लज्जतदार हमारे इस हिन्दूस्थान का बादी फूट फलकी तारीफ चारों तरफ से बज़रिये बिलायती टेली याफिकों के द्वारों से सुनाई देरहा है।

इस पुस्तक के १४ पृष्ठ में जो गौके विषय में हमारा व्याख्यान हुवा है, सो जिन महाशयों को इस विषय में, बख़ूबी निर्णय करना होय, (सो यह दो * पुस्तकें,) मुरादाबाद के छापे खाने से, याने इन्द्रमणि स्वर्ग निवासी जीके शिष्य पण्डित श्रीमान् जगन्नाथ जीके द्वारासे मगालेवें,—

प्रथम पुस्तक—मोहम्मद सर जीवन चरित्र । दाम ॥)

द्वितीय पुस्तक—इन्द्रवज्र तर्जुमा याने क़ुरान शरीफ । दाम १॥)

Errata.

अशुद्ध	शुद्ध
पृष्ठ ५७ की १० पङ्क्ती के बाद (No 28) की छिटै पंक्ती में, यों तो दुनिया में पेड़ लाखों हैं दौलतवाले,	यों तो दुनियांमें पड़े लाखों हैं दौलतवाले
पृष्ठ ५९ के चन्दे के नीचे मीज़ान के दो पंक्ती के नीचे,	
श्रीमान् बाबू सरदारमल जैसराजजी चोयवाल से पाया,	१, श्रीमान् बाबू सरदारमल जैसराजजी चोथवाल से पाया,

---

*सो यह दोनों पुस्तकें देखने के क़ाबिल हैं।

अशुद्ध	शुद्ध
पृष्ठ ५९ की चन्दे की मीज़ान की ३ पङ्क्ती में कालीगोदाम अफ़ीम का चौरस्ता	काली गोदाम अफ़ीम का चौरस्ता
(No 15)	(No 12)
पृष्ठ ६३ की १४।१५ पंक्तीमें, ग़मगीन कोके	ग़मगीनको,
और पङ्क्ती २८ में साहिबवें,	साहिबने,

ता० २० फरवरी सन १९०४ ई० को, भारतमित्र ने अपने एक क्रोडपत्र में, श्रीरामायण तुलसीकृत की एक चित्र उस समय का याने जिस समय में, श्री काग भशुन्ड जीने, गरुड़. और कौवों, और बकुलों इत्यादिकों को सम्वाद सुनाया था, सो उस समय का एक फोटो संसार में, मुद्रित करके अपने सप्ताहिक पत्रके द्वारों से यह प्रसिद्ध प्रमाण दिखलाया है, सो क्या ? याने आपके बारीकी कलाका तात्पर्य यह है, कि किसी समय में काग भशुन्ड जीने सब पक्षियों को उपदेश के द्वारा से सम्वाद किया था, सो इस कलिकाल में, बलदेवप्रसाद मेहरोत्र २॥ घरने याने बकुलों और कौवो को इस वरतमान समय में यह उपदेश किया है, सो क्या ? याने ताक् धिनाधिन्ता,—

और यह सुनते हैं कि जिन जिन वैष्णव के कटरे में, जलतरोई फलिहार के वास्ते बिकती है, सो वह लोग अपनी यह सफाई देखलाते हैं, सो क्या ? याने वह आमदनी खैरात करदी जाती है, सो यह बात बहुत ठीक है, याने इस आमदनी को अपने मतलब में, किसी कार्य्यके वास्ते स्वीकार तो किया, याने एक छोटा सा दृष्टान्त यह संसार में विदित है, सो क्या ? याने गुड़ खाय और गुलगुले का परहेज़ करे, से ग़ब्ब यह कहा लिखा हुआ है, याने सुकृत का पैसे दान पुण्य अथवा खैरात किया जाता है, न कि पाषण्ड की आमदनि वो कसाब.के हांगसे होना चाहिये।

और मैने इस अधमासुर कलयुग का इस संसार में मुहं काला और बतीसो दांत खट्टा कर दिया, और याने ज़बान को निगोड़े को चटपटो कड़्वे के साथ में ,, पटपटानेवालो कर दिया, सो

किस तरकीब से ? याने मिरचा मक्खीय रूपी कड़ुवाश्या करके, और सच्चाई रूपी अमली की चटनी की खटाई के हाथों से याने यह किया, और मैंने इस कलिकाल कमबख़्त सियावक़्ती अफलाक गरदिश के जमाने को, अपने सबुर का इलाज इसजिन्दगी बसरी सामानोमें महफूसका बख़ूबी इस कलकत्ते में किया,—

चूंकि क़ब्ल इसके कायस्थ लोग शराब पीते थे, सो इलाहाबाद के बाज़ बाज़ कायस्थ लोगोंने इसको ख़राब समझ करके बिलकुल तर्क कर दिया है, सो अब बाज़ बाज़ खत्री अमीर लोग सौक़िया कायस्थ लोगों के मेल जोल के वजह से, जो यह कौम कभी ख़वाब अथवा स्वप्न में भी कभी शराब नहीं पीती थी, सो इस कौमके बाज़ बाज़ लोग कस व न.कस खुलासा पीने लगे हैं, क्योंकि डरतो किसी का इस कौमके लोगों को रहा नहीं है, इस सबब से अब लोग मन मानी घरजानी बात करने लगे हैं, इस बात को मैंने अपने आंखों से ख़ुद देखा, और कानों से इलाहाबाद मे ख़ास करके सुना है, याने आंयं बांयं सांय बकने हुवे पाया है, मैं जानता हूं कि इस बात को बहुतेरे प्रयाग निवासी लोग खुलासा जानते हैं, हमारी अनुशासन यह है, सो क्या ? याने हमारी बिरादरी ने शराब का पीना बिलकुल ना जायज़ है, याने जो शख़्स शराब पीता होवे, सो वह पुरुष बिरादरी से ख़ारिज किया जावे,—

वाज़ह होकि हमारा भी कायस्थ लोगोंका और मुसलमानों लोगों का बहुत दिन तक साथ मुलाज़मी पेशों में रहा है, एक छोटा सा प्रमाण पुराचीन किसी ज़माने का दोहा यह है, सो क्या ? याने,—

दोहा ।

जो रहीम उत्तम प्रकृत, का कर सकै कुसङ्ग ।
मलिया गिर विष व्यापै नहीं, लपटे रहत भुजङ्ग ॥

मैं केवल श्री शिवजी की बूटी यानें भङ्ग कभी कभी दोस्तों के वजह से बाज़ वक़्त इत्तफ़ाक़ पड़ जाने से पी लेता हूं, वरना हमेशा मामूली नशा नहीं,—

एक छोटासा दृष्टान्त कहानी के द्वारासे व्याख्यान क्या है ?

यानें किसी समय में मैंने एक कहानी किसी की ज़बानी सुनाया सो क्या ? यानें जब श्रीभारतेश्वरीजी स्वर्ग वासिनीजी मिरत लोक में थीं, तब किसी समय मे लन्डन टापु के जंगल मे हवा खाने को निकल गईं, सो महराणीजीने क्या देखा ? यानें एक लकड़ीहारा सिर पर बोझ रखे हुवे दूरदराज़ से चला आता था, फिर बाद इसके वह अपना बोझ लकड़ी का सिर पर से उतार करके सुस्ता रहाथा, सो श्रीदयालनीजीने उस लकड़िहारेकी तरफ कृपा कटाक्ष से देखा, और उससे कहा कि तू अपने लकडी का बोझ तू मेरी गाड़ी पर रख दे, सो श्री भारतेश्वरीजीने, उस लकड़िहारे का बोझ अपने गाड़ी पर रखा लिया, और उस बेचारे ग़रीब को गाडी पर बैठा लिया, यानें जब वह लकड़िहारे का झोपड़ी के निकट आगया, तब श्रीभारतेश्वरीजीने, उस लकड़िहारे का बोझ उसके झोपड़ी के करीब उतरवा दिया, और श्री भारतेश्वरीजीने उस लकड़िहारे के उपर दया करके उसके ग़रीबी को दूर कर दिया, सो हे भाईयो मैंने, बनारस—ईलाहाबाद—कानपुर—इत्यादिक शहरों में क्या देखा ? जहां किसी रईसने, मिनुसुपुल्टी का ओहदा अनरेरी मजिष्ट्रेटी का पाया, सो बाज़र लोगों के पैर ज़मीन पर सीधे नहीं पड़ते हैं, और मनमानी घर जानी क्या करते हैं, यानें अक्सर ग़रीबों को सताया करते हैं, और अक्सर मैंने पुलिस के ओहदेदारों को जो लोग कि हिन्दुस्थानी शरीफ़ खान्दानी हैं, सो वह लोग अशराफ़ियत से रहते हैं, वरना जो लोग कि शरीफ़ नहीं हैं, सो वह लोग बहुत अफ़खातूनी के साथ मे, दुन्द मचाते हैं, फिर बाद मैंने अक्सर कई रवाज मैं क्या देखा, यानें जिस पुलिस के आदमीने अन्धेर मचाया, फिर उसका नतीजा क्या हुआ ? यानें बलन्द सितारे से अवश्य सितारा हो जाता है, सो हे भाईयो इस दृष्टान्त के रूप से मेरा तात्पर्य यह है, कि जो लोग शरीफ़ खान्दानी हैं, सो वह लोग

अपनी असराफियत को कभी नहीं छोड़ते हैं, यानें इस संसार मे दो प्रकृत के पुरुष पैदा हैं, यानें एक उत्तम सुर प्रकृत और दूसरे असुर नकिष्ट प्रकृत के होते हैं, यानें जो श्रेष्ट धर्मात्मा पुरुष होते हैं, सो जो मनुष्य दरिया मे डूबता है, सो उस्के प्राण को बचा लेते हैं, और दुष्ट जीव पुरुष कौन हैं ? यानें जो दरियाह्‌ मे न डूबता होय, सो उस पुरुष को जबरन दुष्टता के कारण से पकड़ धकड़, पकड़ करके डूबो देते हैं, क्यों कि उनके चित की यही प्रतिज्ञा है, जैसे कि एक छोटा सा दृष्टान्त यह है, कि जब मेरे नाना यानें लाला सदासुख टन्डन २॥ घर जी स्वर्ग निवासी जब इस मिरतलोक में थे, तब मैंने उनकी ज़ुबानी यह बात सुना था, सो क्या ? यानें कोई खत्री इलाहाबाद मे (M. Dass.) थे, सो वह शुरू अङ्गरेजी अमलदारी गदर के ज़माने मे, कुसूर या बिला कसूर से पकड़े गये, सो सरकारने उनको बागी समझ करके यानें फांसी का हुकुम दिया था, बाद इस्के दारागंज इलाहाबाद के रईस आज़म धर्मात्मा बाबू पीरूमलजी साहिब के पुत्र राधारमनजी साहिबने यानें उनको फांसीसे बचाया था, सो यह जस अब तक बाज २ लोग यदि जो पुराने आदमी होंगे, सो मैं यह आशा करता हूं, कि वह लोग बखूबी जानते होंगे, सो हे भाईयो ऐसे रईसो मे से हजार मे दो चार निकलेंगे, वरना बाकी इस संसार मे ऐसे पर उपकारी धर्मात्मा लोग उठ गये, सो हे भाईयो। एक रईस वह थे, जो जिन्होंने (M. Dass) के प्राण की रक्षा किया था, अब एक रईस वह लोग बेआब हैं, जो कि गौ बिधवायें अनाथ नावालिगान के धर्म और प्राणके रक्षा के हेतु का, यानें निज मेरे उपदेशों का निरादर करके मेरे आत्माको सताया, और बाद इस्के हमारी हतक इज्जत किया, जिन बेआब लोगोंने मेरे निज कृत मात पक्ष उपदेश का अपमान करके मेरा निरादर किया, सो वह लोग बेआब नहीं हैं, बल्कि वह लोग रुपये से मिथ्या पाखण्ड संसार मे सबको दिखलानेवाले हैं, यानें मैं भी एक धर्मव्रती श्री १०८ बेटीजी महराणी श्रीकाशीजीके श्रीगोपाल लालजीके मन्दिरके शिष्य बिधवाका एकलौता पुत्र यानें निज माताका चरण सेवक हूं, सो इलाहाबाद और कलकत्तेकी खत्री सभापतिने, यानें उस्के चरण की सेवा मे, मेरा विघ्न क्यों डाला ? सो मैं यानें दो बरसमें निज माताकी सेवा से महरूम हूं, मेरे पिता की दो शादी हुई थी, यानें पहीली शादी लाला लालबिहारी लालजी पक्के ४ घर खन्ना एकाउन्टेन्ट पिन्सिन याफ्‌तह्‌ इलाहाबाद बङ्कके सगी बहिन्दोई लाला शीतलप्रसाद टन्डन २॥ घर स्वर्ग निवासी थे, सो इनकी सगी बहिन मेरी प्रथम माता थीं, सो इनके भी एक एकलौता पुत्र था, सो यह मेरे स्वर्गनिवासी भाईके लड़केवाले श्रीकाशीजीमें रहते हैं, सो मेरे भतिजे का नाम चि० सूर्ज्‌ प्रसाद है, सो वह बनारस के बङ्क आफ बङ्गाल मे काम करता है, सुना है कि उस्के एक पुत्र पैदा हुआ है, सो ईश्वर उसको चीरंजीव रखे, और मेरे पिता की

दूसरी शादी लाला सदासुख टण्डन र॥ घर शानी स्वर्ग निवासी की पुत्री से हुई थी, जिसका मैं पुत्र उपदेशक संसार मे प्रसिद्ध हूं, जब मैं एक साल भर का हुआ था, तब याने मेरे पिताजी का स्वर्ग निवास हुआ था, और मेरे खास माताजी के सगे भाईके लडकी का लडका, जनाब राय लाला शिव प्रसादजी बहादुर रईश कानपुर के सगे भाई की सगी पोती व्याहा है, और जनाब मौसूफ राय साहिब बहादुर की सगी भतीजी मेरे सगे ताऊ के लडके को व्याही थी, और हमारे जो प्रथम माताजीके पुत्र मुस्तफ्का थी, और खास मेरी याने हम दोनों भाई की एक घर मे शादी हुई है, याने लक्षीमल बिन्द्रावन कपूर र॥ घर दो हकीकी भाई मिरजापुर के निवासी थे, सो लक्षीमल की सगी पोती मेरी प्रथम माताजी के पुत्र को व्याही है, और लाला लक्षीमलके सगे भाई लाला बिन्द्रावन कपूर र॥ घरकी पोती मुझे व्याही है, और इनका एक पोता याने मेरे सगे चचिया ससुर का लडका, मेरा साला, याने राय लाला रामचरन दास बहादुर रईश कोटाधीस इलाहाबाद खत्री सभापतिके सगे बहिन्दोईके सगे दामाद की बहिनको व्याहा है, हा हे भाईयो, मेरे पिता को २५॥ वर्ष के निकट होता है, याने स्वर्ग प्राप्त हुवे, सो जब से मेरी माताजीने अपने धर्म की रक्षा करके मुझे पाला है, याने २५ वर्ष से उसने यह अपने धर्मकी रक्षा किया है, सो क्या ? याने ३ हफ्ता अन्न को त्याग करके फल फूल रामदाना फलिहार इत्यादिकोका भोजनकरके अपनी बसर कियाहै, और एक हफ्ता अन्न भोजन संक्षेप करके अपनी बसर किया है, और वह कलके पानीमे परहेज रखती थी, सो मे कुवे का पानी अपने हाथ से भर करके लाता था, तब वह पानी पवित्र को अपने खर्च मे लाती थी, सो मेरी वृद्ध माताजीके कोमल आत्माको क्या सताया ? क्योंकि इलाहाबादकी जितनी बिधवाये कोटाधीश की जो हैं, सो उनलोगो से वह अपना चरण पूजानेवाली है, सो दो बरस से उसके चरण की सेवा से मै महरूम होकर, याने इस बेसरोसामानीमे महरूम क्यो किया गया ? और हमारे उपकार मे इलाहाबाद की खत्री सभापति और कलकत्ते की खत्री सभापतिने क्या बाधा डाला ? और उसके चरण की सेवा मे, क्यों हमारा बिघ्न डाला ? और मैं इस कदर माननीय हूं, सो मेरी बेइज्जतीके साथ मे, मेरी हतक इज्जत क्यो किया ? याने जिस बैष्णव द्रव्याधीश खत्रीने हमारे मानपत्र उपदेश का अपमान करके हमारा निरादर किया है, सो सो वह बैष्णवलोग खत्री नहीं है बल्कि वह संसार मे बडे भारी पाखण्ड को रुपये के बल से फैलानेवाले हैं, और वह बाल बिधवाओके पुनर बिवाह के बारे मे अनय करनेवाले हैं,

सो हे भाइयो ! परमेश्वर से सब को डरना चाहिये, क्योंकि इस सृष्टिका रचनेवाला कोई परमात्मा सर्वज्ञ व्यापक ब्रह्मरूप निरङ्कार और आकार है, याने जो लोग निरङ्कार से देखते हैं, उसके लिये वह निरङ्कार है, और जो लोग आकार से देखते हैं, सो वह उनके ज्ञान बुद्धीके अनुसार वह आकार है, याने जैसे कि पुरुष खेलौना को बनाता है, और फिर वह तोड़ फोड़ डालता है, वैसेही परमेश्वर को जानना चाहिये, कि हम लोग भी देहधारी उस परमात्मा ईश्वर के सम्पूर्ण खेलौने के मानिन्द हैं, याने जब तक उसकी इच्छा है, तब तक वह देहधारी पुरुष को इस मिरत लोक संसार में खेलता है, फिर बाद इसके खाक में मिला देता है, सो हे भाइयो ! इस मिरत लोकमें बहुत अहङ्कार से उबलना और तपना अच्छा नहीं है, याने अन्तमें बहुतसा उबलना और तपना आखिरस्त में मिट जाता है, जैसे याने हवाके झपटे से चिराग़ गुल हो जाता है, और याने पानीका बुल्ला मिट जाती है।

(No. 31) पद ।

प्रमाण ज्योतिष का हम सब को सुनाते हैं।
चमत्कार चिन्तामणि से फलको जनाते हैं॥
औऋषि मुनी का वाक्य जगमें लखाते हैं।
संसार को ईश्वर से भलाई मनाते हैं॥
क्यों कर नहीं हैं मानते ऋषी मुनी को लोग।
ईमान धरम छोड़के क्या करते सुख भोग॥

* याने चश्म खोरा बैठा हो चौथे मखान मे।
वह अधिक † माननी पुरुष पैदा जहांन मे॥
भचण को किया मैंने क्याही खूब निरादर।
संसार में धिक्कार है धिक्कार बिरादर॥
नीत को मानैं नहीं सुनौं तो गौर कर।
अनीत को क्या मानते यों अहङ्कार कर॥
पश्चिम उत्तर अवध के प्रभु लाटने दिया।
चार चिट्ठी ꣸ आनर को मुझे अता किया॥
बङ्गाल के प्रभु लाट ने मेरी इज्जत किया।
क्या क्या खूब लोगों ने कपट हसद किया॥
‡ काम्पलीमेण्ट प्रभु मेरे लार्ड ने दिया।
भगवतने मेरी भक्ती को जगमें विदित दिया॥
सब नातेदार न मानते धरम को त्यागके।
बलदेव प्रसाद मेहरोत्र को गरीब जानके॥

---

(१) नवग्रह सितारों के नाम फुट नोट फारसी और हिन्दी में यह हैं १ शम्स अर्थात् सूर्य्य, २ कमर अर्थात् इन्दु, ३ मीरिख अर्थात् मङ्गल, ४ अतारिद अर्थात् बुध, ५ मुश्तरी अर्थात् गुरु, ६ जोहराह अथवा चश्मखोरा अथात् शुक्र, ७ जोहल अर्थात् सनीचर, ८ रास अर्थात् राहु ९ देब अर्थात् केतु,—

(No 32) **दोहा।**

जेतनी निन्दा हो सके, करिये मेरी भाय।
बलदेव को उपदेश हित, चुन चुन बैरी खाय॥

(*) प्रमाण लग्न चन्द्रिका, पृष्ठ ८१ श्लोकार्थ (८२) पुनि चन्द्रमा की दशाके अन्तर्गत शुक्र की दशा अष्टोत्तरी के हिसाब से (३५ अङ्कन पैंतिस) महींने होती है, और विंशोत्तरी के हिसाब से महादश २० महींनेकी होती है, परन्तु फलित फल दोनो का एक समान है, सो क्या ? याने तिस में उत्तम स्त्रीयों से संयोग, सुन्दर कन्या को उत्पत्ति * और धर्म्मयुक्त धनकी प्राप्ति होती है, (८२) इति, सो हे भाइयो ! मेरे जन्म कुण्डलीके तुला लग्न के चतुर्थस्थान का शुक्र याने सप्तमस्थान के चन्द्रमा के अर्थ चन्द्र मध्यंतर दशा क्रम मे, विंशोत्तरी के हिसाब से, ,याने सम्बत १८६० के कन्या के प्रथम अंश ५० कला और ३८ विकला मे, प्रवेश हुआ, इस मेरी चि० कन्या श्रीभगवतीजी का प्रथम जन्म आश्विन शुक्ल पक्ष १२ को मङ्गल के दिन सम्वत् १८५५ मे हुआ था, सो पुनर जन्म यह हुआ, याने कैसे ? ता० 25-8-3 ई० को मैंने यह सुना कि हमारी श्रीभगवती चि० कन्या मकान के तीन खण्डके ऊपर से, याने दुष्टों की दुष्टताके कारण से, ऊपर से नीचे की सड़क की श्रीठाकुरकी गल्लीको गल्लीके अन्दर कलकत्ते मे गिर पड़ी, सो श्रीठाकुरजीने उस्के प्राणको रक्षा बखूबी किया, लोगोंने मुझसे कहा कि तुम देख आव, सो मै देखने को इस वजह से नहीं गया, कि उस्का दुख देख करके मुझे अत्यन्त दुख पैदा होगा, और दूसरे इस कारण से देखने को नहीं गया, याने हमारे ससुर तीन सगे भाई है, जिनको हमारी ददिया सास बुढ़िया एह नाम लेकर पुकारती है, सो क्या ? याने (No. 1) काशी प्रसाद उर्फ कल्लू (No. 2) बिश्वेश्वर प्रसाद उर्फ मल्लू (No. 3) बैजनाथ प्रसाद उर्फ उल्लू ।

पुराचीण प्रमाण यह है, सो क्या ?

शेर।

कदर कद्र को मर्द जानता है।
हुमा को कब चोगद पहिचानता है॥

—...o...—

(No. 33) दोहा।

निरबल धर्महिं जानिये, अधरम धन बलवान *
उपदेशक बलदेव को, हितकारी पहिचान *
धर्म को साया जानिये, सब को है ससुरार *
बलदेव के सरनाम जग, ससुर असुर नहिं यार *
अधरम से डरते नहीं, अन्याई नर ख़ूब *
हितबानी बलदेव की, क्या फीकी महबूब *
कलिकाल के अधरम सों, माग्यो हाथ पसार *
यदि होता कहिं धरम युग, पूजत यारो यार *
एतबारहि मिट जात हैं, जो नर धोखा देत *
हितबानी बलदेव की, करियें मनसो चेत *
न्याई को लखिये सदा, नहीं अनित सोहाय *
सरलहि मन बलदेव को, कलहि बसु होइ जाय *

—............—

और दुसरा प्रमाण पुराचीण यह है, सो क्या ? यानी खत्री पुर्ब कबहुन मित्र जब मित्र जब दगिम् दगा, सो गंवारू मसल यह संसार मे प्रसिद्ध है, सो क्या ? यानी ससुरार सुख की सार, जो रहै दिना दुइ चार, जो रहै मास पखवारा, सो बगल मे खुरपा हाथ मे खारा, सो हे भाइयो ! हमारी गति इससे बढ़ कर २१४

पहुन दुइ वर्ष चार महिने से हुई है, सो हे भाइयो! हमारे हाथ मे खुरपी क्या है? मानो नीत धरम को रक्षा करनेवाली लेखनी याने कलम है, सो (No. 1) व (No. 2) व (No. 3) का नाम क्या है? याने यथा नाम: तथा गुण: ।

जब श्री १०८ भारतेश्वरीजी मिरत लोकमे थीं तब मिनजानिब स्वर्गवासिनी जीके तरफ से प्रभु छोटे लाट साहिब पश्चिमोत्तर देशाधिकारीने मुझे चार चिट्ठी इज्जतके साथ याने (Certificate of Honour) का देकर सनमानित किया था, और श्री १०८ महोदय प्रभु सप्तम एडवर्ड भारतेश्वर कृपा सागरकी तरफ से श्री १०५ प्रभु बड़े लार्ड साहिब हिन्दने मुझे (Compliments) देकर सनमानित किया है, और प्रभु छोटे लाट साहिब बहादुर बङ्गालने मुझे होमरतवह मुबारिक बादी और शुकुरिया याने (Thank) देकर इस संसारमे सनमानित किया है, लेहाजा अब मुझे प्रभु वाइसराय जनाब आली जाह हिन्द बहादुरके दस्तफैज मुबारिक अदल से और और श्री १०३ प्रभु छोटे लाट साहिब बङ्गाल से इन दोनों महाशय महोदय के कृपा कटाक्ष के द्वारासे, मुझ देहली के दरबार के बारे मे ईनाम व इकराम बहुत जल्द मरहमत होना चाहिये, ताकि मैं अपनी माजी को हमराह लेकर श्रीजगदीश पुरीके दरशन करने को जाऊं, और अपना मनोरथ सिद्ध करके दिल जानसे दुवादूं, श्री सांवलिया जी के खत्रीभक्ता सुर कालकत्तेने मुझे एको दिन श्री सांवलिया जी का प्रसाद भोग उत्सवका उत्साह से नहीं कभी दिया है, सो हमारी भक्ती श्री सांवलिया जी की संसार में प्रसिद्ध है, सो अब यदि श्री सांवलिया जी खद प्रसाद देनेको आवेंगे, तो हम उसको भूल करके

स्वीकार नहीं करेंगे, क्योंकि जितने कटरे में मीनो को हाट है, सो उनके मन्दिर का प्रसाद भोग खाने में दोष और पराछित है, लेकिन श्री सत्यनारायण जी के मन्दिर का प्रसाद घृत पक्का यदि प्राप्त उनके भक्तों के हाथोंसे होयगा, सो मैं आशा करता हूं, कि श्रीमान राय राजा लाला शिवबक्स जी साहिब बहादुर हमारे श्री सत्यनारायण जीके प्रेम भक्तीके ऊपर हमारी पूरी तौर पर सहायता करेंगे, और प्रभु बड़े लार्ड साहब वाइसराय हिन्दसे और प्रभु छोटे लाट साहिब बङ्गाल से बहुत शीघ्र ईनाम और इकराम मुझे दिला कर कृतार्थ करेंगे।

उपदेश।

(No. 34)

गज़ल।

कलकत्ते की होली क्या पगड़ी उतार है।
गुलाब रङ्ग है नहीं कीचड़ की मार है॥
यह शास्त्र में लिखा नहीं करिये बिचार है।
फटी पुरानी जूतियों की क्याही मार है॥
करो बिचारो यारो यह हित को न प्यार है।
शरीफ लोग खेलते रङ्ग की बहार है॥
कीचड़ की मार में कभी नफा न यार है।
बलदेव प्रसाद की कही मानो बिचार है॥

इस साल होली के तेहवार मे, खूब कीचड़, और पुराना टाट मट्टी से लपेटा हुआ, और गौके चमड़े की खाल नई उतारी हुई, और राह चलते हुवे कस व नाकसकी पगड़ियां बाहियात हर एक स्थान मे फेकी और उतारी गईं।

और इस हिन्दुस्थान मे, चार तेवहार भारी होता है, यानि पहिला तेवहार ब्राह्मणोंका रक्षाबन्धन, अर्थात् राखी पुर्णमासी, और दूसरा तेवहार क्षत्रियों का दशहरा, और तीसरा तेवहार वैश्यों को देवाली, और चौथा तेवहार याने होली शुद्रों को अथवा कीचड़ और मट्टी इत्यादिकों से जानिये, याने जिनको अबीर गुलाब रङ्ग नहीं जुरता मिलता है, सो वह लोग कीचड़ और मट्टी फेंकते हैं, और पुराना फटा पापोश आमतौर पर कस व नाकस के ऊपर डालते हैं, सो हे भाइयों। पुराना जूता फटी पनहीं उठाना किसका काम है, याने चमारों का, विदित हो कि यह होली का तेवहार चारों बरण के वास्ते है, याने कुमकुम अबीर गुलाब रङ्गसे खेलने के लिये है, न कि कीचड़ और मट्टियों से है, सो हे भाइयो! इस बात का बिचार सब रईशों को करना चाहिये, और इस उपद्रव धूम को हमेशा के वास्ते रोकना चाहिये, इलाहाबाद मे मैंने यह उड़ती पुड़ती खबर सुना है, जो कोई होली मे, किसीके ऊपर कीचड़ फेकता है, सो उसको छः महीने का जेहल सरकार से होता है, मे यह खास कर नहीं जानता हूं कि यह बात कहांतक ठीक हैं।

और यह सुनते है, कि राय भजनलाल जी लोहिया साहिब बहादुर रईश हरीसन रोड कलकत्ते की कोठी (No. 90) ने देहली के दरबार के बाद, कलकत्ते के आनन्द बिषय के बारेमे, आपने कलकत्ते के परेट के स्थान मैदान मे, हजारों कङ्गालों को पक्क छत का भोजन मिठाई, लूची पूरी इत्यादिकों से भन्डार किया था, सो इस बिषय मे आपकी बहुतसी नामवरी कलकत्ते में होरही है। सो मै भी आपको इस दिलावरी पर धन्यवाद देता हूं,

हर एक बच्चों के वालिद और वालदेन को यह चाहिये कि जब तक कि बच्चा ना समझ है, सो याने नाबालिग़ बच्चों को अकेले मकान मे खेलते हुवे कभी न छोड़ना चाहिये, जब तक कि वह बच्चे ना समझ हैं, सो ना समझ बच्चों को बहुत हीफाज़त रखना फर्ज़ है, क्योंकि लापरवाही बच्चों की करने मे वह ना समझ बच्चे लोग हाथ से, बेहाथ होजाते हैं, याने सन् १८०२ ई० मे, दो लड़के ना समझ कलकत्ते मे, अपने मकान से, खेलते हुवे, एक खण्ड मकान के ऊपर से अन्दर नीचे सड़क की गल्लीमे गिरकर अकाल मौतसे प्राप्त हुवे, याने एक बच्चा ५ वर्षका कलकत्ते की मिरधर पाड़ा ष्ट्रीट मकान (No. 36) से गिरकर कज़ा किया, और दूसरा शिबूठाकुर की गल्लीमे गिरकर वफात पाया।

—............

इस क़ितैबन्दी फारसी का उल्था, इस पुस्तक की ८ पृष्ठ में (No. 14) की शेर मेरी निज खास ज़ात है, याने फारसी ज़बान मे यह है।

—............—

फारसी की क़ितैबन्दी शेर।

क़लम गोयद् कि मनशाहे जहाँनम्।
क़लम कशरा बदौलत मीरसाँनम्॥
अगर बदबख़्त बाशद मन चे: दाँनम्।
वले इकबार बरदौलत रसाँनम्॥

शब्दार्थ।

गोयद—कहता है। मन—मैं। शाह—बादशाह। जहान—संसार। कशरा—खींचनेवाला। बदौलत—संपतिसे। मीरसानम्—पहुचाता हूं मैं। बदबख़्त—सिया-

वक्ती, यानें कलयुग का ज़माना। बाशद—होवे। चे:—क्या। दानम्—जानता हूं मैं। वले—लेकिन। इकबार—एकदफे:। बरदौलत—दौलतपर। रसानम्—पहुंचाता हूं मैं।

(No 35) **उपदेश।**

दोहा।

समझिं मिताई धरम की, लखिये सबे प्रकार *
उपदेशक बलदेव की, करिये नियत बिचार *
यह उपदेश से मानिये, पर उपकार हमार *
राजनीत बलदेव की, काट सके न गँवार *

एक छोटा सा दृष्टान्त यह है, सो क्या? यानें किसी ज़माने मे एक लालाजीने अपने पीताजी के वफात के बाद अपने बखरे हिस्से मे, पन्द्रह लाख रुपये की जायदात पाया था, सो बाद वफात मौसूफ के यानें पन्द्रह लाख रुपये बखरे हिस्से की जायदात की बकाया मे बाकी सात लाख रुपया रह गया, और बाकी आठ लाख रुपया किस बारे मे सरफा हुआ? यानें उनके लडकोंने आय बाय साथ रन्डियोंके नरक की हंडियों मे खर्च कर डाला, और बाकी खाऊबीर लोगोंने लालाजी को रोज़गार व्योपार मे नकसान पहुंचाया, यानें पुराने ज़माने के सीधे साधे लालाजी छल कपट को क्या जानें, सो लालाजीने खाऊबीरों के फन्दे मे फंस करके यानें रोज़गार पेशो मे बहुत सा नक़सान दिया था, अगरचे एक लाख रुपया बिधवा फन्ड मे दिया जाता तो इस लोक मे युगायुग नाम रहता सो देखिये। एक छोटा सा प्रमाण बरतमान समय का यह है, सो क्या? यानें लाला मनोहर दासजीने एक लाख रुपया बरुवा घाट पोख्तह् बनवाने के वास्ते दिया था, सो उनके साहिबज़ादह् इलाहाबाद के रानी के मन्डी के राय साहिब बहादुर मौसूफ़ बनवा रहे है, सो हे भाइयो यह घाट बन जाने से नाम कब तक रहेगा? यानें जब तक की यह घाट की नेंह रहेगी, तब तक रहेगा।

पुराचीण प्रमाण यह है,—

सवैया।

परि पूरण पाप के कारणतें, भगवन्त कथा न रुचै जिनको *
तिन एकक नारि कुसाथ लई, नरनायक है दिनको दिनको *

मिरदङ्ग कहै धिक् है धिक् है, मञ्जीर कहै किनको किनको *
तब नारि उठाय के हाथ कहै, इनको इनको इनको इनको *

एक छोटा सा दृष्टान्त,—

जब मैं इलाहाबाद में था, तब मैंने एक आदमी की ज़बानी एक छोटीसी कहानी सुनाया, सो क्या? याने किसी ज़माने में, कोई एक पुलिस में जमादार था, सो उसने बहुत दयानतदारी से, घूस अर्थात् याने रिशवत खोरी का रुपया बहुत सी कमाई का इकट्ठा किया था, सो उस रुपये को उसने किसी महाजन की कोठी में जमा कर दिया था, फिर बाद इस्के जब उसने पुलिस की मुलाज़मी को छोड़ा, फिर बाद अजा इस्के उसने अपना रुपया जहां कि जमा किया था, सो उस सख्सने अपना रुपया याने तलब किया, सो याने उस महाजन की नीयत खराब हो गई, और बड़ो भारी रकम बीस हज़ार रुपये की हजम कर लिया, और उस पर यह तुर्रा देकर टरई के साथ में टरका दिया, और यह कहा कि तूतो एक छोटी सी तलब का याने जमादार था, तूने रुपया इस कदर यतना कहां से पाया, सो तूने मेरे यहां जमा किया था, फिर वह बेवकूफ बेचारा लाचार होकर और मूरख बनकर और याने उस बेमान महाजन को आशिरबाद देकर याने अपना मुंह काला करके अपने घर वह चला गया, फिर दोबारा उस बेमान महाजन की कोठी में लौट लपट कर नहीं आया, नमस्कार है, किनको, याने रिशवतखोरा के गुरूजी को.—

(No 36) दोहा।

जैसा धन है आइया, वैसाही चलि जाय *
लखबानी बलदेव की, पानी में बहि जाय

फिर बाद इस्के उस पुलिस के जमादार ने शहरतैराश से यह सब हाल बयान किया, तब उस शहरतराशने यह जवाब देकर तसल्ली दिया. सो क्या? याने तुम घबड़ाव मत, अइयाम होलीका तेवहार करीब आने दो जब मैं, इस्का एवज उस बेमान हरामजादे महाजन से बसूली लूंगा याने जब अइयाम होली का आया, तब उस शहरतराशने क्या किया याने बगीचे में आकर इतफाक से मुलाकात होने पर उसने मजबूर पड़ापड़ लगाये. तब उस हराम

जादे महाजनने उस शङ्करराम से कहा कि यह बात गई कैसी ? फिर बाद इसके उस शङ्करराजने यह उत्तर दिया, सो क्या ? याने नपरहो खामाश रहो, यह होली है । होली है ॥ होली है ॥। याने जग अन्धा तुझे क्या समझाऊं * फिर बाद इसके उस महाजनने यह मिसरा पढा, सो क्या ?

(No 37) शैर ।

पड़ा पड इसकदर शिर मे लगाये *
न गिन्ती मे न गिन्ती मे भी आये *

(No 38) शैर ।

जबा देकर पलट जाना नहीं यह है मुनासिब *
न चाहिये देना किसी मुकालता वा जिब * ४/७

इस पुस्तक मे, जो कि पृष्ठ २७ मे चिट्ठी बङ्गआफ बङ्गाल इलाहाबाद के खजांची को की मुद्रित है. सो आपने मुझे बहुत सा धन्यबाद निज कार्ड के द्वारा से बजरिये डांक हाजा के भेजा है, सो आप मोहन मेले मे तशरीफ लाये थे, सो मुझ से और आप से इस शहर कलकत्ते में मुलाकात हुई थी, सो आपने मुझे ता० 10-1-4 ई० को अपने मुकाम मुकीपर बुलाया था, और मुझसे यह वादा किया था, कि मैं भी तुमको इस पुस्तक के छपने के बारे मे, छपाई चन्दा पत्र अवश्य दूंगा, सो उस रोज मैं उनके मुकीम मुकाम पर गया, सो यह मालुम हुआ कि आप ता० 9-1-4 ई० को इलाहाबाद रवाना हो गये, खैर खूब, क्या मै बहुत सा धन्यबाद लेकर ओढू या बिछाऊं या शहद लगाय कर चाटू, सो मै भी आपको बहुत सा धन्यबाद देता हूं, सो क्या ? याने हमारी सहायता करना तो दूर किनार रहा, बल्कि इस पुस्तक के बारे मे चन्दा तक नहीं दिया, खैर आप का इस मे कोई दोष नहीं है, बल्कि इस कलयुग के प्रथम चरण याने मनहूस कदम सिया बक्ती निगोड़े का दोष है ।

श्रीतुलसी दासजी का बचन यह है, सो क्या ?

दोहा ।

नहि विद्या नहि बाहु बल, नहि खरचन को दाम *
तुलसी ऐसे पतित को [illegible] पति राख राम *

मै अपढ़ श्रीतुलसीदास जीके चरणारविन्दके एक रोमकी बराबरी नहीं कर सक्ता हूं, मुझे २० वर्षके निकट होता है, याने विद्याको छोड़े हुवे, जिस समय में हमने अपना लिखना पढ़ना छोड़ा है, सो उस समय में, मैने क्या किया? याने जो कुछ मेरे पढ़नेकी किताबें फारसी और अङ्गरेजी हिन्दी वग़ैरह् की जो थीं, सो मैने सब लड़कों को बांट दिया, इसवास्ते कि न रहेगा बांस न बजैगी बांसुरी, जबसे मैने पढ़ना छोड़ा है, तब से मैने पढ़ी हुई विद्या को याने देखा तक नहीं,—

उपदेश।

घोड़ा रुका क्यों? रोटी जली क्यों? विद्या भूली क्यों? पान सड़ा क्यों?

(No 39) चौपाई।

मोहिं विद्वान न पण्डित जानों। बुधि अनुसार वचन यह मानों॥
मै अपराधी जगत बखाना। राम नाम नहिं सुमिरण जाना॥

दोहा।

विद्याको लखिये सदा, बिन फिरे फिर जाय *
यह मानो बलदेव को, नहिं पाछे पछताय *
जैसे मै पछतात हौं, सुनिये मेरो भाय *
बिन विद्या बलदेव यह, जगमें गमको खाय *
अङ्गरेजी हिन्दी उर्दू, पढ़ो फारसी हम*
सब विद्या यह जानिये, भूल गई इक दम*
मोहिं विद्वान न जानिये, मै विद्यासे हीन*
यह बलदेव को दीनता, लखिये नम्र अधीन*
यह पोथी अनमोल है, लखिये लेख हमार*
भूल चूक बलदेव को, क्षमा करहु सब यार*

In honor of the C. H. Harrison. I. C. S. Esquire to the Post Master General Bengal जयति:—

(N040) दोहा।

राजधानि कलकत्ते को, जाने सकल जहांन *
जनरल पोस्टाफिस यह, जगमे विदित बखांन *
सी, एच, हरीसन * सुजन बर, आफिसमे सरदार *
पोस्टाफिस बङ्गाल के, विदित सकल संसार *
पोस्टाफिस यह धरम से, करत स्भन को काम *
बहुत दूर की खबर को, पहुंचावत आराम *
गवर्मेण्ट के राजमे, यह सतयुग व्योहार *
डांक धरम में जानिये, जगत भरे को कार *
गवर्मेण्ट के राज मे, यह सरकारी कार *
उपदेशक बलदेव को, धरम केरहै यार *

मै आपको इस बात से आगाह करता हूं, कि हमारे नाम की चिट्ठी पत्री जहां मै रहूं, वहां पर चिट्ठीरसां मुझे खुद तलाश करके देवे, और वह वापस न जाने पावे, और दूसरा कोई हमारे नाम की चिट्ठी पत्री खोलने और लेने न पावे, क्यों कि मैने ता० 25-9-3 ई० को एक पाकेट (Private) महांराजा साहिब महंराजा बहादुर अयोध्यापुरीजी की सेवामे रवानै किया था, सो वह पाकेट ता० 15-2-4 ई० को किसी कारणसे बवापसी डाक छाप्पा (No G. 944) का A. D. पाकेट रजिंष्ट्री मुंदह् खुला हुआ पाया, सो मैने चिट्ठीरसां फौजीराम चपरासी पेटी (No 376) से दरियाफ्त किया कि यह पाकेट फटा और खुला

* विशेष सज्जन,—

हुवा क्यों है, फिर बाद इस्के उसने यह जवाब दिया कि यह बहुत दिन का मुद्दती पाकेट होने से फट गया है, खैर कुछ मुज़ाका नहीं! इस पाकेट के अन्दर हमारी दर्शनी, हुण्डी कोई नहीं थी, याने ख़ाली इस पुस्तक के २१ पृष्ठ मे जो (No 18) की कविता इस पुस्तक में मुद्रित है, सो उस में हमारे हाथ की लेखनीके द्वारा से लिखी हुई थी, सो मैंने बजिन्सहू बवापसी डांक डाला के वापस पाया, आइन्दह् के वास्तें मै आप से यह निवेदन करता हूं, कि हमारे नामकी चिट्ठी पत्री व पाकेट इत्यादिक कोई खोलने का अधिकारी डेड लेटर आफिसमें न किया जावें, क्योंकि डेट लेटर आफिसका कलर्क मुझे (B. Batuk Prasad) टन्डन १२घर खत्री बनारस का बख़ूबी जानता है, परन्तु यह पुरुष मेरा हितैषी नहीं है।

—o—

एक रण्डी होली के तेहवार के दिन, एक ठाकुर द्वारेमे, नाचने और गाने के लिये बुलाई गई, सो वह अन्दर मन्दिर के क्या अलापती है? याने—

—o—

(No 41) मुसल्लस धुपद् रागणी।

मुरग़ी को मै खाती हूं, तात्थेइ—तत्थेइ ता *
ठुमुक ठुमुक्के ठुमठुम् नाचूं, तात्थेइ—ततत्थेइ ता *
मुरग़ी को मै खाती हूं, तात्थेइ—तत्थेइ ता॥ १॥

अन्तरा।

मुरगी बोले कुकरूं कूं, तात्थेइ—तत्थेइ ता *
हज करके मै आई हूं, तात्थेइ—तत्थेइ ता *
मुरग़ी को मै खाती हूं, तात्थेइ—तत्थेइ ता॥ २॥

अन्तरा ।

अन्दर मन्दिरके गाऊँ, तात्येइ तत्येइता *
बलदेव को नहिं भावै यह, तात्येइ तत्येइता *
मुरगो को मै खाती हूँ, तात्येइ तत्येइता ॥३॥

(No. 42) दोहा ।

जो कलियाको खात है, पशू कलेजाह और *
सांच कहत बलदेव यह, हृदय दया नहिं छेर *

एक छोटा सा चुटकुला क्या है ?

फिर बाद इसके होली की दिल्लगीबाजी क्या हुई ? याने एक पुराना अन्दल खन् खजूरा गोजर किड़वा खन् खन् खनानेवाला अस्सी बरस का दया रहित एक कोने मे छिपा हुआ बैठा था, सो वह खन् खजूरा गोजर यह खुआ तवायफ के लहंगे में घुस गया, फिर बाद इसके उस पतुरिया का तात्येइ तत्येइता याने गाना बन्द होगया, तब वह वेश्या चक्कर खाकरके क्या कहती है ? याने तोबाह्, धोबाह्, तोबाह्, हज करके यह आई हूं, तोबाह्, तोबाह्, तोबाह्, फिर बाद इसके खन् खजूरे को एक बकुलेने पकड़ धकड़ करके उस अहङ्कारी दया रहित गोजरको समझावन से समझा दिया, फिर बाद इसके उस खुआ गोजरके समझने बीचके दरम्यान मे ज्ञान उत्पन्न हुआ, अलकिस्सह् बाद होली का जलसा जब खतम होगया, तब वह बीबी अपसराने श्रीठाकुर द्वारेके मुखिया सरपंचसे अपने गाने नाचनेका मेहनताना मागा, तब बाद इसके मुखिया सरपंचने कहा कि तुम क्या मागती हो ? तब बीबी तवायफने यह कहा कि मै श्रीठाकुरजी के साम्हने इस बात की कसम खाती हूं कि मुझे कालामुखा की कहम है, याने मै हज करके आई हूं, अब मैं मुरगी मुरगा कभी न खाऊंगी, और आप भी इस बात की सौगन्ध खाइये सो क्या ? याने जो वैष्णवलोगों के बाटर मे मछलियां काट काट के बिकती हैं, सो वह उठवादी जावें, और बजाय इसके फूल वगैरह फरोख्त होना चाहिये, फिर बाद इसके उस मुखिया सरपंच पूजारीजीने यह उत्तर दिया सो क्या ? अभी श्रीठाकुरजी के साम्हने कसम खाने की कोई जरूरत नहीं है, याने कमेटी करके यह मामला दरपेश कमेटी मे किया जायगा, याने जैसी राय तजवीज, मेम्बरों की होगी, सो वैसाही किया जावेगा, देखा चाहिये कि अब मेम्बरों की राय तजवीज मे क्या अम्र ठहरती है, याने रजिस्टर्ड तो

इस कारके मुरगियों का खाना छोड़ दिया, सोदेखा चाहिये कि बैष्णव लोग अपने कटरों मे मछलियों का फरोख्त करना बन्द करते हैं या नहीं,हमारी तो राय मे यह है, सो क्या? याने जिन२ बैष्णव लोगों के कटरे मे मछलियां बिकती हैं, सो वहां पर बजाय हाट मछलियों के, वहां पर पुष्प इत्यादिकों की हाट होना चाहिये, ताकि बैष्णव लोगों के जिनके कटरे में मछलियां बिकती हैं, सो यह उठ जानेसे उनलोगोंके हृदयमे आपसे आप दया प्रगट हो जायगी बरना नहीं।

(Sd.) Baldeo Prasad Mehrotra 2½ Ghur.
CALCUTTA.

Errata.

अशुद्ध।	शुद्ध।
पृष्ठ १५ (No. 14) की ११ पंक्ती मे, संभा,—	सभी।
पृष्ठ ६२ की २४ पंक्ती मे, रपोर्ट,—	रपोर्ट।
पृष्ठ ६५ की १५ पंक्ती मे, बाट इस्के,—	बाद इस्के।
पृष्ठ ६८ फुटनोट की प्रथम पंक्ती मे, हु,—	हूं।
पृष्ठ ६९ की १२ पंक्ती मे, तजुर्मा,—	तर्जुमा।
पृष्ठ ७० की अशुद्धा अशुद्धीके बाद १४ पंक्ती मे पैस,—	पैसा।
पृष्ठ ७१ की ५ पंक्ती में, बसरी सामानी,—	बेसरी सामानी।
पृष्ठ ७२ दृष्टान्तकी ८ पंक्ती में, झोपड़ीके निकट,—	झोपड़ी निकट।
पृष्ठ ७२ की दृष्टान्तकी ११ पंक्ती में, इत्याहिक,—	इत्यादिक।
पृष्ठ ७१ की ११ पंक्ती में, कम्पलीमेन्ट प्रभु मेरे लार्डने दिया,—	यह कम्पलीमेन्ट प्रभु मेरे लार्डने दिया।
पृष्ठ ७६ की सितारों की फुटनोट की ४ पंक्ती मे, अथात,—	अर्थात।
पृष्ठ ७७ की ४ पंक्ती में, महादय,—	महाशय।
पृष्ठ ७७ की १४ पंक्ती में, हमारा,—	हमारी।

अशुद्ध।	शुद्ध।
पृष्ठ ७७ की १६ पंक्ती मे, श्रीठाकुर की गली,—	Shiboo Thakoor's Lane.
पृष्ठ ७८ (No. 34)की ११व१२ पंक्ती मे, अनित—सरलेहि,—	अनीत—सरलहि।
पृष्ठ ७९ की ३ पंक्ती मे, कलस,—	कलम।
पृष्ठ ८० के ४ पंक्ती मे, सो मै प्रेम से स्वीकार करूंगा और मैं यह आशा करताहू	
पृष्ठ ८४ केपृष्ट दृष्टान्तके ११पंक्तीके नीचे, अशिरबाद,—	आशिरबाद।
पृष्ठ ८५ (No. 38) की ७ पंक्ती मे, खजार्ची की कौ, -	खजाची की को।
पृष्ठ ८५ के श्रीतुलसीदासजी के दोहे की दूसरी पंक्ती मे, तृपतिराखं राम, -	तृपतिराखो राम।
पृष्ठ ८७ दोहे के ३ पंक्ती मे, सौ. एच,	सौ, यच।
पृष्ठ ८७ दोहेके बाद इबारत की ८ पंक्ती मे. डाक,—	डाक।
पृष्ठ ८८ के ९ पंक्ती मे, छेट,—	छेड।

---

७०) नोशान कुल टोटल इस पुस्तक के चन्दे छपाई ६० पृष्ठको.—

३) सुतापट्टीके फत्तूहारिके कटरे (No 66) के मर्चेन्टो से पाया,

१) श्रीमान् बाबू रामचन्द्र रामनरायण जीसे पाया, ता॰ 11—2—4 ई॰

१) श्रीमान् बाबू किशुनदयाल मक्खूलाल जीसे पाया, ता॰ 14—2—4 ई॰

१) श्रीमान् बाबू गुरमुखराय मदनगोपाल जीसे पाया, ता॰ 13—2—4, ई॰

८) नरायणप्रसाद लेन मु० अफीमका चौरास्ता सूर्य्यमलकी कोठी (No. 5) के मर्चेन्टों से पाया,

१) श्रीमान् बाबू भीमराज, फूलचन्द खेतान जीसे पाया ता० 19—2—4 ई०

१) श्रीमान् बाबू गुलाबराय, रामेश्वर पोद्दार जीसे पाया, ता० 19—2—4 ई०

१) श्रीमान् बाबू रामप्रसाद, सूर्य्यमल नेवटिया जीसेपाया,

१) श्रीमान् बाबू श्रीलाल छोकमल, महेसरी पेड़ीवालजी से पाया, ता० 19—2—4 ई०

१) श्रीमान् बाबू चोखराज, रामबिलासजी झुंझुनवाले, से पाया, ता० 20—2—4 ई०

१) श्रीमान् बाबू सूर्य्यमल, सागरमल खितानजी से पाया, ता० 20—2—4 ई०

१) श्रीमान् बाबू सूर्य्यमल सोनीराम पोद्दारजी से पाया, ता० 23—2—4 ई०

१) श्रीमान् बाबू गौरीदत्त, लक्ष्मीनरायणजीसे पाया, ता० 23—2—4 ई०

१) श्रीमान् बाबू बलदेव दास, जगन्नाथजी झुनझुनू वालेसे पाया, ता० 17—2—4 ई० याने सूर्य्यमलकी कोठी (नं० ७१) बरतल्ला क्वौटर्स पाया,

२) कालीगोदाम अफीमका चौरस्ता (No.12) के मर्चेन्टोसे पाया,

१) श्रीमान् बाबू सुखराय, रामनाथ शराफ जीसे पाया, ता० 21—2—4 ई०

१) श्रीमान् बाबू बलदेव दास, युगलकिशोर बिड़ला जीसे पाया ता० 23—2—4 ई०

२) नन्दराम मल्ली सूरजवालों की कोठी बरतल्ला ष्ट्रीट, (No 73) के मर्चेण्टों से पाया,

१) श्रीमान् बाबू हरमुखराय, गोविन्दराम जीसे पाया, ता० 21—2—4 ई०

१) श्रीमान् बाबू सनेहीराम, सेढ़मलजी से पाया, ता० 24—2—4 ई०

१) श्रीमान् बाबू हीरालाल, गुलाबसिंह जी जौहरीसे पाया, ता० 21—2—4 ई० म० अफीमका चौरस्ता नरायण प्रसाद लेन। (No. 7)

१) श्रीमान् बाबू सेवाराम, रिखदासजी से पाया, ता० २२—२—४ ई० मु० अफीम का चौरस्ता चूड़ीवाला की कोठी (नं० १७)

१) श्रीमान् बाबू मङ्गलचन्द, चुन्नीलाल महेसरीजी से पाया, ता० 23—2—4 ई० यामे आसाराम भांवर की कोठी (No. 41) से,

५) नन्दराम मल्ली बरतल्ला ष्ट्रीट कोठी (No. 74 व 75) के मर्चेन्टों से पाया,

१) श्रीमान् बाबू चतुरभुज, जगन्नाथ जीसे पाया, ता० 4—3—4 ई०

१) श्रीमान् बाबू भारामल, फतेचन्द जीसे पाया, ता० 4—3—4 ई०

१) श्रीमान् बाबू बालकिशन दास, शिवबक्स जीसे पाया, ता० 6—3—4 ई०

१) श्रीमान् बाबू गिरधारीलाल, गनपतराय जीसे पाया, ता० 6—3—4 ई०

१) श्रीमान् बाबू जोखीराम, बालाबकस जीसे पाया, ता० 7—3—4 ई०

४) जगमोहन मल्लिक लेन बड़ जी की कोठी के (No. 9) के मर्चेण्टों से पाया,

१) श्रीमान् बाबू साधोराम, तुलाराम मोनकाजी से पाया, ता० 8--3—4 ई०

१) श्रीमान् बाबू टोरमल, दिलसुख राय खेमका जीसे पाया, ता० 8—3—4 ई०

१) श्रीमान् बाबू राधाकिशन, शिवदत्तरायजी से पाया, ता० 8—3—4 ई०

१) श्रीमान् बाबू फूलचन्द, पदुमराजजी से पाया, ता० 9—3—4 ई०

१) श्रीमान् बाबू सीतलप्रसाद, खड़गप्रसादजी अगरवाला, बांसतल्ला ष्ट्रीट (No. 30) के मर्चेन्टसे पाया ता० 13—3—4 ई०

॥) श्रीमान् बाबू जानकीदास, गणपतराय बरतल्लाष्ट्रीट, (No 22) से पाया,

७॥) हरीसन रोड, No. 95 के मर्चेण्टों अमहावके पंचायतियो पंचोसे पाया,

१) श्रीमान् राय बाबू बनसीलाल, अमीरचन्दजी बहादुर से पाया, ता० 14—3—4 ई० हरीसनरोड, (न० ९५)

१) श्रीमान् बाबू सगुनचन्द, बैजनाथ जीसे पाया, ता० १४—३—४ ई० हरीसनरोड न० ९५

१) श्रीमान् बाबू मुलतानचन्द, नरसिंहदासजी से पाया, श्यामाबाइ की गली (न०१०) ता० १४—३—४ ई०

१) श्रीमान् बाबू सुखदेव दास, रिखबदास जीसे पाया,
श्यामाबाईकी गली (नं० १०) ता० १४—३—४ ई०

॥) श्रीमान् बाबू गोकुलचन्द, हरकचन्दजी से पाया,
ता० १४—३—४ ई० हरीसनरोड (नं० ८५)

१) श्रीमान् बाबू मुलतानचन्द, डागा जीसे पाया,
कोठी मोहनलाल हीरानन्द (नं० २०३) हरीसन
रोडसे पाया ता० १६—३—४ ई०

१) श्रीमान् बाबू हरसुखदास, छोकमलजी से पाया,
बरतलाष्ट्रीट (नं० ३२) ता० १४-३-४ ई०

॥) श्रीमान् बाबू छोगमल, रामदासजी से पाया,
चरमनी ष्ट्रीट, (नं० ३२) ता० १४-३-४ ई०

॥) श्रीमान् बाबू रामकिशुन डागादासजी, से पाया,
पारककी कोठी (नं० ११) ता० १४-३-४ ई०

१) श्रीमान बाबू राधावल्लभ दामदुमाणीजी से पाया,
(नं० १०) श्यामा बाई की गली की कोठी मे से
ता० १०-३-४ ई० को पाया,

७०) मोज़ान कुल टोटल पृष्ठ ६० की याने ६२ पुरुषों से पाया,

३८) मोज़ान पृष्ठ (८१) से लगायत परयन्त (८५) ताईं
याने ४० पुरुषों से पाया,

---

१०८) मोज़ान कुल टोटल रुपया की, याने १०२ पुरुषों से पाया,

ता० २३ सितम्बर सन् १८८८ ई० को मैंने यह लिख करके
अपने हाथसे जनाब Rai Lálá Shiwa Prasad
Jee Sahib Bahadur कानपुर रईस आज़म
के हवाले किया था, सो क्या ? याने,—

(No 43) **क़सीदा ।**

ऐय खुश इक़बाल वय (१ ख़िजिस्तह् (२ निहाद *
नाम तेरा है लाला शिव परसाद *
तेरी हिम्मत तेरी (३ सख़ावत) पर *
देता है हातिम अपने हाथसे (४ दाद *
ख़तम है तुझपह् (५ हिल्म) हम दर्दी *
उमदह् है इल्म (६ वफ़न) व ज़ेहन (७ वक़ाद *
कस व नाकस से झुक के मिलता है *
रखता है दुश्मन से नहीं है (८ इनाद *
है ख़ोदा से यही दुआ मेरी *
रहै दुनियां मे ताअबद आबाद *
कोइकार मुश्किल अगर करिये *
दिलसे मेरे न भूल जाइये याद *
अबतलक जाबजा फिरा महरूम *
अब मुझे होता है क्या इरशाद *

उपदेश ।

पुराचीण प्रमाण,—

कवित ।

हीराके फूटे कनो विकाय जात, हाट हाट कोई घाट कोई बाढ़, दबे मोल होगयो * भभीषण जो फूटे राजा रामचन्द्र से आए मिले, रावन को मार के, स्वर्ग मे पठयो दियो * दुर्योधन से अवधारी, कमठाके टूटत गुमान, उनहूं को नय गयो * नहके मारे उठ जात बाजी चौपड़ को, आपुस के फूटे, कहो कौन को भलो भयो *

(१ मुबारिकज़ात (२ उमदह् (३ फ़ैयाज़ी (४ इसी (५ सावधानी (६ अच्छा) (७ उमदह् (८ दुश्मनागी *

(No 44) दोहा।

यह दुनियां को जानिये, लखिये मीत प्रमान *
चखल, वायू, अग्नि, जल, चार समुद्र बखांन *
मक्खी चीटे चीटीयां, इनसे होत पवित्र *
सुनहु मीत बलदेवकी, मेरे प्यारी मित्र *
बुद्धिमान शत्रू भला, बुरा है मित्र नदान *
लखहु मीत बलदेवकी, ज्ञानीं चतुर सुजान *

हमारे बिरादरी के L. मङ्गमल उर्फ बलदेव दास, मेहरोत्रा २॥ घर वैष्णव आप (No. 79) Cross Street Calcutta के रईस आजम लखपती धनी हैं, सुनते हैं कि आपने अपने बहि-श्तोंके वफातमिलकियत कुल रकम रुपये इष्टेट की जाय-दात के मालिक हुवे हैं, और आप खुशनसीब के चार साहिबजादे फरजन्द भी हैं, याने (No. 1) B. गोबिन्ददास (No. 2) B. निक्के मल उर्फ नारायन दास, (No. 3) B. बांकदेव दास उर्फ बासू (No. 4) B. हरी दास—याने (No.2) हमारे मामू सीतल प्रसाद टन्डन २॥ घर स्वर्ग निवासी के लड़के बाबू नरायन दास की लड़की का जमाई है, सो हमारा और इन लोगों का रिश्ता नातामें भी घंघरी का है, सो याने इन लोगों को जब से मै कलकत्ते में आया हूं तब से इन लोगों को मैंने अपना हितैषी और खैरख्वाह याने सहायक नहीं पाया है, क्योंकि वह लोग यह बात चाहते हैं, कि वैष्णव लोगोंके काटरों मे खूब मछलियां काट काटके धड़ा धड़ फरोख्त होकर बिकती जारी रहै, क्योंकि यह लोग भी परम वैष्णव श्री सांवलियाजी के पूजारी

है, और आपके दौलत खाने बाड़ी मे भी श्री सांवलियाजी का ठाकुर द्वारा है,—

अत:—और हमारा और राय रामचरन दास बहादुर रईश कोटाधीश इलाहाबाद के रानी के मन्डी के महाजन से पगड़ी का रिश्ता है, सो क्या ? याने आप धर्म्म नीत प्रमाण से, इनसे जो हमारा रिश्ता नाता है, सो बेवरे वार बेवरा इस्का इस पुस्तक के ७४ पृष्ठ की १० पंक्ती मे तफसील वार मुद्रित है, सो यह हमारे जन्म कुण्डली मे लग्नेश और षष्ट मेश का याने तुला लग्न का स्वामी जो चतुर्थ स्थान मे बैठा हुवा है, सो उस्का यह प्रताप है, और यह हमारे पूर्व जन्म का और इस जन्मका यह तपो बल है, याने जो लग्न का स्वामी, यदि चतुर्थ स्थान मे बैठा हुवा होवे, सो उस्का सार्टिफिकट इस पुस्तकके प्रथम टायटिल पेज मे, ता॰ 12 th. May 1903 ई॰ की चिट्ठी चकरेजीमे महँराजा साहिब बहादुर श्रीअयोध्यापुरी नरेशजी की मुद्रित है, और दूसरी चिट्ठी इस पुस्तक के १९ पृष्ट में, महँराजा साहिब बहादुर श्री काशी नरेश जी की ता॰२२ Jauly 1901ई॰की मुद्रित है,(प्रमाण श्रोरणबीर ज्योतिष महानिबन्ध:) और जिसके जन्म मे लग्नेश चतुर्थ भाव मे स्थित होता है, सो वह राजा का प्यारा और बढ़िया जीविकावाला और पिताहि श्रेष्ट लाभवाला और पिता माता का भक्त और थोड़ा भोजन करनेवाला होता है, सो मैं महँराजा श्री अयोध्यापुरी श्री नरेश जी का और श्री काशी नरेश जी का प्रजा याने श्रीद्विजराज जीका सेवक प्रजा धर्म्मके अनुसार संसारमें प्रसिद्ध हूं, और षष्टम का फल यह नकिष्ट मेने पाया, सो क्या ? याने जबसे मैंने बजारके ऊपर कदम उठाया है, याने तबसे इलाहाबाद

को खत्री सभापति को और कलकत्ते को खत्री सभापति को अपना सहायक मैंने नहीं पाया है, याने ता॰ 30 March सन् 1898 ई॰ से कलयुग से मैं घोर संग्राम कर रहा हूं, लेकिन इस निगोड़े का मुंह काला इस मिरत लोक मे मैंने कर दिया है, सो क्या ? याने,—

(No. 45) दोहा।

भीख मे भीख जो देत है, तीन लोक ले जीत॥
उपदेशक बलदेव की, लखिये यारो मीत॥

प्रमाण ज्योतिष लग्नचन्द्रिका पृष्ठ ७१।

चौथे शुक्र मे सुखी, जाननेवाला, बहुत स्त्रीवाला, बहुत धनी, गांवका स्वामी, यशी, और (* विवेकी) होय,—

इलाहाबाद और कलकत्ते की खत्री सभापतिने अपने स्वामी को इदक इज्जत क्यों किया ? और हाकिम हुक्काम लोगों की चिट्ठियों को अतापत क्यों नहीं किया ?

* स्वामीजी को केवल विवेक सिर्फ इस बात का है, सो क्या ? याने जो कि वैष्णव लोगों के कटरे मे मछलियां काट काट के फरोख्त होकर बिकारी की जाती हैं।

और कलकत्ते मे मैंने, एक बात यह अपूर्व देखा सो क्या ? याने जिस मकान मे खटमल—अर्थात्—उड़ुस याने खट खिड़वा रहता है, सो उस मकान मे, टम्डन याने चिरचिट्टा खिड़वा नहीं रहता है, और जिस मकान मे टम्डन याने चिरचिट्टा खिड़वा रहता है, सो उस मकान मे खटमल अर्थात् उड़ुस खिड़वा नहीं रहता है,—

प्रमाण श्रीरणधीर ज्योतिष महानिबन्धः—

और जिसके चतुर्थ भावमे शुक्र स्थित होवे, सो मित्रोंका और भूमिका और, ग्रामों का, और श्रेष्ठ वाहनों का, अनेक प्रकारों के सुख को भोगनेवाला, और देवता को बन्दना करनेवाला और नित्य प्रति आनन्द करके युक्त सो मनुष्य होता है ॥ ४ ॥

याने जबतककि इस प्रमाणका, हमारा न्याय प्रभु वाइसराय व प्रभु छोटेलाट साहिब बङ्गाल और पश्चिम उत्तर देशाधिकारीके यहां से अथवा श्री महाराजा श्री काशी नरेशके यहां से न होवे तबतक कि हमारे रहने और खाने पीने का प्रबन्ध अच्छी तरह से रखना चाहिये, और हमारे ऊपर कोई शत्रुवों की वारदात न होने पावे, क्योंकि मै दो बरससे बाज़ार के हलवाई की कढ़ैये की याने गङ्गा यमुना के धारा को जले घृत की पूरियां खा करके अपनी बसर करता हूं, क्योंकि मैं किसी के हाथ की रोटी बनाई हुई याने नहीं खाता हूं, ख़्वाह ब्राह्मण हो या कोई कुलीन खत्री क्यों न होवे, यह प्रबन्ध किस्को करना चाहिये, याने जो हमारे परम हितैषी हैं। जैसे कि राजा राय शिवबक्स जी साहिब बहादुर बागला, और हमारे नज़दीक, राय बद्रीदास जी साहिब मुक़ीम बहादुर भी राजा के तुल्य हैं, सो इन दोनो महाशयों को पूरी तौर पर हमारी सहायता करना चाहिये, याने जबतक की हमारा प्रभु बड़े लार्ड और प्रभु छोटेलाट साहिबके यहांसे इनसाफ न हो,—और हमारे बिरादरीके रईस लोगोंने जिस मुवाफ़िक़ हमारी सहायता किया है, सो यह बात कलकत्ते मे पटना से आलातक ख़ास व आम लोग बख़ूबी जानते हैं, सो बेवरेवार बेवरा लिखने की हमारी कुछ ज़रूरत नहीं है।

—······※······—

(No. 46) नसर।

सबका साहिब*आफताब है प्यारा*
शम्सी चक्री उसी को तनमे धारा*
इन्दुलोक मे हम तुम सब बस्ते हैं*
बलदेवप्रसाद मेहरोत्र यही कहते हैं*

(* मुसलमान लोगों के मज़हब मे, याने सात फलक है, सो हमारे दीन मज़हब मे भी सात लोक कहते हैं, याने जैसे कि (१ भूरलोक (२ भुवरलोक (३ स्वरलोक (४ महर-लोक (५ जनलोक (६ तपलोक (७ सतलोक, अत:—बरुण जलका स्वामी है, जैसे महानद समुद्र इत्यादिकों को जानिये, क्योंकि जल इत्यादिकों मे भी, परमेश्वर की सृष्टि उत्पन्न है, और अमरलोक को पाताललोक कहते हैं, सो इस पताल पुरी में, श्रीहनुमानजीने त्रेतायुग मे अपने पुत्र मकरध्वज को राज्य दिया था, और अमरलोक का अप:भ्रंश क्या है ? याने अमरी का टापू, और यही सात लोक के नाम से, सात सितारों का नाम है, जैसे कि (१ सूर्य्य (२ इन्दु (३ मङ्गल (४ बुध (५ बृहस्पति (६ शुक्र (७ शनि और इन्ही सात सितारों के नाम से, इस संसार मे सात दिन का एक हफ्ता कहा जाता है, (* इन्द तप लोकका अप:भ्रंश क्या है ? हिन्दुस्थान युनानी ज़बानमे, स्थान शब्दका अर्थ यह है, समूह जैसे क़बरस्तान याने जहां पर बहुतसी क़बुरें हो, और हिन्दी मे स्थान शब्द का उच्चारण अर्थ यह है, याने स्थान जगह यह इन्दुस्थान अप:भ्रंश हिन्दुस्थान (अर्थात् दीन दरवेश इन रहनेका स्थान तपोभूमि, और इन्दु नाम चन्द्रमा का है, सो इसी नाम से इन्दुस्थान संसारमें यह प्रसिद्ध चारों दिशाओंमे जानिये और हिन्द स्थान का अप:भ्रंश अङ्गरेज़ी ज़बानमें इण्डिया है

—······*······—

उपदेश।

पुराचीण प्रमाण फ़ारसी ज़बांनका यह है सो क्या ? याने,—

(बैत)

न हर मरदो मरदो न हर जन जनस्त*
ख़ोदा पञ्च अङ्गुश्त यकसां न करद*

चौपाई ।

करकी अंगुली एक समाना * छोटी बड़ी को करहु प्रमाना *
तीन गोर दुइ कार न होई * सब जन, परखहु कर में सोई *

दोहा ।

† हाथ की अंगुली जानिये, लखिये गोत प्रमान*
छोटी बड़ी को देखिये, रङ्गहि एक समान*
श्रीतुलसी दासजी का वचन यह है, सो क्या ? याने,—

दोहा ।

लक्ष्मी को सुत चार है, धर्म्म अग्नि नृप चोर*
(* जेठे के अपमान से, तीन करहिं घर फोर*
*जेठा कौन पुत्र है ? याने धर्म्म,—

सोरठा ।

जो,—करै धरम अपमान, (* अढ़ाई घर) नहिं जानियै ।
जिन्ह,—नहिं कीन्ह्यों सनमान, उपदेशक बलदेव को ।

† इस विषयके बारे मे, हमारी जे.हन राय मे यह बात पैदा होती है, सो क्या ? याने जैसे कि नर स्याह अर्थात् काला होवे, ख्‌वाह स्वेत अर्थात् सफेद होवे, और मादह बलवान हो सो याने रङ्ग जैसाकि मादह का है, सो उसी रङ्ग का बच्चा उत्पन्न होता है, और इसी प्रकार से नर का भी जानिये, और बाज़ २ पण्डित लोग यह बात कहते हैं, सो क्या ? याने जो स्त्री रजस्व स्नान से होती है, सो बाद स्नान के जिस पुरुषका मुख देखेगी, सो उसी रङ्ग ढङ्ग का बालक पैदा होवेगा, सो यह प्रमाण शास्त्र के अनुसार, कुछ ठीक नहीं है, क्योंकि युरुपियन लोग गोरे होते हैं, सो इन लोगो के काली औलाद क्यों नहीं होती है ? क्या यह प्रमाण इन लोगों के वास्ते नहीं है ? और बाज़ २ पण्डित लोग यह बात कहते हैं, सो क्या ? याने जो पुरुष बलवान होता है, सो उसके बालक पैदा होता है, और जो स्त्री बलवान होती है, सो उसके कन्या पैदा होती है, सो हे भाइयो यह माया ईश्वर की प्रबल है, परन्तु लखने और परखने मे नहीं आती है, इस से साफ स्पष्ट होता है कि, कोई पुरुष इस प्रक्रिया पैदा करने वाला हिकमतदार है, इस लिये सब लोगों चाहिये कि दया विचारो और अपने २ अपराधों से

उस परमात्मा परब्रह्म ईश्वर से, क्षमा मांगी, ताकि परलोक उन का सुधरे, हिंसा करना दोष है, याने जैसे अपना आत्मा जीव समझो, वैसेही पशवों का भी समझना चाहिये,—

(* खत्री बंश के ज़ात का बेवरा यह है, सो क्या ? याने (No. 1— अढाई घर श्रेष्ठ कुलीन) और अढ़ाई घर से (No. 2,—चार घर मध्यम) और चार घरसे (No. 3,—बारह घर मध्यम) और बारह घर से (No. 4,—बावन घर मध्यम) और सुरैतवाल और खरीन खत्रियों का इन चार नम्बरों से सम्बन्ध नहीं है, और अढाई घर क्यों कर हुवे, याने मेहरे और कपूर, खोटो खन्ने, और लखी का आधा खन्ना, याने यह तीनो मिल करके अढाई घर श्रेष्ठ कुलीन हुवे, क्योंकि आपति काल के किसी समय ग़दर के ज़माने में इन तीनोंने अपने धर्मों को बचाया है, और रक्षा किया है, जिस जमानेमे याने नानक पन्थी जब मतथा, यों श्रीगुरुवे नमः, सो श्रीगुरु नानक शाह भी (लहोरे) खत्री थे, श्रीनानक शाहके ज़माने मे टोपी और पगड़ीयों को, म्लेच्छ लोगोने बहुत बेइज्जती किया है, तबसे बहुत से लोगोंने पगड़ी और टोपियों को पहिनना छोड़ दिया है, सो वह चिन्ह अभी तक प्रतक्ष फ़ल बरतमान देखलाई पड़ता है, सो क्या ? याने बहुत से लोग अब तक टोपी और पगड़ियों को नहीं धारण करते हैं, जबसे अङ्गरेजी अमन राज हुवा है, तब से अभय होकर बहुतेरे प्रभव लोग टोपी और अमूड़ी धारण करने लगे हैं, और क़नौज के मेहरे और पिछानी, और मुरादाबाद के टन्डन ४ घर बोले जाते हैं, और बाक़ी सम्बन्धका ब्योरा सम्बन्धके अनुसार है, जैसेकि टन्डन, कपूर, मेहरे, और खन्ना, जिनका ४घरसे मेल है, सो चार घरमे हैं, जिनका बारह घर से मेल है, सो बारह घरमे है और जिनका ५२ घर से मेल है सो बावन घर मे हैं,——

———०———

और मैंने इलाहाबाद मे, इस्क़दर पत्रोंके द्वारों से, भिक्षा लोगों को दिया था, सो उसका बेवरा तफसीलवार ज़ैल तशरीह के साथ यह है, सो क्या याने,—

१०,०० पत्र * B. चि॰ मन्नू लाल खजांची हाईकोर्ट के पिता के

* और इनका बिरादर खु़र्द इन्होंकी अर्थात् छोटा भाई भ्राता चि॰ B. मदनलाल इलाहाबाद के, मिनुसिपुल्टी आफ़के ओहदा में दफ़तरमे, कलर्क है।

स्वर्ग बास विषय मे, अपना दुःख शोक के साथ मे प्रकाश किया था, सो आप की बूवा मेरे चचाजी अनन्तराम स्वर्ग निवासीजी के साले को ब्याही थी, सो इनकी सगी बूवा यह भी हमारी रिश्ते से मामीजी होती हैं, इस पत्रको मैंने सोधा नहीं था, क्यों कि मैं उस समय बहुत मुफलसी व तकलीफ की बेहोशीकी हालत मे था, और मैं आशा करता हूं की एकक चौपाईके माने दो तथा तीन२ मतलब ज़ाहिर होसक्ता है, यह पत्र मैंने प्रथम जनवरी सन् १८९८ ई० मे मुद्रित किया था।

१००० पत्रB.चि०नन्दूलालजी खजांची मिन्युसुपुलटी मोहकमें आब दफ्तर इलाहाबाद के नाना पिनसिन् याफ्तह खजांची केरेन्सी के स्वर्गबास विषयमे अपना दुःख प्रकाश ता० २३ मार्च सन् १८९८ ई० मे किया था, सो इन के खान्दान से और हमारे ननिहाल का भी, रिश्ता है।

१५०० पत्र प्रथम जनवरी सन् १९०० ई० मे श्रीभारतेश्वरीजी की कोरत और संसारके वास्ते महाधर्म गौवों के विषय का उद्देश मुद्रित किया था।

१००० पत्र ता० ८ अगस्त सन् १९०० ई० मे श्रीभारतेश्वरीजी की कीरती, और बिधवावों के प्राण धर्म्म की रक्षाके हेतु शिक्षा करके, उपदेश मुद्रित किया था, और उस में राम बाग़ की और इलाहाबा के, रानी के मण्डी के, कोठीके लालाजी की तोफ्त बयान मुद्रित किया था।

१००० पत्र ता० प्रथम माह दिसम्बर सन् १९०० ई० को श्रीभारतेश्वरीजी की अस्तुति और श्रीरामलीला प्रागराजके बारेमे मुद्रित किया था, और उसमें प्रभु बड़े लार्ड साहिब और प्रभु

छोटे लाट साहिब को भी धर्म्मनीत के अनुसार संसार में प्रशंसा प्रकाशित किया था।

और हमारा लेख ता० २८ जून सन् १८००ई० के ४ (खण्ड १८ नम्बर २६) में प्रयाग राजके साप्ताहिक पत्रमें यह मुद्रित हुवा है, याने मु० रामप्रसाद जी हाईकोर्ट के स्वर्गवास विषयमें अपना दुःख संसारमे प्रकाश किया था, याने बाद मृत्युके शोक कौन पुरुष प्रकाश करता है, याने मित्र या शत्रु ? सो हे भाइयों शोक मित्र प्रकाशित करता है, क्योंकि दुःखमे मित्र साथ देकर शरीक होता है, परन्तु शत्रु नहीं, सो देखिये हमारी यह मित्रता संसार मे प्रसिद्ध है।

\# और इस पुस्तक मे जो पृष्ठ ६६ व ६७ मे (No. 30) की जो कविता मुद्रित है, सो यह संसार में मासिक पत्रके द्वारासे प्रकाशित हो चुका है, यह पत्र ता० १ अक्टुबर सन् १८०१ ई० को याने प्रयाग राजमे प्रसिद्ध हुवा है।

४०० और पत्र ता० ६-११-१८०१ ई० मे प्रभु छोटे लाट साहिब पश्चिम उत्तर देशाधिकारी के लण्डन के जानेके समय मे, एक उपदेश श्रीदेवनागरी के रक्षा के बारे मे मुद्रित किया था, सो उसमें धर्म्मनीतके अनुसार प्रशंसा श्रीमान् पण्डित मदनमोहन मालवी हाईकोर्ट वकील को देवनागरी के विषय में तारीफ किया था।

१००० और कलकत्ते मे जो मैने पत्र मुद्रित किया है, सो इस पुस्तकके २७ पृष्ट मे बेवरेवार बेवरा विज्ञापन में मुद्रित है।

१००० पत्र यह अब सन् १८०४ ई० को संसार मे मुद्रित प्रमाण के साथ मे प्रकाशित किया जाता है।

ता० २८ मार्च सन १८०४ ई० को कलकत्ते के मिन्युसपुलटी इन्‌कमटेक्स के मोहकमे मे, दो घूंस खोर गिरफ्‌तार होकर माकूफ हुवे, याने जगन्नाथ जालान और असेसर लखूलाल सिरकार सवादत्त नोटिस श्रीमान् बाबू रामकुमार जेठमल जीके द्वारासे मालुम हुवा।

क्रश्चन लोग दूसरे का धर्म्म नाश करनेके लिये, उपदेश संसार मे करते हैं, सो उनकी सरकार उनको तलब और खूब खर्च देती है, सो हे भाइयो हमारे उपदेशके द्वारों से हर एक मनुष्य उपदेश दूसरोंके धर्म्म को रक्षाके वास्ते संसार में कर सक्ता है, सो देखिये धर्म्मके विरोधी लोगोंने हमारी मेहनत पर कुछ भी ख्याल न किया, क्या यह अन्याय इलाहाबाद और कलकत्ते की खत्री सभापति का नहीं है, हमारी सहायता करना तो दरकिनार रहा, परन्तु हमको रहने के लिये जगह तक नहीं दिया।

Errata.

अशुद्ध।	शुद्ध।
पृष्ठ ८ (No. 13) की १ पंक्तीकी फुट नोट मे, याने बिल्ल अर्थात् चूहा खानेवाली बिल्ली,—	याने बिल्ल अर्थात् घूंस खानेवाली बिल्ली
पृष्ठ०,४ की २० पंक्ती मे— एक भैरवीचक्र स्थापित किया,	याने (भैरवजी का चक्र वाम मार्गी स्थापित किया।)
पृष्ठ ४१ औरकी दूसरी पंक्ती में, रण्डि—	रन्डी।
पृष्ठ ६८ के चौपाई के बाद दोहे की ४ पंक्ती में, हितवानी बलदेव की सोहै मित्र हमार *—	यह मानो बलदेव की, सोहै मित्र हमार।
पृष्ठ ७१ की ८ पंक्ती में, सौकिया,—	शौकिया।
औ उस १८ पंक्ती मे, बिरादरीमे,—	बिरादरी मे।

अशुद्ध ।	शुद्ध ।
पृष्ठ ७४ की १२ पंक्ती मे, याने २५॥ वर्ष. से उसने यह अपने धर्मकी रक्षाकी है,—	याने २५॥ अर्जन (साढ़े पँचिस वर्ष से उसने अपने धर्म की यह रक्षा किया है, सो क्या? हमारी माताजी हमारी भावजेँ और मेरी स्त्री के हाथ की बनाई हुई रोटी नहीँ खाती है, और हमारे बिरादरी मे, यह दस्तूर रेवाज़ है, याने बहू बेटी के हाथ की बनाई दाल भात रोटी को सास ससुर नहीं खाते हैं, और हमारी माताजी का यह बिचार नेम है, कि याने मज़्बिन का बरतन मला धुवा हुवा को, अपने हाथ से दोबारह पवित्र पानी से मल धो करके तब उस पवित्र बरतन मे, अपने हाथ की बनाई रोटी को खाती है, वरना किसी दूसरे का बिश्वास याने इतबार नही, सुनते हैं कि राय लाला रामचरन दासजी साहिब बहादुर रईस इलाहाबादके गुज़र के वास्ते बिधवा फन्डमे से हमारी निज बड़ी माताजी को कुछ खरच माहवारी प्रयाग राज मे देते हैं।
पृष्ठ ७८ की दोहेकी ९ पंक्तीमें, एतबारहि	इतबारहि ।
पृष्ठ ७९ की २ पंक्ती मे, कलम,—	क़लम अथवा खु़रद क़लम्स याने दावात ।
पृष्ठ ८५ की (No. 38) के शेर की दूसरी पंक्तीमें। न चाहिये देना किसी मुक़ाल्लताबाजिब	न चाहिये देना किसीको मुक़ल्लता वाजिब
पृष्ठ ९१ की फुट नोटके बाद प्रथम पंक्ती मे, नौज़ान,—	मौज़ान ।
पृष्ठ ९६ की (No. 43) के क़सीदे के ९ पंक्ती मे. मेरि,—	मेरी ।

अशुद्ध ।	शुद्ध ।
पृष्ठ ९८ की १६ पंक्ती मे, होता मे,—	होता है ।
पृष्ठ १०१ की नसर के बाद ५ पंक्ती मे, अमर लोग,—	अमर लोक ।
अंजुम १२ पंक्ती मे, अर्थात् हीन बरण के पुरुष रखने का स्थान तपो भूमि,—	हिन्दु स्थान अर्थात् हीन नीच बर्णम् दूषयन्ति येते हिन्द वः तेषा स्थानं हिन्दु-स्थान,—इस हिन्दु स्थान मे हीन बरण कौन हैं ? याने जङ्गली कंजड पासी इत्यादिक लोगो का जानिये, क्यों कि यह लोग जोकी प्रात काल मे खेत की सफाई करता है, सो उस जानवर पशु को यह हीन बरण लोग कोई देवी को बलदान करके भक्षण करते हैं, इन से हीन बरण कोई मनुष्य संसार मे नहीं है ।
पृष्ठ १०२ की चौपाई और सोरठा का (No. 47) व (No 18),—	
पृष्ठ १०३ की १० व १८ की पंक्ती मे, बार—बाहर, -	बारह ।

और मैंने ६ बरस कई ज़िले गवर्मेन्ट ख़ज़ानोंमे, काम ख़ज़ाञ्चगरीका किया है, सो उस्का सार्टिफिकिट इस पुस्तक के पृष्ठ ३७ में, चिट्ठी जनाब राय लाला शिवप्रसादजी साहिब बहादुर की मुद्रित है, और इलावह इसके मैने ४ बरस इलाहाबाद बङ्कमें ख़ज़ाञ्चगरी का काम किया, याने २ बर्ष नैनीताल ब्रेञ्च में, हेड कैशियरी का और २ साल याने कलकत्ता ब्रेञ्चमें जानिये, सो इस्का सार्टिफिकिट मिनजानिब राय लाला रामचरन दासजी साहिब बहादुर रईस

इलाहाबादका मेरे पास बज़रिये डांक इजाज़े हासिल आना चाहिये, नैनीताल ब्रेंच में, जो मैने दो बरस काम किया था, सो उसका सार्टिफिकट मैंने नैनीताल के ब्रेंचके अफ़सरसे पाया था, लेकिन इलाहाबाद कलकत्ते ब्रेंचके पण्डितजी ने मांगने से नहीं दिया,—

उपदेश।

(No. 49) कवित।

पराई बहू बेटी (१दुर्जन निकालैं, करैं भ्रष्ट विधवा को रखनी बनावैं, (२ कमिटीके पञ्चों मे न्याय न भाई * पतुरिया के लड़के को घरमें जिलावैं, मुण्डन अनेक को रीत चलावैं, निरलज्ज कुलीन को लाज न भाई * बाज़ार में जाय करैं मुंह न काला, एकहि एक लखौ रण्डि लाला, क्यों न बिगाड़ैं बहिन निज भाई * अपनहिं आबरुह खूब बनावैं, दुसरे को इज्जत खाक मिलावैं, बलदेव सुनायके ज्ञान लखाई *

दोहा।

बसुधा से बुद्धी बड़ी, लखिये ज्ञान निधान *
उपदेशक बलदेव को, करहिं सुजन सनमान *

(१ सज्जनों के क्या लक्षण है ? याने पतिव्रताओं और विधवाओं स्त्रियोंके धर्म्मों की रक्षाके हेतु इन सब स्त्रियोंको धर्म्म-रक्षक लोग उपदेश सुनाते हैं, और इन सभों को उपदेशों के द्वारों से इन सब स्त्रियों को शिक्षा देते हैं, और सज्जन लोग जैसे अपनी मां—बहिन—बेटी—बहू समझते हैं, सो वैसेही पराई को अपने समान समझते हैं, और दुर्जन कण्टक पुरुषों के क्या लक्षण हैं ?

प्रमाण मनुस्मृति पृष्ठ ५२८) अध्याय ८का श्लोकार्थ यह है, सो क्या ?:- याने—जिस राजाके राज्यमें (१ चोर (२परस्त्रीगामी (३ * कठोरवादी (४ घर गांवके जलानेवाले (५ मारपीट करनेवाले नहीं रहते वह राजा इन्द्रलोक को प्राप्त होता है॥ ३८६॥ जो राजा इन पाँचों अपराधियों से अपने राज्यको शुद्ध कर देता है सो वह अपने तुल्य बड़े २ महाराजाओं के बीच तथा संसार मे यश पाता है ॥ ३८७॥ ऐसाही बचन याज्ञवल्क्य ऋषीने लिखा है, जिसकी मिताक्षरा टीका जगद्विख्यात है। अतः—याने जो स्त्री अपने धर्म्मको रक्षा करती है, सो उसके धर्म्मको कण्टक पापी लोग बिगाड़ कर नष्ट भ्रष्ट कर डालते हैं; याने कहार अहीर इत्यादिक जो शुद्र बरण हैं, सो इन लोगों में, यह दस्तूर है, याने जब स्त्रीका पति मर जाता है, तब बाद इस्के उस स्त्री को उस्के जातका दूसरा पुरुष बैठा लेता है, सो अब इस कलिकाल बरतमान में, याने खानदानी शरीफ अशराफ कौम कुलीनों के घरों में यह बात पैदा होने लग गई है, याने जो नीच शुद्र बरण लोग कर्म्म अधम का करते थे, सो अब ख़ास कर के ऊंच घरके लोग, यह बरतमान समय में, नीच कर्म्म करने लगे हैं, यह बात नवाबोंमें थी, कि एक दूसरे की बहू बेटियों को खल लोग बिगाड़ डालते थे, सो आगे पहिले इसके यह बात अङ्गरेज़ी राज्यमें न थी, और न कभी सुनाई देती थी, सो अब यह बात आंखोंसे देखलाई पड़ती है, याने जिस बिधवा स्त्रीने, अपना धर्म्म कर्म्मको त्याग करके, उस कुलीन बिधवाने, दूसरे पुरुष को अपने बिरादरी का पुरुष कुलीन बरणको शुद्र बरण की तरह से बैठा लिया होय, और

*(*) कठोरवादी कौन पुरुष कहलाते हैं ? याने जो लोग की दूसरे एक को मा बहिन की गाली देते हैं,—

उस विधवा स्त्रीके लड़का पैदा हुवा होवे, सो उस नाजायज़ बरण शङ्कर लड़के का मुण्डन और यज्ञोपवीत देवताके निकट प्रोहित लोग,. याने कुल पूज्य देवोंके निकट कोई देवकार्य्य नहीं करा सक्ते हैं, याने जिस विधिसे उसने बालक बरण शङ्कर पैदा किया है, सो उसी रीतसे उस स्त्री और उस पुरुष को मुण्डन और यज्ञोपवीत अथवा बिवाह इत्यादिक करना चाहिये,

(२ कमेटी धर्म्मको सभा का क्या नेम है ? याने धर्म्म और नीत की रक्षा करना चाहिये, और पापको प्रगट करके पापियों को नीत से दण्ड देना चाहिये, अब आज कलके ज़माने में, धर्म्म सभामें क्या न्याय होता है ? याने पापको छिपाते हैं, और नीत न्याय धर्म्मको त्यागते हैं, और नामवरीके वास्ते अनीत की रक्षा करके और अन्याय अहङ्कार के बस होकर फज़ूल बहुत सा द्रव्य व्यय करते हैं।

—:*:—

(No. 50) **हासा तमाशा।**

रामकचौड़ी किसने खाया ?
*ददिया हमारी सास गई स्वर्ग धाममें *
सुमिरा है मेरा नाम जो रोशन जहाँनमें*
राम कचौड़ी किसने खाया ?

(टेक ।)

जीता है यमके दूतको कठिन संग्राम में *
सौ बरस के निकट होके पहुंची धाममें *
राम कचौड़ी किसने खाया ?

---

* हमारे ससुर की सगी महतारीका इस निरत जीवनमें बुढ़िया का नाम प्राप्त हुवा।

अन्तरा ।

बैसाख शुक्ल अष्टमी को प्रातःकाल में *
सम्बत उनीस सौ को इकसठ के साल में *
राम कचौड़ी किसने खाया ?

अन्तरा ।

बैकुंठ लोक में गई बुढ़िया कयाम में *
बलदेव प्रसाद मेहरोत्र यह गाते हैं ताम में *
राम कचौड़ी किसने खाया ?

—···:※:···—

हमारे खुसुर अस्हाब लोगों का क्या नाम है ? सो हे भाईयो इन लोगों के नाम से मुझको नफरत है, सो जिन महाशयों को नाम तफसील बेहरे वार मालुम करना होवे, सो इस पुस्तक के पृष्ठ ७७ की २२ पङ्क्तीमें नाम मज़कुरों का देखने से इसतुल जैल साबित होसक्ता है, और जिन महाशयों को इन लोगों का दरशन करना होवे, सो यह लोग (Shiboo Thakoors Lane No. 19) के मकान मे रहते हैं, सो इन लोगों का दरशन करने से मनुष्य कृतार्थ होसक्ता है, इन लोगों से और मुझ से बोला चाली नहीं है, याने कब से।

दोहा ।

पौष शुक्ल की पञ्चमी, खिचड़वार दिन जान।
उनीस सौ अट्ठावनो, यह विक्रम परमान ॥

जब से मैंने श्रीभारतेश्वरीजी के स्वर्गवास विषय का पत्र मुद्रित करके संसार में अर्पण कियो है, तबसे यह लोग हमारे बलवान द्रव्याधीश धर्म्मके द्रोहियों से मिल करके मुझसे लड़ाई मोल लिया, सो हे भाइयो, मुझे भी लड़ाई झगड़ा को बहुत प्यारी मालुम होती है, सो क्या ? याने इन लोगोंने जब अपने लड़की की शादी मुझ से किया था, तब इन लोगोंने पांच हज़ार रुपये का मकान अपना खोद बेच करके किया था, सो हे भाइयो ! मकान खोद बेच करके शादी करने की क्या ज़रूरत थी, यदि अगर घर में बड़ कोम अपनी लड़की को देते तो

हम को दस हज़ार रुपया मिलता, और अगरचे बारह घर में अपनी कन्या को देते, तो बीस हज़ार रुपया कहीं से मिलता, यदि बावन घर में अपनी कन्या को देते तो बहुत सा गांव और रुपया मिलता, याने जैसा कि महराज बरदवानकी रियासत है, अढाई घरमें शादी करने की क्या जरूरत थी ? हमारा शाला (नं० २) का लड़का कई मरतबह घरकी रकम लेकर भाग गया, सो उसको इन लोगों ने इज्जत किया, और मैंने इसक़दर संसार में अपना नाम पैदा इज्जतकेसाथमें किया, सो हमारे शत्रु लोगोंने इर्षाके कारणसे, इन लोगों से हमारी हतक इज्जत कराया, खैर कुछ मुजाका नहीं, और मैं अपनी कन्या का कन्यादान लेने का अधिकारी नहीं हूं, क्यों कि मुझे इस संसारमें किसीका ससुर बनकरके रहना मनजूर नहीं है, हमारी कन्याका कन्या दान उसका नाना नानी लेने का अधिकारी है, अभी हमारे पास एक फटी कौड़ी नहीं है, जब मुझे प्रभु बड़ेलार्ड साहिब और प्रभु छोटे लाट साहिब से इनाम व इकराम देहली के खुशीके बारे में, हमारी मेहनत का महनताना प्राप्त होयगा, तब मैं जो कुछ मुनासिब समझूंगा, सो मैं निज कन्या के बिवाह का हक इलाहिदह कहीं जमा कर दूंगा, और मैंने अपनी स्त्री को दिल से त्याग किया, आगे जैसी राय सलाह और आज्ञा हमारी माताजी की होयगी सो वैसाही मैं करूंगा, हमारे निज लघु वुद्धी के न्याय को अमृत बिन्दु महेश भी नहीं काट सकते हैं, पुरुष की क्या गिन्ती है, और हमारे मामले में कोई शख्स दखल देने का मजाज नहीं है, सो हे भाइयो बिचार करने की बात है, सो क्या ? लोगोंने मुझसे कहा कि तुम्हारी ददिया सास बिमार है, सो व तमको रोज मेरी याद करती है, सो उसको देख आना चाहिये, खैर सो एक रोज मैंने इरादा जाने का किया, सो हमारे चचिया ससुर (No. 2) ने एक बड़े अजबह् के साथ में गीदड़ भभकी देखलाया, और क्रोध करके कहा कि कोई जरूरत देखने की नहीं है, और जब याने बुढिया मर गई, तब मुझे किसीने बुलाया तक नहीं, सो मुझे क्या ज़रूरत थी, सो मैं मुरदनी में जाता, इस लिये मैं भी खामोश होरहा, लेहाजा अब मुझे इन लोगों के घर का अन्न जल ग्रहण करना इस जिन्दगीमें मनजूर नहीं है, अगरचे यह लोग अब मुझे पूछें तो इन लोगोंको परवानगी नहीं दी जाती है ।

उपदेश ।

(No. 51) शैर ।

न मालो मता कुछ रहा पास में *
फक़त शिवको माला रखूं हाथ में *

चौपाई ।

खल पछते हैं औसर बीते * सिरधुनि मरहिं औते औते ।
निरलज्जन को लाज न आवे * अपकीरत ए अपजस भावे ॥

साँपको मार डालना और बच्चे को छोड़ देना, और आगको बुझा देना, और चिनगारी को छोड़ देना, यह काम अक़िलमन्दों के नहीं हैं *

दोहा ।

चिनगारी को छोड़िये, आगहि देइ बुझाय *
साँपको मारके फेंकिये, बच्चा लेइ बचाय *
बुद्धिमान कोई नहीं, चिनगी सापहि बाल *
सुनहु गोस बलदेवकी, मारकी डारे काल *

—···*···—

अत:—Jorasanko Calcutta Shib Kristo Daw's Lane No 2 के मकान में, L. बटुक नाथ, व B. बुधनाथजी पंजा जाती खत्री अटतिया रहते हैं * सो यह लोग हमारे (ससुर No 1)के परम मित्र हैं, सो इन लोगों ने मुझे ताना मारा, और यह मुझ से कहा कि तुम्हारी ददिया सास का ससरहा ता० 6—5—4 ई० को था, सो उस रोज़ बिरादरी की जेवनार राम कचौड़ी मिठाई इत्यादिकों की थी, सो हम भी जेवने को गये थे, और तुम्हारे ससुर के सगे भाई के लड़के का ब्याह था, सो ता० 10-5—4 ई० को सगाई हुई सो तुम्हारे ससुर लोगों ने ग़मी और ख़ुश ख़ुरमी मे तुमको काट करके रद्द कर दिया, फिर बाद इसके मैंने यह उत्तर दिया कि यह काम बहुत बहादुरी का किया, जोकि मेरा अपमान किया, सो मुझे इस बात का कुछ मालूम नहीं है, क्योंकि हमारे जन्म कुण्डली मे केतु षष्टम् स्थान में उदय है, सो इसका फल ज्योतिष सार ज्योतिष रत्न के अनुसार यह है, सो क्या? याने केतु ग्रह षष्टम् स्थान जन्म कुण्डली मे उदय होने से शत्रुवों का मान्य पूज्यनीय होता है, और शुक्र चतुर्थ स्थानमें मकर राशिका उदय है, सो उसका फल यह है कि हमारे सज्जन लोग बहुत से मित्र होंय, और बारहवें स्थान मे कन्या का राहु उदय है सो उसका फल प्रमाण चमत्कार चिन्तामणि के अनुसार यह है, सो क्या? याने खलों से मिलता होय, सो ये भाईयो हमारे दो प्रकारके मित्र हैं, एकतो सज्जन महाशय लोग और दूसरे खल लोग, याने सज्जन लोग अपनी भलाई से बाज नहीं आते हैं, अथवा यह लोग

हमारी भलाई चाहते हैं, और खल दुष्ट लोग अपनी दुष्टताई से बाज़ नहीं आते हैं, याने इन लोगों का ईर्षा और दुष्टता रखने का सुभाव है, सो प्रतक्ष फल यंक का देखिये सो क्या? ता० 11—5—4 ई० को श्रीमान् बाबू परसोत्तम दासजी खन्ना पगड़िया पट्टी हाथ मर्चेन्ट के यहां जेवनार थी सो इन महाशयने मुझे बहुत आगत स्वागत के साथ में, भोजन का निमन्त्रन दिया, और राहु का प्रतक्ष फल यह है कि (No. 1) हमारे ससुर के यहां जेवनार थी सो हमारा निरादर किया, और क्या किया याने इनके सगे भाई (No. 2) के लड़के की सगाई ता० 10—5—4 ई० को B, चि० मन्नूलाल मेहरोत्रा २॥ घर खज़ाञ्ची हाई कोर्ट वकील इलाहाबाद के सगे फूफाकेसगे बहिन्दोई के लड़की के लड़की से हुई, सो हमारे ससुरालवालोंने मुझे फड़ पर से काट दिया सो हे भाइयों, मुझे इस बात में बहुत आनन्द प्राप्त हुआ, याने जब हमारी ददिया सास इन्द्र मिरत लोक में थी, तब उसने मुझसे एक दिन एक कोठीमें वार्तालाप याने अपने लड़कों की स पूती बयांन किया, सो क्या ? याने इन लोगों के सगे बहिन्दोई बेकारी के हालत में, मेरे घर में आकर ठहरें सो इन लोगोंने अपने बहिन्दोई को बड़ी भारी बेइज्जती किया, तब वह बेकारी के हालत में अपने घर जाकर न मालुम क्या खाकर मर गये, सो हे भाइयो, यह मिरज़ापुर के शोरह पुश्त लोग अपने बहिन्दोई और नगद जमाई को नहीं मानते हैं, देवता लोग अपने जमाई की इज्जत करके अमीरी अथवा ग़रीबी में चरण पूजते हैं, और गँवार लोग पनहीं उठाते हैं मारने के लिये, सो हे भाइयो अङ्गरेज़ी धरम राज्य है, इस कारण से मैंने अपने प्राण को रक्षा पाया, नहीं तो खल और असुर शत्रु लोग मुझे चटनी करके भक्षण कर जाते, फिर मेरा नाम निशान भी इस संसार में न रहता, और (No. 1) हम से लड़ाई लड़के अपना कल्याण चाहता है, सो बहुत अच्छी बात है, सो क्या ? याने अब से यह कहता फिरता है, कि हमारी लड़की बिधवा होगई है, सो बहुत ठीक बात है, याने अब (No. 1) को हमेशा के वास्ते अब सबूरी करना चाहिये, और हमेशा अपने दिल में यही समझना चाहिये॥ और सुनते हैं कि (No. 2) के लड़के की शादी में हमारे सगे भाई के ससुर

साहिब और हमारे तइया ससुर लाला बचनलालजी भी अपने चचा ज़ात भाइयों के, अक़िल के दुश्मनी के वजह से ग़मी और शादी मे शामिल नहीं हुवे, सो हे भाइयो मैं इस संसार में अपना आत्म घात करनेवाला नहीं हूँ, बल्कि इस संसार में, मैंने औतार लिया है, याने दुष्टों कि दुष्टता दूर करने के लिये, और निज लेखनी के हाथों से अज्ञानता का मुख भञ्जन करने के लिये, इस संसार में जन्म लेकर आया हूँ, और मैं सत्यवादी हूँ, और (No. 1) व् (No. 2) व् (No. 3) यह तीनो महाशय पेशा दलाली का करते हैं, सो हे भाइयो! एक छोटा सा प्रमाण यह है, सो क्या? याने हज़ार में सौ रोज़गारी और दलाली पेशेवाले सत्यवादी निकलेंगे, और बाक़ी असत्य मिथ्या सौगन्ध खानेवाले अधर्मी झुठे निकलेंगे, क्यों कि अगरचे: यह लोग झूठ न बोलें, और मिथ्या सौगन्ध न खायँ तावक़े कि इन लोगोंको रोज़गार और दलाली पेशों मे नफ़ा न होय, और न फिर अदालत से भी सफ़ाई रहै, चूंकि अब मैं अपना यह फ़ैसला लिखता हूँ, सो क्या? याने अगरचे: (No. 1) व् (No. 2) व् (No. 3) अब यह लोग मुझे निज मुख ज़बाँन से जमाई कहैं और जमाई का नाता मानें, तो इन लोगों को दो हज़ार ठनाठन ठनठनाता हुवा डन्ड पर डन्ड किया जायगा, और इन तीनोंके लड़के लोग यदि मुझे अपना जीजा करके पुकारें और मुझसे यदि बहिन्होई का नाता रहेंगे, तो इन लोगोंको इस्का निस्फ़ डन्ड पर डन्ड किया जायगा और (No. 1) शत् की लड़की जोकि मुझे ब्याही है, सो यदि मुझ से यह अपने स्वामी पति का नाता रिश्ता रखैगी सो इस्को भी इसी मुवाफ़िक़् निस्का निस्फ़ो डन्ड पर डन्ड दिया जायगा, और इस्को खाने पीने की कुछ कमती नहीं है, क्योंकि इस अक़िल के दुश्मन की लड़की

का पिता और दो चाचा और ४ भाई परवरिश करनेवाले मौजूद हैं, और जब हमारे पास कुछ द्रव्य होयगा, तब मैं भी गुजारे के वास्ते जो कुछ मुनासिब समझूंगा सो देदूंगा, और जब यह (No. 1) की लड़की जब हमारे पास रही, तब यह हमारा रोज चरण धोकर पीती रही, अब यह सुनते हैं कि दो बरस से यह अपने महतारी और चाची का चरण धोकर पीती है, सो अब मेरा चरण धोकर के पीनेके लिये इसको इस जिन्दगी मे नसीब न होयगा,—

(No. 2) व (No. 3) से हल्फिया बजरिये तहरीर के जवाब तलब किया जाता हैं, सो क्या ? याने मैं (No, 1) का नगद जमाई हूँ, या नहीं ? और (No. 1) की सगी लड़की याने इन लोगों के सगे भाई भौजाई से भतीजी याने है या नहीं ? प्रथम मेरी सगाई एक बड़े भारी तअ्लुक़दार बिना तिलक के राजा पक्के चार घर में होती थी, और यह सबंन्ध पक्का होगया था, क्यों कि अढ़ाई घरवाले पक्के ४ घर की लड़की को ले लेते हैं, परन्तु अपने लड़की को देते नहीं हैं, फिर बाद इस्के (No. 1) और इनकी महतारी जो कि अपने पुत्र पौत्रादिक यम के दूतों से हमारे वास्ते संग्राम करके इस बारे में स्वर्ग लोग को पधारी है, सो (No. 1) हमारे ताऊजी के चरण पर जाय करके गिरा और यह बात कहा कि हमारा आप उद्धार कीजिये, फिर बाद इस्के हमारे ताऊ साहिबने साफ यह जवाब दे दिया कि हम एक सबन्ध तुम्हारे यहां करके बहुत पछताते हैं, सो हमको औरस पुत्रों को लड़की लेना मनजूर नहीं है, फिर बाद इस्के (No. 1) से (No. 3) तक की बुढ़िया महतारीने क्या किया ? याने हमारी माताजी के चरण मे गिर कर बहुत रोई, फिर बाद इस्के हमारी ताई और महतारी व चाचीजीने यह सबन्ध को स्वीकार कर

लिया, और तमस्सुकेदार बिना तिलक के राजा का सर्वस्व को वापस कर दिया, सो हे भाइयो मुझ से मिर्जापुरिन की धुत्ताई न चलैगी, सो क्या ? याने यह कपूर कै बेचनेवाले कपूर के सुभग कपूर में हम शिवजी के निकट दियासलाई लगानेवालि हैं, क्योंकि शिवजी के लिङ्ग का इस संसार में बहुत भारी महातम है, याने सभी लोग शिवजी के लिङ्ग को पूजते हैं, और श्रीशङ्कराचार्यजी के लिङ्गाष्टक कृत का लोग सदैव नित शिवजी के लिङ्ग के निकट पाट करते हैं, और मैं यह सुनता हूं की हमारे शिवजी के लिङ्ग को पूजन (No.'2) से परयन्त (No. 3) के लड़के लोग खूब प्रेम के साथ मे, पाट और पूजा करते हैं *

—०—

श्री तुलसी कृत रामायण का प्रमाण यह है, सो क्या ? याने—चौपाई—शूद्र गंवार ढोल पशु नारी * यह सब ताड़न के अधिकारी * नारि बिबस नर सकल गोसांई * नाचहिं नर मरकट किय नाईं * एक रोज़ मैं एक गली के सड़क मे चला जाता था, सो मैंने क्या देखा ? याने पांच चार लड़के लोग खेल मे यह कह रहे हैं, सो क्या ? याने साहिब गुलाम, तेरी बीबी सलाम * यह बात सुन करके मुझे बहुत हंसी आई, सो हे भाइयो मै अपने निज माता का इकलौता पुत्र हूं, मुझे वैरी के लड़को से मोहब्बत नहीं है, बल्कि मुझे निज वृद्ध माताके चरण से स्नेह है, गैर शख्स लोगोंने मेरा सनमान किया, और अपने खास लोगोंने मेरा अपमान किया, और हमारे साथ में, अंधर्मी सम्बन्धियों ने जो कुछ की बरताव किया है, सो ख़ास व नाकस इस बातको जानता है, और मै यह नहीं जानता हूं

कि हमारी सब माताजी के साथ मे, प्रयाग राज मे अपनी सम्ब-न्धियों नाते दारोंने कैसा बरताव रक्खा है, इलाहाबाद ही मैंने अपने मित्रों को चिट्ठी रवाना• किया, सो एक साल का अरसा होता है सो इन लोगोंने मेरे चिट्ठी का उत्तर तक नहीं दिया, सो मेरे पास बजरिये डांक हाज़ाके जवाब आना चाहिये, तफसील ज़ैल मुन्दरजे बेवरेवार नामवर मित्र महाशयों से यह है सो क्या ? याने एक बड़े दुःखके साथ मे, यथार्त जवाब तलब किया जाता है, सो क्या ? याने ऐसे विद्वान बुद्धिमान होकर के हमारे चिट्ठी पत्रो का जवाब क्यों नहीं दिया, नाम बेवरेवार इन सब महाशयों को शिघ्र उत्तर देकर, डांक के द्वारा से हमारे पास भेजना चाहिये, श्रीमान् P. मदनमोहन माल्वी वकील हाईकोर्ट इलाहाबाद श्रीमान् चि० B. अमीर बहादुर श्री वास्तव कायस्थ A. M. वकील हाईकोर्ट—व चि० B. नवाब बहादुर A. F. श्रीमान् L. जय जय राम टण्डन •२॥ घर सीनियर क्लर्क टेलिग्राफ आफिस इस्टेशन इलाहाबाद— श्रीमान् चि० B. रामकिशुन टण्डन २॥ घर क्लर्क इलाहाबाद बहु यह मेरे सगे ताऊ के साले का लड़का है, सो इन लोगोंने हमारा अपमान क्यों किया ? और हमारे चिट्ठी का उत्तर क्यों नहीं दिया ? जब मैं अङ्गरेजी पढ़ता था तब एक रोज़ हमारे ताऊ हरी राम स्वर्ग निवासीजो जब इस मिरत लोक में थे, सो एक रोज़ हमारी ताई साहिबह से खफ़ा हुवे, और यह कहने लगे कि तुम इनको अङ्गरेजी पढ़ाती हो, सो मैं यह कहता हूं कि इसकी बुद्धी भ्रष्ट हो जायगी, सो हे भाइयों यह बात मुझे याद आई सो क्या ? याने अङ्गरेजीदां लोग मुरौवत मे कसा बट्टू लगाते हैं• और मैं अपढ़ मौलिक भी पास नहीं हूं, परन्तु मैंने मित्र बन्धु बुद्धी के अनुसार से याने सज्जन पासवाले महाशयों से मैंने धन्यवाद के

करके इस संसार मे छोड़ दिया, यह प्रताप हमारे जन्म कुण्डली के चतुर्थ स्थान में शुक्र ग्रह का फल है ॥

—*—

विदित हो कि जब (No. 1) व (No. 2) व (No. 3) से और हम से झगड़ा हुवा, तब हम अपनी सहायता के वास्ते श्रीमान् L. दामोदर दासजी साहिब कलकत्तिया टन्डन उर्फ राजा बाबू कलकत्ते की खत्री सभापति के पास हाजिर हुवे, तब इनका मुसाहिब B. बटुकप्रसाद टन्डन १२ घर क्लार्क डेडलेटर आफिसने दरवान से मना कर दिया, कि इनको न आने देना एक रोज़ मैं आपको मुलाक़ात के वास्ते आपके दौलत खाने (No. 55) बड़ा बाज़ार की कोठी में गये, सो दरवान लोगोंने मुझे नहीं जाने दिया, और फिर बाद इस्के मैंने बज़रिये डांक द्वारा के चिट्ठी में यह समाचार भेजा, सो हमारे पास जवाब नहीं आया, सो क्यों ? याने मेहरवानी में कुछ ताक़त अगरचे: होती तब मेरे पास जवाब आता, इस लिये हमारे जवाब को L. मौलूक साहिब खा बैठे, राम २ राम यह रईसों और अमीरों के धर्म नहीं हैं, और इलावह इस्के क्या है ? याने B. B. प्रसाद की और हमारी नातेदारी यह है, सो क्या ? याने श्रीमान् B. गोपाल कृष्ण मेहरोत्रा वाके अढ़ाईघर खत्री खत्री B. B. प्रसाद के सगे बूवा के पोते हैं, और इनकी सगी भांजी हमारे सगे भतीजे को ब्याही है, सो हे भाइयो ईश्वरने हमारा बतना ऊंचा दरजा किया है, सो यह लोग द्रव्य के अहङ्कार से हमारा ऊंचा दरजा मेटा चाहते हैं, और B. B. प्रसाद के साथ में, मैंने यह नेकी किया था, सो क्या ? याने इनकी पहिली शादी मैंने मुज़फ्फरपुर में करा दिया था, और दूसरी

शादी मैंने इलाहाबाद मे करा दिया है, इस बात को श्रीमान् बाबू सांवलदास टन्डन मिरजापुरिया पक्के ४घर क्लर्क इलाहाबाद बङ्क की बखूबी जानते हैं, सो B. B. प्रसाद टन्डन बनरसियाने इस कलिकाल बरतमान में, हमारी नेकीमें, लात मारकर फरामोश क्यों होते हैं, ? और ज़रा भी मुरौवत कु नहीं गई है, और कवे अढ़ाई घर साहिब मौसूफ बनारस के कलकत्ते में आयेथे, सो मैंने इनसे इस पुस्तक के बारेमे छपाई का चन्दा मांगा, सो आपने नहीं दिया, सो हमारी सहायता करना तो दूर किनार रहा, याने चन्दा तक नहीं दिया, सो क्यों ? हमारी बिरादरी से मुरौवत उठ गई है, अथवा संक्षेप कहीं २ साधारण है, सो मै आशा करता हूं कि कुछ दिन मे यह भी मिट जायगी,—

—⁂—

एक छोटा सा चुटकुला निमक मिरचे से पड़ पड़नेवाला क्या है ? याने जिन वैष्णव लोगों के कटरों में मछलियां काट २ करके बिकरी होती हैं, सो उस आमदनी के खरच में से, दस्तूरी लेनेवाले दस्तूर खोर लोग कौन २ हैं ? याने—B. B. Prasad मुशाहिब इत्यादिक लोगों को जानिये, और दस्तूर खोर लोगोंके पास रुपया आमदनीका विशेष इकट्ठा होजाने से, १२ घर और बांवन घरवाले, कुलीन २॥ घर बनना चाहते हैं, सो यह बात बहुत मुशकिल है, सो क्यों ? याने जैसे रुपये से तांबे पर मुलम्मा करने से, सोना नहीं होसक्ता है, वैसेही रुपये से बारह घरवाले, और बांवन घरवाले, अढ़ाई घर नहीं बन सक्ते हैं, और दस्तूर खोर लोगोंको मछलियों के मुनाफों के खरचों में से दस्तूरियां लेते २ बुद्धियां, अत्यन्त सुन्दर और पवित्र होगई हैं, सो क्यों कर ? याने दस्तूरखोर लोग अपने मतलब स्वारथ में प्रसन्न होकर मग्न होते हैं, और

पर स्वारथ उपकार में पश्चाताप करके नाना प्रकार के विघ्न छोड़ते हैं, सो क्यों कर ? याने कृपण लोग अपनाही भला चाहते हैं, परन्तु दूसरों का नहीं, और जिन २ वैष्णव लोगोंके कटरों में मछलियां काट २ परोख्त् होती हैं, सो उस ठाकुरद्वारे के आमदनियों के खरच में से, दस्तूर खोर लोग दस्तूरी का मुनाफा इकट्ठा करनेवाले अगोधो लोग इस संसार में हमारी लेखनी नीतका साम्हना रुपये के अहङ्कार से नहीं कर सक्ते हैं, क्या खरच में से आध आना रुपया दस्तूरी लेना, याने जिन २ वैष्णव लोगोंके कटरों में मछलियां काट २ बिकरी होती हैं, सो क्या आमदनी के खरच में से टका रुपया दस्तूरी लेना क्या मालिक को घाटा नहीं है ? अलबत्तह आमदनी के खरच में से आध आना रुपया घाटा दस्तूरी लेनेमें पड़ता है, सो हमारी रायमें यह है, सो क्या ? याने मछलियों की आमदनियोंके श्रीठाकुरद्वारोंके खरचों में से जो लोग टका रुपया दस्तूरखोर लोगोंके दस्तरियोंकी आमदनियां बंधी हुईहैं, सो मुनाफे में जमा होना चाहिये, ताकि दस्तूर खोर लोगों कि बुढ़ियां सुन्दर हो जावें, अत:—एक छोटा सा प्रमाण यह है, सो क्या ? याने बहुतेरे शूद्रों के यहां क्या रसूम यह है, याने विवाह के समय में जब कच्ची रसोइयां की जेवनार बिरादरी की होती हैं, तब येह लोग अङ्गरेजी बूट और पांचो कपड़ा पहिन कर तीन बजे रात्रिको कच्ची रसोइयां की पंगति पर भोजन करने को बैठते हैं, शास्त्र का प्रमाण यह है सो क्या ? याने ब्राह्मण और क्षत्री को ११ बजे उपरान्त रात में भोजन न करना चाहिये, और मदिरा मांस इत्यादिकों को भक्षण करके आँय-बाँय-साँय-शोर गुल मचाकर पत्तलों पर दुर्गन्ध करते हैं, और जब पिता की श्राद्ध होती है, तब एक पैसे का यज्ञो पवीत कलयुग के ठग

ब्राह्मण लोग इन शूद्रों को पहिना कर प्रतिष्ठा के साथ तर्पण श्राद्ध इत्यादिकों को प्रतिष्ठा कराते हैं, और यज्ञो पवीत पहिन कर यह अहङ्कार मारते हैं, कि मैं क्षत्रिय वंश मे हूं, सो बहुत ठीक बात है, सो क्या ? याने जो लोग कि बिबाह के समय अथवा तर्पण श्राद्ध इत्यादिको में यज्ञो पवीत पहिन कर क्षत्री बनने का दवा रखते हैं, सो यह लोग क्षत्री रुपये और बिद्या के बल से शूद्र से क्षत्री नहीं बन सक्ते हैं, जैसे कोई मुसलमान से हिन्दू नहीं होसक्ता है, देखिये जैसेकि ब्राह्मणों के मुन्डन यज्ञो पवीत शास्त्र के अनुसार से होता है, वेसाही हम सब खत्रियों के आठ व नव बरस की उमर में होता है* और जो लोग कि यज्ञो पवीत पहिनने के अधि· कारी नहीं हैं, सो वह लोग इस कलिकाल बरतमान समय में यज्ञो पबीत पहिन कर शास्त्र पुराण इत्यादिकों को इस संसार में बहुतेरे आर्य्य समाजी लोग निन्द्या करते हैं :—

—o—

अतः—और कलकत्ते के मुरादाबादी टन्डन २॥ घर हमारे ससुरावालों के नातेदार हैं, सो यह लोग चारो भाई हमारे बिपक्ष हैं, सो यह लोग श्रोतारा सुन्दरी देवीजी के निकटके करीब मकान (No. 53)मे रहते है, (No. 1)L. गौरी शङ्कर. (No 2) L. ठाकुर दास (No. 3) L. मुन्नीलाल (No. 4) L. श्यामदास याने यह लोग भी हमारे हितैषी नहीं हैं, क्यों कर नहीं हैं ? याने हमारे जन्म कुन्डली मे बुध मीन राशि पर षष्टम् स्थान में उदय है, सो इसका बरतमान फल समय प्रतिकूल से यह मिलता है, सो क्या ? याने प्रमाण लग्न चन्द्रिका पृष्ट ५५ श्लोकार्थ ५० का भाषार्थ यह है, सो क्या ? याने क्षुद्र भाइयोंका बैरी हो * क्षुद्र कौन हैं ? जो लोग कि हमारे मात्र पत्र उपदेशों के बिरोधी और हमारे द्रोही होकर हमारा निरादर किया है, सो वही लोग इस संसार में शूद्र के समान हैं, *

(No. 52) **पद।**

गर्भ करो ना प्यारे तनको यह सराय दुनिया जानो।
पर उपकार हृदय से राखो यह मेरा कहना मानो॥
ईर्षा हिंसा ताप को त्यागो अन्त समय का डर जानो।
लाख करोड़ बानवे स्वांसा पानी का बुल्ला जानो॥
ना घर मेरा ना घर तेरा सब माया सपना जानो।
बलदेव रामको भजले मन में ना कोई अपना मानो॥

—:*:—

(No. 53) **(नसर।)**

अनीत को लखिये कली मे पड़ी।
यह दुनिया धरम नीत से हैं खडी॥
क्या ? माया सताती है यारो बडी।
चलेगी हमेशा न दिल की घड़ी॥
रखो यारो नेकी सभो से बडी।
लखो नीत बलदेव की क्या कड़ी॥

———*———

जिन महाशयों को विशेष द्रव्यकी गर्मी दिमाग़में पहुंची होय, सो दिमाग़ की गर्मी को शान्ति करनेवाली हमारी यह दवाइया एक हफ़्ता इलाज सेवन करने से, याने दिमाग़ को मुक़ौवी तर बतर पहुंचानेवाली, है, सो क्या? याने मगज़ कद्दू, मगज़ पेंटा, मगज़ बादाम यह चारों एक तोला और दस दाना स्याह मिर्च और एक माशे काहू और आध पाव बनारसी चीनी और आध सेर कच्चा गौ के दूध मे कपड़छान करके रोज़ पीनेसे दिमाग़ के अज्ञानता की गर्मी शान्ति होजायगी, और दिमाग़ को हमारी यह दवाइया आज, मूदह विशेष फायदा मुफीद होयगी।

———*———

महाशयों—

बाज़ह होकि जब कि बृष्टी कलकत्ते मे बहुत भारी होती है, तब मछुआ बाज़ार के सड़क इत्यादिकों मे नाव, अर्थात् किश्तियों की ज़रूरत पड़ती है, सो है भाइयो मिसु-

सुपुल्टी किस मर्ज़ की दवा है, यदि पानी का निकास मिन्युसुपल्टी कलकत्ते की सड़कों में नहीं कर सकी है, तो मिन्युसुपल्टी को क्या करना चाहिये ? याने दरिया के नाव किस्तीयों का प्रबन्ध सड़कों में रखना चाहिये, कहां पर याने जिस सड़कों में पानी का निकास न होय

उपदेश।

(No. 54) **दोहा।**

(* कन्या छोटी व्याहिये, अठहिं बरस परमान *
नवहिं बरस की उमर में, बालक नीत बखांन *
रजकला से होत है, कन्या दसवें साल *
यह नीत बलदेव की, सुनिये सबै कृपाल *

(गज़ल।)

कहीं जगमें देखा है दुलहा बड़ा है।
क्या बुढे से कन्या का व्याह पड़ा है॥
कहीं यह भी देखा है दुलहिन बड़ी है।
अयमाल छोटे लड़के को पड़ी है॥
बिचारो यह यारो सुनो गौर कर।
प्रमाण को लखिये मेरे प्यारो सर॥
क्या ? दुनियां के फन्दे में जाल पड़ी है।
लखो नीत बलदेव की क्या कड़ी है॥

(* याने बहुतेरे बुढ़े लोग कन्या मोल लेकर के बिवाह करते हैं, सो हे भाइयो जो लोग कि कन्या खरीद करके बिवाह करते हैं, सो वह कन्या निज कन्या के तुल्य होगई, सो हे भाइयो ! कन्या मोल लेकर बिवाह करना याने बेचनेवाले को और खरीदनेवाले को इन दोनो को नर्क प्राप्त होता है, और कन्या को अपने से जो कुलीन हो सो उसको अच्छा बर और अच्छा घर देख करके देना चाहिये, क्योंकि कन्या और गौ दोनो एक समान जानना चाहिये, याने गौ को जिस खूंटे में बांधी जायगी, सो वह उसी खूंटे में बँधी रहैगी, सो इसी प्रकार से कन्या का प्रमाण भी जानिये *

इस पुस्तक की पृष्ठ ९७ (No. 44) की जो दोहे का प्रमाण (मनुस्मृतिः स० पृष्ट २३२) अथ पञ्चमोऽध्यायः—भा० ज्ञान तप अग्नि. अहार मिट्टी, मन वारि (जल) लेपन वायु, कर्म सूर्य काल ये देह धारियों की शुद्धि के कारण हैं—१०५—अन्वय पन्यानाम्न विशुद्धयंति सोम सर्याग्नु मरुतैः॥ ज्ञान आदि शुद्धि के कारण है, तिन में अमल्ज्ञान बुद्धिरूप अंतः करण को शुद्धि का साधन है, सोई आगे कहेंगे, कि बुद्धी ज्ञान से शुद्ध होती है, तप जैसे तप से वेदके ज्ञाता अग्नि जैसे फिर पाक से मिट्टी का पात्र अहार (भोजन) हवि की यवागू (लपसी) मिट्टी और जल, मनः (जैसे मनको जो पवित्र दीखे सो करै) संकल्प विकल्प रूपमन है, और निश्चय रूप बुद्धी यही मन बुद्धी का भेद है, और उपार्जन अनुलेपन मर्जन से घर कर्म जैसे अश्व मेध यज्ञ, अर्क सूर्य जैसे अशुद्ध के देखने से, सूर्य के दर्शन से शुद्धि काल (समय) जैसे ब्राह्मण दशदिन से, यद्यपि वायु की शुद्धि का हेतु मनुने नहीं कहा, तथापि इस विषय के वचनानुसार मानने योग्य हैं, कि चन्द्रमा सूर्य की किरण और पवन से मार्ग शुद्ध होते हैं—१०५—

---*---

ॐ ब्रह्मणे नमो नमः नमो नमः ब्रह्मणे।

श्रीमद्भगवद्गीताष्टादशोध्यायः॥ १८॥

श्लोकार्थः।

सत्व गुण जिनके मुख्य हैं, ऐसे को ब्राह्मण कहिये, और जिनके सत्वगुण लिये, राजसी गुण मुख्य हैं, ते क्षत्री कहिये, और जिनके तमोगुण लिये, राजसीगुण मुख्य हैं, ते वैश्य कहिये, और जिन के रजोगुण लिये, तमो गुण मुख्य हैं, ते शुद्र कहिये, तहां ब्राह्मण के जो स्वभाव के कर्म हैं, सो यह कहते हैं, हे अर्जुनः—

दोहा।

शम अरु दम तप शौच पुनि, क्षमा नम्रता भाव।
आस्तिक ज्ञान विज्ञान यह, ब्रह्मज कर्म स्वभाव॥४२॥

अर्थात्—

अत:—याने शमको कहते हैं, मनका निग्रह, और दमको कहते हैं, इन्द्रियन का निग्रह, और तपको कहते हैं, पूर्वोक्त शरीर का तप. और शौच को कहते हैं, अंतः करण को पवित्रता, और बाहिर शरीर का तप, और क्षान्ति को कहते हैं, क्षमा, और आर्जव को कहते हैं, नम्रता, और ज्ञानको कहते हैं, शास्त्र ज्ञान, और विज्ञान को कहते हैं, अनुभव, और अस्तिक्य को कहते हैं, शास्त्र पुराण और परलोक, यह सब याने सत्य हैं, ऐसी जिस्की बुद्धी होवे सो यही सब कर्म्म ब्राह्मण के स्वभाव लक्षण सेउपजते हैं ॥ ४२ ॥

श्रीकाशी निवासी बलदेव प्रसाद मेहरोत्र अढ़ाई वरस्य वर्म्मणः ब्राह्मण विषय उपदेशः कृतः,—

(No. 55) —* चौपाई *—

ब्राह्मण को है जगमे नौका * उत्तम बुद्धी कोमल जीका *
चारों बेद उचारहिं गीता * दया धरम अरु जानहिं नीता *
ब्राह्मण वही जो ब्रह्म को जाने * तीन काल की संध्या ठाने *
ब्राह्मण नित्य जो तर्पण करें * पार ब्रह्मको हिय बिच धरें *
नित बलि वैश्य विप्रके धर्म्मा * श्रीद्विजवर के यह सब कर्म्मा *
सकल शास्त्र को खूब बखाने * तनि को मन से लोभ न माने *
कथा पुराण आदि गुण गावें * धरम नीत उपदेश सुनावें *
पढ़े विप्र की सङ्गत कीजे * धरम शास्त्र सें मन्त्र को लीजे *

दोहा ।

श्रीद्विजवर को पूजिये, (*जुगुलहि जोरे हाथ ।
उपदेशक बलदेव यह, शीश नवावै माथ ॥

* दोनो ।

प्रमाण,—

प्रमाण:—मनुस्मृति: अथ तृतीयोऽध्याय: (पृष्ट १२०) श्लोकार्थ स० (पृष्ट१८४) अत:-भावार्थ:-यह है, सो क्या ? याने निंदित हैं आचरण जिनका और सज्जनोंके सङ्ग मे, एक पंक्ति भोजन करने के अयोग्य, हैं, इन नीच ब्राम्हणों (पूर्वोक्त काना आदि) को शास्त्र का ज्ञातादि जातियों में श्रेष्ट (ब्राम्हण) देव और पितरों के कर्म मे वर्ज दे, अर्थात् पूर्व्व जन्म के संचित पाप से प्राप्त हुवा काना आदि स्वरूप जिनका होय, और रोगी वा जिनके अङ्ग में, दाद, खाज, गर्म्मी, सुज़ाक़, मिर्गी आदि रोग, विद्यमान हों, वा पूर्व मे हो चुके हों, और अङ्ग हीन हों, जैसे काने, लूले, व लङ्गड़े, और कुष्टी आदि, ऐसे ब्राम्हण देवतां और पितरों के कर्म मे अयोग्य हैं, अथवा ऐसे ब्राम्हणों को गुप्त श्रद्धानुसार द्रव्य देना धर्म्मार्थ है, और एक साथ पङ्क्ति में, न खिलाना चाहिये, क्यों कि कुष्टी आदि को पङ्क्ति मे, जेवावने से पङ्क्तिवालों को घृणा प्राप्त होयगी, अत:—कर्म्मेण (भेंगा) जन्म का भाग्यवान होता है, परन्तु धर्म्मेण जनम का (भेंगा) भाग्यशाली नहीं जानिये, १६७—

—o—

उपदेश ।

(No. 56) चौपाई ।

लङ्गड़े कुबड़े टेढ़े कन्धे * कुष्टित वर्जित ब्राम्हण गन्धे ।
काने अन्ध बधिर तिरभङ्गे * ऋत्विज जापक विप्र कुढङ्गे ॥
चक चौंधे अरु रोग सताये * जापक दाद खाज खजुलाये ।
जे चाबहिं दुइ सेर चबैना * घुट पुट घुट किन बोलहिं बैना ॥
यह सब शास्त्र विरुद्धहि काजा * जानहिं द्विज अरु सुजन समाजा ।
द्विजनहिं को गुण पुराण गाई * वारहु विचार नीत से भाई ॥

दोहा ।

मनुस्मृती पुस्तक लखो, सुनियें सर्ब सुजान ।
उपदेशक बलदेवम को, लखियें नीत प्रमान ॥

......o.....

(No. 57) **चौपाई ।**

जो ब्राह्मण हल जोते बोई * करहु प्रणाम दूरसे सोई ।
जो ब्राह्मण अति करे ठगाई * करहु दन्डवत दूरसे भाई ॥
ब्राह्मण पढ़े न विद्या थोड़ा * कबहुं न मारहु भूलहि कोड़ा ।
कर्म्महिं नीच न उनसे लेंना * जो कुछ बने धरम लखि देना ॥
जो ब्राह्मण को होय न बोधा * कबहुंन करिये रिस भरि क्रोधा ।
दीन बचन से करहु प्रणामा * विप्र पधारहु निज तुम धामा ॥
ब्राह्मण करे जो कर्म्म कसाई * डण्डहि देहु नीत से भाई ।
मूढ़ विप्र से रहिये दूरो * कटुक बचन नहिं कहिये कूरो ॥

दोहा ।

अपढ़ विप्र को किजिये, दूरहि से परणाम ।
बलदेव को उपदेश यह, पूजहि ब्राह्मण नाम ॥

अपढ़ ब्राह्मणों के यह लक्षणादि हैं,—

(No. 58) **पद,—**

ब्राह्मण होकर ब्रह्म न जांना प्रोहितजी कहलाते हैं *
संध्या तर्पण अपढ़ न करते द्विज ठग देव पूजाते हैं *
सारसुत ब्राह्मण होकर मुख से गाली भयानक लाते हैं *
प्रोहित होकर जिजमानों पर सोंटा लेकर धाते हैं *
गांजा पीते चोरी करते जेहलखांने को जाते हैं *
कलयुग के हैं ठग परोहित बिरथा पांव पूजाते हैं *
खबीका अन्न पानी खाकर इधर उधर अठलाते हैं *
वेद शास्त्र नहिं लिखते पढ़ते बिरथा जन्म गंवाते हैं *

बचे रहो ऐसे प्रोहित से जग में कथा सुनाते हैं *
यह सब बातें मतलब की बलदेव हित लखाते हैं *

और इस (No. 58) का निज क्षत पद उपदेश अपने हस्ताक्षर द्वारा से लिख करके एक नकल इसकी मैंने प्रभु छोटे लाट साहिब पश्चिम उत्तराधिकारी की सेवा में भेजा था, जिसकी पहुंच इस पुस्तक के पृष्ट २१ में ता० १५ सितम्बर सन् १९०० ई० की रसीद चिट्ठी मुद्रित है, और इस लेखकी दूसरी नकल अपने हाथ से लिख करके जनाब चौधरी महादेव प्रसादजी साहिब श्रीवास्तव कायस्थ रईस आज़म तअल्लुक़ेदार मानपुर ज़िला मुज़फ्फर पुरके हवाले किया था, आप की कोठी इलाहाबाद स्थान अहिया पुर में क़ाबिल दीद दरशन के योग्य है, आप किसी शख़्स की शिफारिश नहीं करते हैं, आपने हमारे ऊपर मेहरबानी करके एक चिट्ठी शिफारशी महीना जौलाई सन् १९०० ई० में, अपने क़लम फ़ैज़ मुबारिक अदल से लिख करके इलाहाबाद के रानी के मन्डी के, राय साहिब बहादुर मौसूफ के नाम से मुझको दिया था, सो क्या ? याने लाला बलदेव प्रसाद माननीय पुरुष का अपमान अथ्वा निरादर न करना चाहिये, और इन पर आपको हमेशा के वास्ते मेहरबांनी रहना चाहिये, क्योंकि जो कुछ सलूक आप इनके साथ करेंगे, सो वह यहसान हमारे उपर होयगा, , और इन पर निगाह परवरिश की रखना चाहिये, सो हे भाइयो। मैंने यह चिट्ठी जनाब चौधरी साहिब मौसूफ की अपने हाथसे ख़ास राय साहिब मौसूफ बहादुर इलाहाबाद के रानी की मन्डीवाले के हाथ में हवाले किया था, फिर बाद इसके क्या हुआ ? याने राय साहिब बहादुर मौसूफने इस शिफारशी चिट्ठी को तिरस्कार करके एक बड़े गजबे के साथ में, कूड़े पर फेंक दिया, सो क्यों ? याने इस कलिकाल ज़माने में, जिसके पास एक सौ रुपया होता है, सो उसको एक बोतल का नशा होता है, सुनते हैं कि आपने अपने पिता के वफात के बाद याने लाखों रुपये हिस्से बख़रे में बहुतसी आयदात इस्टेट वग़ैरह को पाया है, इस सबब से आप अपनी दौलत के नशे में अथाह हैं, सो मैं यह आशा करता हूं कि हमारे सब सज्जन मित्र महाशय लोग इस अथाह तथा अज्ञान नशेको ज्ञानों से शिक्षा देकरके बख़ूबी इस मिरत लोक में, अमृत पान करेंगे और द्रव्यके अहङ्कार बलसे अबोधी लोग हमारी अनहित क्यों बिचार करते हैं? क्यों कि? ईश्वरकी धरम राज्य है, क्या हमारी नम्रता इस संसार में प्रसिद्ध नहीं है ? और हमारी नीत सीखनी के कारण से कोई अबोधी की दुष्टता तथा अज्ञानता मुझ से इस संसार में, न चलेगी, द्रव्य के अहङ्कार बल से कोई धर्त हमारी मेहनत को इस संसार में नहीं मेट सक्ता है,

जैसे रावण को राम के नाम से विरोध था, वैसेही हमारे मान पत्र उपदेशों से हमारे द्रोही लोगों को सैंगा हल को विरोध है, क्योंकि देवता लोगों के हृदय में, सदा ग्रान और गीत वास करती है, परन्तु असुर और खल लोगों के हृदय में, इससे उलटी वीपरीत की अज्ञानता जानिये, गीत में बलवान कौन ? जो महाशय इस संसार में न्यायधीश लोग न्याय को पसन्द करनेवाले हैं, क्योंकि मैंने दुसह दुःख सह करके इस संसार में, धर्म का सनमान किया है, यह बात हमारे उपदेशों के हारों से क्या संसार में, प्रसिद्ध नहीं है ?

(No. 59) दोहा।

सदा न बसुधा थिर रहै, सदा न जीवै प्रान ‐
नेकी बदी को जानिये, जगमें रहै सुजान *
मिथ्या सपना जानिये, मिरत लोक परमान *
उपदेशक बलदेव की, बानी अमृत जान *

....

इस पुस्तक के १२७ के (No. 55) के शब्दार्थ का निर्णय यह है, (शीश नवावै माथ) अर्थात् शीश – चांद याने खोपड़ी के ऊपर के भागको कहते हैं, और माथ – पेशानी अर्थात् मस्तक को कहते हैं।

प्रमाण,—

इस पुस्तक के पृष्ट १२५ के उपदेश (No. 54) का प्रमाण शिघ्रबोध प्रथम प्रकाश ज्योतिर्विल्काशिनाथिन बिरचित के अनुसार यह है—(प्र० १ भा० टी० पृष्ट १७)।

मूल।

गौरी अष्टाब्द कावापि नव वर्षाच रोहिणी *
दश वर्षा भवेत्कन्या अत ऊर्द्ध रजस्वला ॥ ५२ ॥

भावार्थ,—

अष्ट वर्ष में गौरी की संज्ञा जानिये, और नव वर्ष में रोहणी, दश वर्ष में कन्या संज्ञा जानिये, ताके उपरान्त रजस्वला कहते हैं * ५२ *

—:*.—

Errata.

अशुद्ध ।	शुद्ध ।
पृष्ट ७ की ईडिक्ष (No. 11) अवैया—	सवैया—
पृष्ट ५६ की गज़ल की (No. 26) की ७ पक्तीमें, यह करूंने की सभों में सङ्ग—	यह करूंनेकी सभों के सङ्ग।
पृष्ट ६७ No, 30 के ४ पंक्ती में, मणि—	मणी।
पृष्ट ७५ No. 31 के ३ पंक्ती में. श्रीऋषि—	श्रीऋषी।
पृष्ट ७६ की प्रथम पंक्ती मे, याने चश्म खोरा—	याने,—चश्म खोरा।
पृष्ट १०३ की १० पंक्ती मे, श्रीगुरु नानक शाह भी बहोरे खत्री थे—	यानेश्री गुरु नानक शाह यह भुजाई बेदी ५२ घर मे खत्री थे।
पृष्ट ११३ की १७ पंक्तीमें, व तुमको—	वह तुमको।
पृष्ट ११९ कीर पंक्ती में, इलाहाबाद से—	इलाहाबाद को।
ऐजन ६ पंक्ती मे महाशयों से—	महाशयों के।
ऐजन १८ पंक्ती में, नहीं—	नहो।
पृष्ट १२२ की १४ पंक्तीमें, दस्तरियोंकी—	दस्तूरियों की।
पृष्ट १२४ नम्बर के बाद प्रथम पंक्ति में, गर्म्मोंको—	गर्म्मों को।
पृष्ट १२६ के ५ व ८ व ११की पंक्तियों में होती, भौर उपाजन, सूय—	होती, और, उपार्जन, सूर्य।
पृष्ट १२८ की ७ व ९ की पंक्तियों मे, आमहण-जेवनाने—	आमहण-जेवावने।

(No.60) गज़ल ।

श्रीमन राम मेरा क्या वह सबको याद रखता है *
परखते लोग दिल से हैं चहल से न्याय करता है *
वह हर इक शख्स के दिलको बखूबी जान लेता है *
नहीं चलती किसी की है भले का साथ देता है *
ज़माने को हुवा है क्या जो नेकी नेक खोदेते *
जो बोते हैं मुझे कांटा उसे हम फूल बोदेते *
हमारी याद रखता है न उस्की याद हम रखते *
लखा बलदेवने माया जो उस्के शान मे कहते *

इस पुस्तक की पृष्ट ३२ से परयन्त मुद्रित पृष्ट १०४ तांईं यह लेख प्रभु वाइसराय की सेवा मे, ता॰ 12—4 ई॰ को (पोष्टाफिस खेंगड़ा पट्टी कलकत्ते) के (A. D.) रजीष्ट्री (No. 157) के द्वारा से रवाना किया था, सो जिस्का इकनालिजमेन्ट मैंने बज़रिये चिट्ठी (No. 12445) के साथ मे, हवाले ता॰ 31—5—4 ई॰ के बमोजिब लेटर (Presidency Post Master Sahib Calcutta) के द्वारा से (No. 157) का इकनालिजमेन्ट की नकल पोष्टाफिस का कृतार्थ किया, मै इस बात से पोष्टाफिसको आगाह करता हूं, सो क्या ? याने मेरे जन्म कुण्डली के समय का सूर्य पञ्चम स्थान कुम्भराशि से चलित होकर षष्टम् शत्रु के स्थान मे मीन राशि पर उदय होगया है, जिस्का फल चमत्कार चिन्ता मणि ज्योतिष के अनुसार यह पाया जाता है, सो क्या ? याने कलयुग के अन्याई अधर्मी भिन्न ठग लोग हमारे फायदे के बारे में, ठगई और चोरी करें, और यह अङ्गरेज़ी धरम राज्य इस कलिकाल की दुनियां में वरतमान विख्यात है, सो मै इस बात से पोष्टाफिस को बखूबी

प्रसिद्ध करता हूं, की हमारे नाम की चिट्ठी पत्री इत्यादिक इस कलयुग वरतमान समय प्रतिकूल में, गोलमाल न होने पावे, क्यों कि? अङ्गरेजी राज्य सतयुगके समय का है, और मेरा यह नित नेम है, सो क्या? यानि मैं रोजमर्रा चिट्ठी रसावों से दरियाफ्त कर लेता हूं, कि हमारे नाम की कोई चिट्ठी पत्री इत्यादिक तो नहीं है, क्या कारण है? कि हमारा यह पाकेट ता॰12—4—4ई॰ को रजिष्टर्ड (A. D. No. 157) का ता॰ 14—4—4 ई॰ को जनाब वाइसराय आलीजाह के खिदमत शरीफ मे डिलेवरी हुवा, सो इसका इकनालिजमेन्ट असली नहीं, बल्कि असली का नकली ता॰ 31—5—4 ई॰ की मुद्दत के बाद मुझे हासिल हुवा।

———o———

१०८) मीजान कुल टोटल इस पुस्तक के चन्दे छपाई ८५ पृष्ट की १०२ पुरुषों के बाबत की,—

॥) श्रीमान् बाबू चेतराम, रामबिलास अग्रवाला मलिक ष्ट्रीट No. 28 के मर्चेन्ट से ता॰ 18—3—4 ई॰ को पाया।

६) हरीसन रोड खेतमोहन देव मलिक की कोठी (No. 180) व (No. 90/3) के मर्चेन्ट आढ़तियों से पाया।

१) श्रीमान् बाबू कालूराम, सागरमलजी से पाया, ता॰ 18—3—4 ई॰।

॥) श्रीमान् बाबू घनश्याम दास, रामेश्वरजी से पाया ता॰ 14—5—4 ई॰।

॥) श्रीमान् बाबू कस्तूरीमल, गौरीदत्तजी से पाया, ता॰ 14—5—4 ई॰।

१) श्रीमान् बाबू उदयराम, मन्नालाल सूतापट्टी (No. 90/3) से पाया ता॰ 12—5—4 ई॰

१) श्रीमान् बाबू हरसुख राय, रामचन्द्र बागला जी से पाया, ता० 17—5—4 ई० ।

१) श्रीमान् बाबू भीमराज, मुरलीधर बागलाजी से पाया, ता० 17—5—4 ई० ।

१) श्रीमान् बाबू जीवनराम, शिवबक्सजी से पाया, ता० 22—5—4 ई० ।

॥) श्रीमान् बाबू रामनरायन, जयलाल मर्चेन्ट तूलापट्टी (No. 76) से ता० 21—3—4 ई० को पाया ।

॥) श्रीमान् बाबू भीखनचन्द राठी मर्चेन्ट सूतापट्टी गनेश भक्त के कटरा से ता० 21—3—4 ई० को पाया ।

॥) श्रीमान् बाबू घनश्याम दास जालान ब्रोकर चांदी बाज़ार के हरीसन रोड से ता० 24—3—4 ई० को पाया ।

१) श्रीमान् बाबू तेगासिंह पटने के हर मन्दिरवाले से पाया, अपर चीतपुर रोड (No. 385) ता० 27—3—4 ई० ।

२) कोठी शिवबक्स बागला तूलापट्टी (No. 132) के मर्चेन्ट अढ़तियों से पाया ।

१) श्रीमान् बाबू हरदेव दास, जानकी दासजी से ता० 28—3—4 ई० को पाया ।

१) श्रीमान् बाबू भागीरथ दास, फूलचन्दजी से ता० 1—4—4 ई० को पाया ।

१) श्रीमान् बाबू जादोसिंह भूमिहार ब्राह्मण कन्ट्राक्टर मिन्ट्-सुपुलटी कलकत्ता से ता० 28—3—4 ई० को पाया, मलङ्गा लेन (No. 31) कलकत्ता, निवासी मौजे भगवान पुर जिला मुज़फ्फरपुर ।

१) श्रीमान् बाबू हरसुख दास, दूलीचन्दजी से ता० 29—3—4

ई० को पाया, काली गोदाम मुक्लिल अफीम का चौरस्ता (No. 12).

१) श्रीमान् बाबू चैनरूपजी, संपतिराम चरमनी ष्ट्रीट (No. 9) से ता० 29—3—4 ई० को पाया।

२) सूतापट्टी के क्लाथ मर्चेन्टों से पाया।

१) श्रीमान् बाबू सुखदेव दास, रामप्रसादजी से ता० 30—3—4 ई० को पाया, (No. 76).

१) श्रीमान् बाबू गङ्गाप्रसाद, कन्हैयालालजी से ता० 10—5—4 ई० को पाया, (No. 56).

२) श्रीमान् राय बद्रीदासजी साहिब बहादुर मुकीम जौहरी रईस आज़म से ता० 30—3—4 ई० को पाया, हरीसन रोड कोठी (No. 152) कलकत्ता।

८) हरीसनरोड सदासुखका कटरा (No. 201)के क्लाथ मर्चेन्टोंसे पाया।

१) श्रीमान् बाबू नागरमल के जड़ीवाल से ता० 4—4—4 ई० को पाया, (No. 49)

१) श्रीमान् बाबू नरायन दास, बैजनाथ प्रसादजी से ता० 6—4—4 ई० को पाया, (No. 30).

१) श्रीमान् बाबू शिवदत्त राय, छोटे लालजी से ता० 6—4—4 ई० को पाया, (No. 104).

१) श्रीमान् बाबू पन्नालाल पेड़ीवालजी से ता० 12—4—4 ई० को पाया (No. 75).

१) श्रीमान् बाबू गोबिन्दराम रामेश्वरजी से ता० 12—4—4 ई० को पाया, (No. 103).

१) श्रीमान् बाबू बनसीधर, सागर मलजी से

ता० 16—4—4 ई० को पाया। (No. 63)

१) श्रीमान् बाबू भगवान दास, रामजी दास से ता० 24—4—4 ई० को पाया (No. 62).

१) श्रीमान् बाबू हज़ारीमल, दौलतरामजी से ता० 24—4—4 ई० को पाया, (No. 869).

भग्नड़ दूकान (No.30) युक्त दूकान (No. 65 व 66) भग्नड़ केजड़ीवाल—पेडी वाल। युक्त—केजड़ीवाल पेडीवाल और सतापट्टी की दूकान (No. 76) की याने यह सूतके मर्चेन्ट की आनिधे।

१) जगमोहनलैन (No. 9) बहुजीकी कोठीके गद्दीदारोंसे पाया।

१) श्रीमान् बाबू महताब राय, मानक रामजी से ता० २६—५—४ ई० को पाया।

१) श्रीमान् बाबू माधोराम, हरदेव दास दिल्लीवाले अढ़तियाजी से ता० २६—५—४ ई० को पाया।

२) बहिरापट्टी (No. 3) लालचन्द बलदेव दास की कोठी के गद्दीदारों से पाया।

१) श्रीमान् बाबू रूपलाल, ज्वाहिरमलजी से ता० २७—३—४ ई० को पाया।

II) श्रीमान् बाबू लालचन्द, बलदेव दासजी से ता० ३१—३—४ ई० को पाया।

II) श्रीमान् बाबू हरदेव दास, रामरिखजी से ता० ३०—५—४ ई० को पाया।

१) श्रीमान् बाबू रामप्रसाद, ईश्वरदासजी से ता० २५—५—४ ई० को पाया।

२) मल्लिक की कोठी सूतापट्टी (No. 90) से पाया,

१) श्रीमान् बाबू खेतसीदास, बीजराज क्लाथ मर्चेन्ट जी से ता० १४—४—४ ई० को पाया,

१) श्रीमान् बाबू मखमलाल, बजरङ्गलाल गद्दीदार जीसे ता० 7—6—4 ई० को पाया,

॥) श्रीमान् बाबू सीतावचन्द ढाड़ेवालजी से ता० २८—४—४ ई० को पाया, पचागली मुत्तिल आरमनीष्ट्रीट (No. 65/2)

१।) आरमनी ष्ट्रीट (No. 7/1) के क्लाथ मर्चेन्ट गद्दीदारोंसे पाया।

॥) श्रीमान् बाबू भीमराज, कस्तूरचन्द जीसे ता० 25—4—4 ई० को पाया।

॥।) श्रीमान् बाबू रुकमानन्द, बिरधीचन्द जीसे ता० 7—6—4 ई० को पाया।

१॥) आरमनी ष्ट्रीट (No. 42) के क्लाथ मर्चेन्ट गद्दीदारोंसे पाया।

१) श्रीमान् बाबू राउतमल, ताजमल जीसे ता० 18—4—4 ई० को पाया।

॥) श्रीमान् बाबू उदयचन्द, पन्नालाल जीसे ता० 16—5—4 ई० को पाया, हरीसन रोड, (No. 203)

१॥) आरमनी ष्ट्रीट (No. 33) के क्लाथ मर्चेन्ट गद्दीदारों से पाया।

१) श्रीमान् बाबू जैसराज, गिरधारीलाल जी ओसवाल से ता० 15—6—4 ई० को पाया,

॥) श्रीमान् बाबू पन्नाचन्द, बख्शीराम ओसवाल जीसे ता० 21—6—4 ई० को पाया।

१॥) मलिकष्ट्रीट (No. 16) मुत्तिल अफीमका चौरस्ता के गद्दीदारों से पाया।

१) श्रीमान् बाबू शिवदास, लाभचन्द जोसी ता॰ 18—4—4 ई॰ को पाया।

॥) श्रीमान् बाबू शिवदास, सगुनचन्द जोसी ता॰ 18—4—4 ई॰ को पाया।

॥) श्रीमान् बाबू थानसिंह, करमचन्द गद्दीदार ओसवाल जोसी ता॰2—5—4 ई॰ को पाया, पचागली कोठी 65/3 मुतसिल अरमनी ष्ट्रीट।

॥) श्रीमान् बाबू रामकिशुनदास, किशुनगोपाल क्लाथ मर्चेन्ट जोसी ता॰ 15—4—4 ई॰ को पाया खेंगड़ा पट्टी (No. 105)

२॥) पगड़िया पट्टी के क्लाथ मर्चेन्टों से पाया।

१) श्रीमान् बाबू हजारीमल, मदनगोपाल गद्दीदार जोसी ता॰ 17—4—4 ई॰ को पाया, (No. 7)

१) श्रीमान् बाबू भीखमचन्द, सुजानमल जोसी ता॰ 18—5—4 ई॰ को पाया (No, 11)।

॥) श्रीमान् बाबू गनपतराय खेमका जोसी ता॰ 24—6—4 ई॰ को पाया (No. 11)।

१) श्रीमान् बाबू केदारनाथ, तनसुखराय गद्दीदार जोसी ता॰ 24—4—4 ई॰ को पाया, अरमनी ष्ट्रीट (No. 12)

१५१॥) मीज़ान कुल टोटल रुपये की, यानी १५२ पुरुषों से चन्दा वसूल पाया।

श्री १०८ कृपा सागर श्रीमान् मशोदय सर्वोपरि विराजमान्
भारतेश्वर प्रभु सप्तम एडवर्ड सम्राट् अभिनन्दन
प्रतापमान् जयतिः,—

(No, 61) **क़ाफ़िया ।**

दुनियां का आफ़ताब है रोशन अफ़लाक पर *
लिखूं सिफ़त बयांन शाहके शान पाक पर *
भारतके शाह आली की मोहब्बत जहांन पर *
धरम से राज करते हैं भारत माहांन पर *
पीते हैं पानी शेर बकरी एक घाट पर *
अदल हमारे शाह की है राज पाट पर *
इक़बाल खुशनसीब है दुनियां के सिरे पर *
यह गाते हैं बलदेवप्रसाद (१मिहरोत्र (२ अढ़ाईघर *

———*———

(१ अमर कोषस्य प्रथमं काण्डम् (दिग्वर्ग.) श्लोक—२९—

भास्वद्विवस्वत्सप्ताश्वहरि दश्वोष्णरश्मय. ।

विकर्त्तनार्कमार्तण्डमिहिरारुणभूषण ॥ २९ ॥

मिहरोत्र अन्वय—अत मिहरोत्राह,—अह अत्र मिहरा = अर्थात्—सूर्य्यवंशी—

क्षत्री शब्द का अपभ्रंश खत्री जैसे. क्षेत्र, खेत,,—अक्षरक्षा—अक्षरखा—

(२और में मिहरोत्र अढाई घर नथखोल ललुवाना खत्री हूं, नथखोल से तात्पर्य्य यह है, सो क्या? यानि हमारे कुल मे जब स्त्री के लडका पैदा होता है, या लड़की पैदा हुई, तब फिर बाद इसके वह औरत नाक मे नथुनी नहीं पहिंनती है, और कन्या दान देनेके समय मे, यानें कन्याको नाकमे नथुनी नहीं दी जाती है, क्योंकि हमारे नथखोल कुलमे यह सती का आन है, और ललुवानेसे मतलब यह है कि, यानें किसी शाही ज़मानेमें, ललूमल, जगद्धर, भीम, बल्ली-सरहिन्दके निवासी, यह चार भाई मिहरोत्र वंशमे सगे भ्राता थे, सो उस ज़मानेमे बहुतसे खत्री लोग फौज मे नौकर थे, फिर बाद इसके बहुत से खत्री लोग जबकि लड़ाई में मारे गये,

जब फिर बाद इसके उस ज़माने के बादशाहने मुल्का खत्रियान लोगों की लावारिशान नौवजवान खत्रानियों के वास्ते पुनर बिवाह का हुक्म ज़ालिम सादिर किया गया था, सो लल्लूमल और बन्नी†सरहिन्दके उस समयमें इनलावारिशान बिधवावों के प्राण और धर्मको रक्षा किया था, और बादशाह के दस्खत हुकुम जारी को नीत प्रमाण से रोका था, सो हे भाइयो ! मैं लल्लूमल की बंशावल्ली की शाखा में उत्पन्न हूं, और इस संसार में यह मैं बलदेव प्रसाद मिहरोत्र २॥ घर बिधवावों के प्राण धर्मका रक्षक नीत से उपदेशक इस मिरतलोक में, बिख्यात हूं, और उस ज़माने में, लल्लूमल और बन्नीसरहिन्दकेने बिधवा के पुनर बिवाह पर दस्तखत नहीं किया था, इस कारण से लल्लूमलजी और बन्नीसरहिन्दजीकी बंशावलीकी शाखा मिहरोत्र २॥ घर कुलीन कुलमें बोले जाते हैं, और भीम और जगद्धर इनदोनों भाइयों ने बिधवा के पुनर बिवाह पर दस्तखत कर दिया था, सो इन दोनों की बंशावली ४ घरमें बोली जाती है, याने जगद्धर की बंशावल्ली कनौज के मिहरे पक्के ४ घर में बोले जाते हैं, और भीम की बंशावल्ली पक्के ४ घरके शनीचरहे मिहरे बोले जाते हैं, और हमारे प्रपितामह अर्थात् पर बाबा हकीकी दो भाई सगे थे, सो यह दोनों भाई याने लाला हरकिशुनशाह व लाला जीकिशुन शाह लाहौर से आनकर श्रीकाशीजी में अपना श्रीकाशी निवास किया था, सो अपने प्रपितामह अर्थात् परदादा लाला हरकिशुनशाह स्वर्ग निवासीजी की बंशावली की शाखा में, याने मैं उत्पन्न श्रीकाशी निवासी बलदेव प्रसाद मिहरोत्र २॥ घर निज जन्म कुण्डली के तुला लग्न से चतुर्थ स्थान में शुक्र ग्रह उदय प्राप्त स्थिर होनेसे, प्रमाण चमत्कार चिन्तामणि ज्योतिष के बरतमान फल के अनुसार मैं सब पुरुषों से अधिक माननीय पुरुष इस मिरतलोक में, शरीर धारण करके चारों दिशाओं में प्रसिद्ध हूं,—

पुराचीन प्रमाण नवीन संग्रह की कविता पुस्तक का यह है, सो क्या ? याने—

कवित ।

रूठे क्यों तू ? जन जान मनमें, बिकार सबै जात पात रूठै दुख दाइये। रूठे राव राना, सबै जाना वही ठौर होमें, रूठे जो परोसी ताहि मनमें न लाइये॥ रूठे परिवार यार, सारा संसार, औकबीर

† सरहिन्दका अपभ्रंश शिवनन्द ।

शूर पण्डित रविदत्त नामकाइये। ये ते सब रूठे जाय, चूमेंगी अंगूठी मेरी, एही रघुनाथ एकतें न रूठा चाहिये॥

पुरा चौथा प्रमाण यह है, सो क्या? याने—

गज़ल।

ज़रसे गुले कागज़ गुले तर हो नहीं जाता *
हरकत्‌रये नाचीज़ गौहर हो नहीं जाता *
मिस पर जो मुलम्मा होतो ज़र हो नहीं जाता *
सैकल से कुछ आयना भी क़मर हो नहीं जाता *
जिस हाथ असा हो उसे मूसा नहीं कहते *
हर हाथको आकि़ल इदे बैज़ा नहीं कहते *
गर फ़ुक़्र हो आली नसबों पर नहीं जाती *
दौलत नहीं इनसान की कुछ क़द्र बढ़ाती *
आकि़ल का दुश्मन रुतबह् से आली नहीं होता *
इज़्ज़त व ख़ज़ाना है कि ख़ाली नहीं होता *

——:*:——

श्रीकाशीनिवासी बलदेवप्रसाद मिहरोत्र २॥ घर बर्म्मणस्य उपदेशम् कृतम् अर्थातु—

(No. 62) दोहा।

रुपये से होता नहीं, फूलहि असिल गुलाब।
तरी न उतरे कागज़ पर, जैसी कुदरत आब॥१॥
मेहँ झरी कितनों पड़े, बहे धराधर खेत।
स्वातिक बूंद गिरे जब, सीपहि मोती देत॥२॥
तांबहि सोन न होत है, होय मुलम्मा ख़ूब *
असली है सो असिल है, नकली बने अजूब॥३॥

कृलई करने से लखो, होत न दरपण इन्दु ॥
उपदेशक बलदेव को, जानत हैं सब हिन्दु ॥४॥
हज़रत मूसा होय नहीं, घेतो यारो फेर ।
जो राखै निज हाथ में, आसा बल्लभ टेर ॥५॥
रोशन कबहुँ न जानिये, अन्डा रवी समान ।
बलदेव की कर लेखनी, जस उपदेश बखांन ॥६॥
ख़ानदानि शरीफ मन, जो नर होय फक़ीर ।
लखवांनी बलदेव की, इज्जत नहीं हकीर ॥७॥
धनी यदी धनवान है, जो नर होय गँवार ।
कहते हैं बलदेव यह, इज्जत दार न यार ॥८॥
क़तबहि से साहिब नहीं, निरबुद्धी हैवान ।
उपदेशक बलदेव की, (१ इज्जत विदित जहांन ॥९॥
रन्डी पुत्रन को लखो, सुन्दर होत ख़ूब ।
यह सुनीत बलदेव की, परखहु सब महबूब ॥१०॥
आदम से यह जानिये, सृष्टी है संसार ।
श्रीराम बलदेव भजो, निरमल ज्ञान विचार ॥११॥

—०—०—

धन्यवाद इस वरतमान समय के श्रेष्ट पुरुषोंको मेरी यह है,—

सो क्या ? याने—श्रीमान् सर्व पूजनीय गोविन्दनरायणजी उर्फ मानिक लालजी मिश्र आप सारस्वत ब्राह्मण हैं, और जामदग्न्य, वत्सगोत्रमे उत्पन्नहैं, और आप शुद्ध चित्तजीके विद्वान और बुद्धिवान और धर्म्मवान हमारे कुल पूज्य और लहौरिये खत्रियोंके प्रोहित हैं,

(१ प्रमाण इस पुस्तक के ७४ पृष्ट की १७ पंक्ती को पढ़ कर लखिये ।

और आप नित नेम धर्मसे सन्ध्या तर्पण बलिवैश्य इत्यादिकींको स्वीकार किये हुवेहैं, और आप कर्म्म काण्डमें विशेष निपुणहैं, और आप एक पुस्तक ब्राह्मणों की उत्पत्ति विषयकी सारस्वत सर्वस्व तैयार कर रहे हैं, सो मैं यह आशा करताहूं कि यह पुस्तक जबकि तैयार होकर मुद्रित संसार में प्रकाशित होजायगी, सो यह पुस्तक सर्वत्र प्रशंसनीय प्रमाण से विख्यात होयगी, और आपका शुभस्थान सूतापट्टी क्रास स्ट्रोट, (No. 65) के निज खास मकान में विराजमान होकर सोभायमान हो रहे हैं, सो मैं ऐसे श्रेष्ट ब्राह्मणों को प्रमाण नित नेम प्रेम से करता हूं।

———

और हमारे खास कुलपूज्य प्रोहित गुरु श्रीमान् मकुन्दीजी जेतली सारस्वत ब्राह्मण चारों वेद के वक्ता थे, और आपका हमेशा दिन पूजन पाठ इत्यादिकों में व्यतीत होता था, और आप उर्जुवेद अपने पाठकों को निज खास मकान में श्रीकाशीजीके श्रीत्रीलोचन महादेवजी के मन्दिर के सामने विराजमान होकर पढ़ाते थे, और आपकी अवस्था सौ वर्ष के निकट थी, सो हमारे गुरुजी का पार-साल श्रीकाशीजी में स्वर्गवास प्राप्त हुवा, और आप अपने चितजी से बहुत विशेष प्रशंसनीय शुद्धसारस्वत ब्राह्मण थे, और आपका ब्रह्म और सन्यास ध्यान था,—

(No. 63) दोहा।

शुद्ध जेतली गेह बिच, विदित मकुन्दी लाल *
काशी में तन छोड़ के, पहुंचे स्वर्ग दयाल *

———

श्रीमान् गोपीनाथजी झिंगरन सारस्वत ब्राह्मण जन्म भूमि लखना पुरी और मिरज़ापुर निवासी आप भी इस समय के

अनुसार पूजन पाठ निज कर्म में, श्रेष्ठ हैं, और आप बरतमान इस समय में, श्री प्रयाग राज्य के चौक की कोतवाली के निकट स्थान रानी के मन्डीके निज खास मकान में विराजमान हैं, और आपकी अवस्था निकट ७० बरस के होती है, और आपके तनुज पुत्र आज्ञाकारी श्रीमान् पन्डित कुञ्जबिहारी लाल उर्फ टिन्डल क्लर्क रेलवे इलाहाबाद के माल गुदाम के काम पर हैं, और श्रीगोपीनाथ प्रोहितजीने, मुझे बचपन में अपने खास गोदी में खेलाया है, और जब मैं इलाहाबाद में था, तब यह पिता और पुत्र यह दोनो महाशय मुझे बहुत मानते थे, परन्तु मेरे समय प्रतिकूल के कारण से, आप लोगोंने भी, मेरी चिट्ठी का उत्तर मेरे पास डाकके द्वारा से नहीं भेजा, सो क्या कारण है ?

———

*श्रीमान् सर्व पूजनीय श्रीयुत बेनीमाधो चौबे ब्रोकर कम्पनी पेपर न्यू चीना बाज़ार कलकत्ते के श्रीपिता श्रीयुक्त मान् रामगोपालजी आप शुद्ध चितजीके ब्राह्मण धर्म्म रक्षक सर्व पूजनीय मथुरिया घरबारी धौमगोत्र में उत्पन्न ज्ञानी पन्डित विद्वान हैं, और आपका जन्मस्थान मौज़ा कमतरी तहसील व् ज़िला आगरा है, और आप बरतमान कलकत्ते के सिकधर पाड़ा ष्ट्रीट (No. 40) के मकान में, श्रीकाली तारासुन्दरीजी के मन्दिरके निकट शोभायमान हैं, और आपका जन्म संवत १९०० बिक्रमी में हुआ है, और आप अपने कर्म्म काण्ड में विशेष शुद्ध और निपुण हैं, और आप इस वृद्ध अवस्था में, सदैव श्रीगङ्गाजीका स्नान ध्यान दो बजे रात के समय में, बारहों मास का व्रत धारण करने वाले हैं, फिर बाद

---

*इस पुस्तक के १४० पृष्ट की (No. 61) के कालिका के ८ पंक्ती में अशुद्ध—यह गाते हैं। शुद्ध—यह कहते हैं।

इसके दो बजे रात से परयन्त—१२—तथा १ बजे दिन तक आपका निज पूजन पाट इत्यादिकों में, ध्यान रहता है, फिर बाद इसके आप भोजन करके १ घण्टा आराम तलब करते हैं, फिर बाद इसके सायम् कालकी सन्ध्या पूजन प्रारंभ करते हैं, सो मैं ऐसे महासज्जन धर्मिष्ट बड़े मईराज श्रीयुत रामगोपालजी को प्रणाम बार २ इस मृत्युलोक को संसार में करता हूं,—

——:ॐ:——

विदित हो कि मैंने निज पुस्तक पृष्ट १२५ के (No. 54) की कविता का उपदेश अपने हस्त से लिख करके श्रीमान् कलकत्ता हिन्दी भाषा सम्पादक वैश्योपकारक मासिक पत्र को ता० २०-५-४ ई० को दिया था, सो आपने प्राप्ती स्वीकार मेरे नाम से अपने मासिक जेष्ट संवत् १८६१ के पत्र में, प्रकाशित किया है, सो मैं आपको स्वीकार पत्र पर धन्यवाद देता हूं, और मैं यह आशा करता हूं, कि आपका मासिक पत्र दिन बदिन उन्नत् करता" जायगा, और यह पत्र श्रीमान् बाबू रामलाल, नेमाणीजी के, राम प्रेसके मनेजर काटन ष्ट्रीट (No. 59) प्रबन्ध के द्वारा से संसार में, प्रकाशित होता है *

——:*:——

* Pandit Amulya Charan Ghosh Vidyà bhushan.

Principal. Edward Institution. No. 58,

Cornwallis Street Calcutta.

(No. 64) दोहा ।

श्रीअमूल्यचि चरन जु, प्रेमी घोस हमार *

उपदेशक बलदेव के, विद्या (२भूषण यार *

*सुन्यो(२) अङ्गरेज़ी विद्या समूह है, और हमारी हिन्दी भाषा मादरी विद्या बुद्धीको देनेवाली

षट्भाषी में निपुण हैं, पण्डित बँगला वोर *
बहु भाँति विद्या जानिते, भाषा की बहुतेर *
विद्या बुद्धी मीत से, पूजनीय संसार *
बहुत लेख बलदेव को, जग में काव्य प्रचार *

अहासागर है, इस कलयुगमें एक लघु वेकदरी भाषा विद्याकी शीर्द्दिमकायरी जानिये, और विद्या भूषणजीको कोई अच्छो पोष्ट इण्डिया गवर्मेण्ट आफ इण्डिया से प्राप्त होना चाहिये।

---

* Pandit Dina Nath Deva's Post Office Bally *

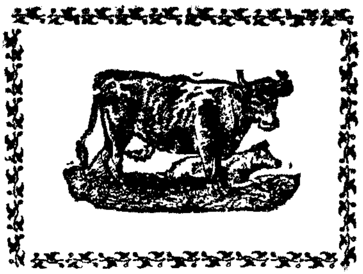
District Hawrah :— * *

(No. 65) दोहा।

बरदवान का जानिये, कटरा विदित बखाँन *
मास्टर दीनानाथ जहँ, कलकत्ते दरम्यान *
(१)मास्टर दीनानाथ जु, सज्जन नेक बखाँन *
निपुणहिं विद्यामें गुणी, शोभित विदित जहाँन *

---

* मुन्शी (१) आपकी बनाई हुई "शिक्षामणि" हिन्दुस्थानी परसियन ग्रामर इत्यादिक अनेक प्रकार की पुस्तकें विद्यार्थियों के सहायता के लिये संसार में प्रकाशित हैं।



अथ बलदेव प्रसाद मेहरोत्र २॥घर को
कृत्त वचन श्रीगो के विषय मे,

उपदेश।

कजरी।

(No. 66) राग ढुन् मुनियाँ।

(१ चरवाहे सब गौवें चरावें चारा खिलावेंना *
अमृत थन से दूह के लेते बच्छा पिलावेँना *
चरवाहे सब गौवें चरावें चारा खिलावेंना ॥१॥

अन्तरा।

दूध मलाई खू़ब बिकाती छाछ वजावेँना *
दुनिया रखे भार उठावें रच्छा पावेँना *
चरवाहे सब गौवें चरावें चारा खिलावेंना ॥२॥

अन्तरा।

कलीकाल में मारी जातीं कोई बिचारेना *
खँजड़ी का मिरदङ्ग चमड़ा क्या धिक्कारेना *
चरवाहे सब गौवें चरावें चारा खिलावेंना ॥३॥

अन्तरा ।

सब पशुवन पर दया हमारी कोई हमारेना *
उपदेशक बलदेव मर्मीन अशाहन के प्यारेना *
चरवाहे सब गौवें चरावें चारा खिलावेंना ॥४॥

(१ चरवाहे लोग गौवों को मैदान मे अच्छी तरह से चारा नहीं खिलाते हैं, अथ्वा जो गौवें मैदान की चराई से चाराचर कर आती हैं, सो वह लोग खूंटेमें बांध देते हैं, फिर दुबारा भूसा तृण खरीकी सानी इत्यादिक नहीं खिलाते हैं, अक्सर बाज़२ चरवाहों के घरोंमें देखनेमे आया है ।

विज्ञापन बिभिचार विषय का क्या है, याने—

(No. 67)

दोहा ।

सब पापिन के पाप को, भक्षण करू मै कब ।
हितबांनी बलदेव को, सज्जन पढ़ेंगे जब ॥१॥
कंटक को मम लेखनी, चुभैगी* कांट समान ।
उपदेशक बलदेव की, पढ़के मीत प्रमांन ॥२॥
खल दुर्जन के पाप को, करौं भस्म चहुं ओर ।
मीत से बलदेव यह, लिखै फैसला घोर ॥३॥
सुख में भाई बन्धु सब, होते बहुत रफ़ीक़ ।
दुखमें कबहु न जानिये, कोई न यार शरीक ॥४॥
मीत जगत में जानिये, जो दुख आवे काम ।
उपदेशक बलदेव की, रचा करते राम ॥५॥

* कैसे ? जैसे बिच्छु का डङ्क ।

जो नर जगमें श्रेष्ट हैं, सो यह करें विचार।
हित बचन बलदेव को, विदित सकल संसार ॥६॥

कलिकाल बरतमान समयका फल।

सब महाशयों से मेरी यह प्रार्थना है, सो क्या? याने इस मिरत लोकके संसार में, जो अपनी बिरादरीका पुरुष अपराध करे तो क्या करना चाहिये, याने उस अपराधी के अपराध को, आम और खास तौर पर अपनी२ हर एक कौम को चाहिये कि, गुनह-गारके गुनाह को, दयानतदारी के साथ में, नोटिस के द्वारों से, इस संसार में, प्रकाशीत करके पबलिक प्रगट कर देना चाहिये, इस लिये कि फिर कोई पुरुष अपराध न करने का इरादा रखे, याने पाप करने में पापी लोग रुकेंगे, और अपने बिरादरी के जातके अपराध को छिपा करके न रखना चाहिये, याने अपराधी के अप-राध को एक हजार नोटिस के द्वारों से खूब अच्छी तरह से प्रगट कर देना मुनासिब धरम जानिये, याने अपराधको छिपाकर रखने-वाले पक्ष सरपञ्ची लोग नीतसे दोषी कहलाते हैं, क्यों कि पापीयों के पापको प्रगट करने में, यह फायदा है, सो क्या? याने दुर्जन लोग अपराध करने को डरेंगे,—

—*—

सावधान! सावधान!! सावधान!!!

और बिधवा फन्ड न कायम होने से क्या क्या खराबियां पैदा होती हैं? याने बहुतेरे शरीफ कौम गुर्वावों की बिधवायें, नावारिसें, क्षुधा के पिड़ित से, अपने धर्म्म को त्याग करके एक दूसरे पुरुष का सङ्ग स्वीकार करके रन्डी होजाती हैं।

—*—

प्रमाण पृष्ट ७१५ अथ दशमोध्याय मनुस्मृति स० पृष्ट ७४१ श्लोकार्थ १०८ का यह है, सो क्या ? याने,—

भा० ता० ॥ क्षुधा से पीड़ित धर्म्म और अधर्म्म का ज्ञाता बिश्वामित्र ऋषि चण्डाल के हाथ से ग्रहण करके कुत्ते की जंघाके मांस के भक्षण करने को उद्यत होते भये ॥ १०८ ॥

देखिये हमारी बिरादरी में कई बिधवायें क्षुधा से पीड़ित होकर रण्डी होगई हैं, हे भाइयो ! बिचार करने की बात है, सो क्या ? याने बड़े महात्मा ब्रह्म ऋषि बिश्वामित्रजी क्षुधा से पीड़ित होकर श्वान के मांस को भक्षण करना स्वीकार किया सो हे भाइयो ! इसी प्रकारसे जानना चाहिये कि अनेक बिधवायें हर एक जात की क्षुधा से पीड़ित होकर हर एक शहरों के बाजार में, अनेक रण्डियां कसब कराती हैं *

सो हे भाइयो ! मैं अत्यन्त शोकातुर होकर याने अपनी बिरादरियों की बदनामी सुनकर एक बड़े दुःख के साथ में, सब महाशयों को प्रमाण बरतमान फल को इस संसार में प्रगट करके दरसाता हूं, सो क्या ? याने,—दृष्टान्तके साथमें प्रमाण जानिये—

(No. 68) चौपाई ।

कौन बिप्र बङ्गाल में आई ? जो खत्री की रखी लुगाई *
कलकत्ते में सारसुत कोई, इक बिधवा सङ्ग कांटा बोई *
जो खत्री की हरी लुगाई, मात पक्ष से कौन्ह खोटाई *
प्रोहित की माता सम नारी, कर्पूरहि बंश कुलीन बिमारी *
कौन बिप्र धनी धनवन्ता ?नीच परोहित पाप न गनता *

दोहा ।

निरमल मदको जानिये, मीन करे जलगन्ध *
यह नीतहि बलदेव की, पढ़िये हियके ग्रन्थ *

तात्पर्य्य ।

विदित हो कि २० वर्ष का अरसा होता है कि कोई सारस्वुत तिकडे ब्रामहण लखपती धनी असामी रुपये की दौलत की गरमी मे आय कर एक अपने जिजमान कपूर २॥ घर खत्री कुलीन की स्त्री बिधवा का धर्म्म नष्ट कर डाला था, जिजमान की स्त्री प्रोहित लोगों के माता के तुल्य होती हैं, और प्रोहित का ऊंचा पद है, सो हे भाईयों। इस बिधवा औरत के प्रोहितजी के वीर्य्य से दो पुत्र सुनते हैं कि पैदा हुवे, याने एक लडका और एक लडकी सो लड़का सुनते हैं कि २० वर्षका प्रोहितजी के मकान मे मौजूद है, और प्रोहितजीने अपने गुप्त म वीर्य्य की कन्याका बिवाह कोई ताडवाल बावन जाती खत्रीके सहमें कर दिया था, सो प्रोहितजीने अपने सुरैतिनके लडकी का बिवाह ब्रामहण कुल मे क्यो नहीं किया था ? याने खत्री कुलमे यह सम्बन्ध किस नीत रीतसे किया था, और यह बात सुनते हैं कि यह प्रोहितजी शास्त्रकी रीत और नीतके अनुसार बरसोंतक बिरादरीसे खारिजथे, याने जब इनके पिता मरने लगे तब बाद इनके ब्रामहण और खत्रियों के सरपञ्च चौधरीयों के शरणागतमे प्राप्त हुवे, तब बाद इनके दोषाभागी सरपञ्च लोगो ने प्रोहित अपराधीजी को अपने जात मे मिला लिया थे खुब सब दोषाभागी सरपञ्चों को चाहिये कि दोचार अज्ञाती क्षत्रनों को भी जात मे मिलालेना चाहिये, क्या ऐसा हुवा नहीं है ? अलबत हुवा है, याने अब हमारे नाना सदासुख स्वर्ग निवासी इस मिरतलोक मे थे, तब वह मुझ से यह कहते थे, सो क्या ? याने किसी जमाने इलाहाबाद मे, किसी के बाप दादे एक क्षत्रन कौमकी रन्डी को रखे हुवे थे, सो वह क्या खान्दान भ्रष्ट इलाहाबाद में, सब जातियो में शामिल नहीं है ? यदि यह कुकरम कोई गरीब करता तो उसके घरका कोई हिन्दू मात्र पानी तक न पीता, एक छोटा सा दृष्टान्त यह है सो क्या ? याने एक मछली सारा जल गन्धा करती है, याने जो लोग की भ्रष्ट हैं, सो वह लोग दूसरे के धर्म्म और इमान की क्या रक्षा करेंगे ?

(No. 69) शेर ।

(१ खल कलयुग अन्याय करे फरियाद इस्की हम करें *
इनसाफ मेरा वह, करे जो ब्रह्मको सुमिरण करें *

(१) कर्म्म खोटे अनेक प्रकारके विशेष करें—और कलयुग निगोड़ेको लोग दोष धरें सो इसका क्या दोष है ?—याने करें तो कुकरम और कहें कि यह कलयुग है यह कलयुग नहीं है, यह अङ्गरेजी राज्य सतयुगके समयका है, घोर कलयुग कब था ? याने जब नवाबी थी,—जुवाचोरी करना, रिशवत खाके दग़ाबाजी और विश्वासघात करना, नीत धर्म्मको न मानना, यह कलयुग नहीं कराता है, यह खोटे कर्म्म नाना प्रकारके अबोध के कारण से होता है।

प्रमाण श्रीतुलसी कृत रामायण अयोध्याकाण्डम् २-दोहा ८५ के बादका भावार्थ यह है, सो क्या ? याने—

चौपाई ।

शिवि दधीचि हरिचन्द्र नरेशा*
सहे धर्म्महित कोटि कलेशा*
रन्तिदेव बलि भूप सुजाना*
धर्म्म धरेउ सहि सङ्कट नाना*

कुम्भ राशि पर सूर्य्य और बृहस्पति ग्रहका फलित।

हमारे जन्म कुण्डलीके लग्नसे पञ्चम स्थानमें सूर्य्य और बृहस्पति है, प्रमाण लग्न-चन्द्रिका यह है, याने जिसके लग्नसे पञ्चवें स्थानमें, सूर्य्य व बृहस्पति होता है, सो धर्म्मवान धनी राजा होवे—अथवा श्रेष्ठ पुरुष हो। पृष्ठ १३—श्लोकार्थ ७८ व ७९।

कहेगा क्या कोई मुझसे मेरा दिल बस वही है *
अगर सब ग़ौर कर देखो ज़माना वह नहीं है *

(No. 70) नसर।

मीरमें आग पड़ेगी नज़र * कलिमें देखाई पड़ेगी ग़दर *
नीत प्रमाणकी जगमें क़दर * अनीत लखाई पड़ेगी (१)क़हर *

(No. 71) ग़ज़ल।

श्रीराम नामकी जगमें बनती हैं गोलियाँ *
आटेमें रामनाम को खाती हैं मछलियाँ *
धन्य वह पुरुष जो खिलाते हैं गोलियाँ *
बैष्णवके पताकों को फहराती हैं बोलियाँ *
कटर में काट काटके बिकतीहैं मछलियाँ *
पुष्पोंके बदले यह बिकती हैं (२)मीन पतलियां *
ससार धरम लेख पर देना न गालियां *
बलदेव प्रसाद मेहरोत्रकी यह नीत बोलियाँ *

हमारा निरमल ज्ञान नीत वचन यह है सो क्या ? यानें।

(No. 72) चौपाई।

रविको धरम जगत विस्तारा, दूरकरत निशिको अँधकारा *
अधरमजले जगतमें भाई, अनहितकी महिमा मिट जाई *

---

(१) क़हर—क़हत अर्थात् अकाल पड़े—अथवा अन्नकी गिरानी होय।

(२) मछलीयां ज्योतिष नीतके अनुसार ब्राह्मणी हैं, क्यों ? यानें मीन राशिका स्वामी बृहस्पति ग्रह ब्राह्मण है।

असुरनको अपजस भण्डारा, बिदित जगतमें जस हमारा*
उपदेश कारण स्वामी संसारा, परहित कारण जन्म हमारा*

उपदेश ।

(No. 73)

दोहा ।

सत्य धरम अनमोल है, करिये सबै बिचार *
उपदेशक बलदेवकी, लखिये नीत कटार ॥ १ ॥
सत्य धर्म्म त्यागो नहीं, सज्जन चतुर सुजान *
उपदेशक बलदेवको, 'लखिये नीत प्रमाण ॥ २ ॥
ऊंची पदवीके पुरुष, रखिये धरम प्रचार *
* काशीके बलदेव यह, कहते बारम्बार ॥ ३ ॥
यह जगतमें जानिये, अज्ञानिनकी खान ।
हितकारी बलदेवको, धरम सहित पहिंचान ॥ ४ ॥
लगी शीलमें आग है, बिरोधिनके अब घर *
यह कहते बलदेव हैं, मेहर अढ़ाई घर ॥ ५ ॥
पापके धनको जानिये, रखै धरम बिरोध *
उपदेशक बलदेवसे, कपटक रखते क्रोध ॥ ६ ॥
धर्म्मीथे सो चल बसे, अधर्म्मी कौड़ी चूस *
हितवानी बलदेव की, न मानैं जङ्गली ऊस ॥ ७ ॥
खलहि मण्डली जानिये, निज स्वारथके यार *
यह नीती बलदेवकी, सज्जन करैं बिचार ॥ ८ ॥
निज स्वारथके कारणे, कंटक रखते घात *
उपदेशक बलदेवको, न मानैं परहित बात ॥ ९ ॥

---

*हमारा जन्मस्थान श्रीकाशी जीमें है, अथवा मेरे श्वशुरका नाम भी स्वाम काशीप्रसाद है ।

कुलीननको पहिंचानिये, कलिकालमें यार *
उपदेशक बलदेवकी, करिये नीत बिचार ॥ १० ॥
शीलहि कबहुं न ढूंढ़िये, कुशीलनके बद घर *
यह मानों बलदेवकी, मेरे प्यारे सर ॥ ११ ॥
जो यदि अपने को हनें, तापर रखिये रोष *
यह नीती बलदेवकी. मारे हनें न दोष ॥ १२ ॥
लड़े. लड़ाई ज्ञानकी, जगमें बुद्धीमान *
जो करै बड़ाई तेगकी, सो नर ॐ जड़ समान ॥ १३ ॥
करें पतित खोटे करम; रखैं कलिको दोष *
उपदेशक बलदेव को, उपजे नीतसे रोष ॥ १४ ॥

तर्ज़ सवाल ।

(१) हजारो ख़्वाहिशें ऐसी किहर ख़्वाहिश में दम निकले ?

ॐ जिस समयमें परमेश्वरने सृष्टिको उत्पन्न किया है, सो उस समय से शस्त्र की लड़ाई होती है, सो क्यों ? याने जब अनीत और पाप बहुत बिशेष फैल जाती है, तब वह पाप घोर समूह का भार उतारनेके लिये, ईश्वर अपनी मायाशक्ति की प्रेरणासे आक्रमण कुमतिको बिस्तार करता है, याने जब पाप घोर भस्म होजाता है, फिर बाद इसके वह अपनी माया कुमतिको खींचके समेट लेता है, फिर बाद इसके बोझ पाप पृथ्वीका भार जब उतर जाता है, याने तब शस्त्र की लड़ाई शान्ति होजाती है ।

(१ याने ता० १८—८—४ ई० को मैं L. माधो प्रसादजी साहिब टण्डन लहौरिये आगरेवाल मुलाज़िम बङ्क बङ्गाल कलकत्ते के दौलत ख़ानें पर गया, सो आपने मुझे यह शैर पुराचीन की तर्ज़ दिया, और इस्का जवाब तलब किया,—

(No. 74) **ग़ज़ल जवाब।**

(२) खोदा की यादगारीमें गुनहे ख़्वाहिशकी कम निकले।
(३) ज़माने मे करो नेकी हमेशा दिल रहम निकले॥
मुरौवत में दयानतदार सच पूछो तो हम निकले।
बेशरमों को बुराई को कहें तो क्या हया निकले॥
अगरचे मैं कहूं सच्ची तो सब बातें गरम निकले।
लग़ो बातें हमेशा प्यार को यारो नरम निकले॥
इनायतसे मेरी कोई सुनें साहिब तो ग़म निकले।
सुनों बलदेवकी यारों नसीहत से धरम निकले॥

उपदेश।

(No. 75) **कवित।**

चमार नीच बरनको, कहार इत्यादिकोंको, ऊंचेसे भली ज़ात है।
दोषी को पञ्चाइत में, पञ्च के दरम्यान में, क्या हुक्का उठ जात है॥
भाई बन्धुनात में, कुटुम्ब सब परिवार में, कोइ ख़ास नहीं भात है।
फटकार के बलदेव कहैं, कुलीन को अपराध में, इन्साफ़ की न बात है॥

"चार थम्बेके १८ परिवार।

अङ्गरेज़ी राज्यके इस वरतमान समयमें, मेहरोत्र 'कौशिक

(२ फिर बाद अज़ां इसके मैंने निज लघु बुद्धी के अनुसार यह जवाब दिया,—

(३ और बाक़ी सात मिसरा मैंने अपने ग़रीब ख़ाने पर तहरीर किया,—

गोत्रकी १४ थम्बे की परिवार वंशावली पुराचीण प्रमाणकी शाखा शुमार की जाती हैं, याने—पछां अथवा पूरब इत्यादिक देशोंमें हमारे बिरादरीके लोग किसी शाखी जमानेमें स्थापित किये हुवे इस बरतमान समयमें विख्यात बोले जाते हैं, सो क्या ? याने—

(१ जगन पौत्रे । (२ शिवनन्द पौत्रे । (३ डांगामल पौत्रे (४ लक्षुमल पौत्रे । (५ जगडरमल पौत्रे । (६ भीमराज पौत्रे । (७ अभनराम पौत्रे । (८ राहुतमल पौत्रे । (९ जाटोराम पौत्रे (१० नौधेमल पौत्रे । (११टकोराम पौत्रे । (१२ मलिकराम पौत्रे (१३ चोटीमल पौत्रे । (१४ बलीमल पौत्रे । * यह सब लोग मरश्त्मिन्द निवासी थे, यह ज़माना ४०० बरसके अनक़रीब होता है, और इस बरतमान समयमें ४ थम्बे की शाखा प्रफुलित देखलाई पड़ती हैं, जैसे—ललुवाने मेहरोत्र आढ़ाई घर, शिवनन्दोये मेह-रोत्र आढ़ाई घर सुप्रफुलीत वर्त्तमान हैं, और शनीचरहे भीममल की शाखा ४ घर फलीभूत बोले जाते हैं, और कनौजके मेहरोत्र बलियेमलकी शाखा ४घरवाले इस वर्त्तमान समय में दिखलाई पड़ते हैं, और बाकीयात थम्बोंकी शाखे एक आध पूरब अथवा पश्चिममें शाखें तलाश करनेसे निकलेंगी, वरना सब इस मृत्युलोकमें बाकीयात् अस्त होगई हैं।

---

* मलिकमल नामको जानिये, मलिक शब्दका निर्णय यह है, याने मुल्कके रियासत की मिलकियत का रखनेवाला—मलिक शब्द उच्चारण होता है, और मल—शब्दका भावार्थ यह है, याने योधा—बीर।

(No. 76) **कवित्त ।**

लखनऊ के कपूर को, भड़ाई घर कुलीन को, कोऊ रांड हरलाये हैं।
* गिरजा घर में, नहीं, ठाकुरजी के साम्हने, ब्याह के पुनर लाये हैं॥
बिधवा कैं बिवाह सै, ६ बरस के बालक को, घर में जिलाये हैं।
खलकार कै बलदेव कहैं, धिक्कार अगरवाल को, जो ज़ात में मिलाये हैं॥

कलकत्तेके खत्री सभापतिसे प्रश्न
"कलङ्की औतार नमस्ते।

कलकत्तेमें सुनते हैं कि, कोई अगरवाल कुलीन २॥ घर मेहरोत्र वंशमें उत्पन्न उन्होंने अपराध किया था, याने इस बातको सात बरस का अरसा होता है, सो क्या अपराध किया था ? याने सुनते हैं कि, अपने नातेदार २॥ घर कपूर को विधवा स्त्रीको, अपने उत्तम कुलको मर्य्यादा, और सनातन धर्म्म और अपने चाचा चाचो कुटम्ब इत्यादिकों को तथा बिरादरियों को लज्जाको त्याग करके बेशरम निरलज्ज होकर पचीस हज़ार रुपये को गरमीके कारणसे कोई ग़रीब इज्जतदार को बिधवा भौजाई को निकाल लाया था, फिर बाद इसके जब उस औरतके लड़का पैदा होनेवाला हुआ, तब सब बिरादरियों ने, उस अपराधीको अपने ज़ातसे ख़ारिज कर दिया था, सो यह बात हमारे बिरादरी के लोगोंको कलकत्ते में प्रसिद्ध है, सो अब वह सुरैतिनका लड़का ६ वर्षका परवरिश पाता है, और उसको सब बिरादरी रुपये

---

* गिरिजा नाम श्रीपार्व्वती जीका है, अर्थात् श्रीशिवाय माता जीका स्थान कहिये—और गिर्जा घर ईसाइयोंके हज़रत ईसाका मन्दिरको कहते हैं।

और ग्रोहरे पुरुष हैं अथवा ग्रिना ओरोके बलसे उसको बरतते हैं, सो हे भाईयो ! हमारी कर बेखनी गौत धर्मको रक्षा करनेवाली है, सो मैं यथाय बिचार करके गौत धर्मके अनुसार यह न्याय अपराधी का करता हूँ, सो वह क्या ? यानें यह पुरुष कुलीन से अपने को कुलहीन पद समझे, और कहनेवाले लोग यह कहते हैं. सो क्या ? यानें दूसरे की बहू बेटी की इज्जत बिगाड़ा, और अबकी साल अपने माताजी को गया करने को गिया है, सो यह बात बड़े शरम की है, और सुरेतिनके लड़केको सुरे तवालको उपाधि पदवी दीजाती है।

और चार सालका अरसा होताहै, सो क्या ? यानें सुनते हैं कि कोई इज्जतदार २॥ घर आगरेवाल खत्री कुलीन वंशकी बिधवा लड़की को कोई रोड़ा खत्री कण्टक निकाल कलकत्ते से लेगया है, सो इस कण्टक को इस पुस्तकके १०८ पृष्ठ से पर्य्यन्त १११ पृष्ठ गौत प्रमाणके साथ प्रचण्ड दण्ड होना चाहिये. अपराधी रोड़ा खत्री कण्टकने, अपनी माँ—बहिन बेटी बहू की इज्जत आबरूह क्यों न बिगाड़ा ? पराई बहू बेटीको क्यों भ्रष्ट किया ? इस कारण से, ऐसे दुष्ट जीव अपराधी को, ताअबद के वास्ते कठिन दण्ड होना चाहिये, और इस विषयमें श्रीमान् पुरोहित गोबिन्द-नरायण उर्फ मानिकलाल मिश्र सारस्वत ब्राह्मण सूतापट्टी क्रास ष्ट्रीट, न० ६५ कलकत्ता बरतमान को गौत धर्म बिचार करके बिपक्ष होकर न्याय करना चाहिये।

'और सुनते हैं कि पर साल कोई अधम खत्री अपने मासी की लड़की तथा रिश्ते नाते में अपनी बहिनको निकाल कर

बनारससे कलकत्तेमें लाया है, सो हे भाईयो! इस अपराधी पुरुषके हाथकी पानी किसी हिन्दु मात्र पुरुष को ताअबद जिन्दगी भर के वास्ते न पीना चाहिये, और जो शूद्रिन कहाँरिन से प्रसिद्ध खत्रीके वीर्य्य अर्थात् तुख़म से कोई लड़का या लडकी पैदा हुई होय सो वह रुपये के प्राक्रम से वह सन्तान खत्री नहीं बोली जा सक्ती है, क्योंकि शूद्रिन की औलाद शूद्र अर्थात् दास कहलाती है।

शेर।

(No 77) शिना शां होगया बलदेव कबसे ?

यह दुनियां में दग़ा पाया है जबसे ॥

सत्यवादी धार्म्मिक पुरुषों से स्वप्न बिषयकी वर्त्तमान प्रश्न का निर्णय क्या है ?

और इस वर्त्तमान वर्षमें, एक रोज़ मैने, यानें स्वप्नमे क्या देखा ? यानें एक ज़ईफ अत्यन्त बुड्ढा मुझे स्वप्नमें सोते हुवे जगा रहा है, और यह बात कहता है, की हमारी बातको सुनों ? सो क्या ? यानें एक बड़े दुःखके साथ शोकातुर की बात यह है, सो क्या ? यानें कोई खत्री कूलीन कलकत्ते मे, अपनी भौजाई से फंसा हुवा था, यानें जब उस्के लडका पैदा होनेवाला हुवा, तब बाद इसके उसने उस गर्भ को गिराना चाहा, फिर बाद इसके जब वह गर्भ नष्ट नहीं हुवा, तब उसने कोई चीज़ खिला कर अपनी बिधवा भौजाई गर्भणी को मार डाला, फिर बाद इसके उसके नातेदारोंने रुपये और प्राक्रम के बलसे उस बेगुनाहँ, औरत को कलकत्ते के स्मशान नीमतल्ले में फूंक आये, और इस बातको गुप्त करके प्रसिद्ध नहीं किया, यानें प्राइवेट रखा, फिर बाद इसके उस बुड्ढे ने मुझमें यह भी कहा, कि यह बात को

पूर्ब्बियों खत्रियों के कोई (*प्रोहितजी कलकत्तेवाले अच्छीतरह से जानते हैं, सो हे भाईयो ! यदि यह स्वप्न मेरा सत्य है, तो ऐसे चाण्डाल पुरुष के हाथ का जलग्रहण करना हिन्दुमात्र को महा दोषित है। सो हे भाइयो ! हमारी दो जिह्वा है, याने एकमें अमृत और दूसरी में विष है, याने हमारी अमृतवाली जिह्वा सज्जनोंकेलिये है, और विषवाली जिह्वा कण्टकोंकेवास्ते हलधर है

(No. 78) चौपाई।

हितकी †जिह्वा दो है भाई। ‡अमृत विषको लखहु मिताई॥
अमृत बचनहिं नीत सुनाई। हलधर अनहित को दुखदाई॥
सांच बचन बोले जो बांनी। कण्टकको विष कटुक समांनी॥

दोहा।

मीठे रसको सब चहैं, कड़ुवो चहैं न कोय।
कटुक बचन बलदेवको, नीतसे अमृत होय॥ १॥
जैसे आमको जानिये, खट्ट से मीठा होय।
यह नीती बलदेवको, समझहु सब जन कोय॥ २॥
जैसी नीयत जानिये, तैसी बरकत होय।
सांच कहैं बलदेव यह, कुकरम धनको खोय॥ ३॥
मोहर कौले में लगे, कहीं अशरफी लूट।
यह अनीत व्योहार की, जगमे लखिये फूट॥ ४॥

---

* पृष्ठ १२८ पट्के प्रथम पंक्तीमें—प्रहित शब्दका अपभ्रंश प्रोहित—अर्थातु प्रेतोंका हित करनेवाला, अथवा—परोहित—श्रेष्ठ हितकारी अर्थातु दूसरों का हित परोनेवाला-पुरोहित अर्थातु ग्रामका हित करनेवाला,पूरोहित, अर्थातु पूरा हित करनेवाला,—

(† भाषा—जिभ्या। (‡यह दोनों वस्तु समुद्रसे निकली हैं।

(No. 79) चौपाई।

श्रीकृष्ण द्वापर औतारा। (*मृत्युलोक जानत संसारा॥
इन्हीं बहेलिया अधमक मारे। यह नीती पुराण अस गाई॥

दोहा।

यह (* मृत्यु लोकमे जानिये, जो आवे सो जाय।
उपदेशक बलदेव यह, कहते नीत लखाय॥

(No 80) राग चेतौनी।

यहां जो चाहे सो तुम करलो अनीत जगमें भाई।
जो अनरीत किया है जिसने फिर क्या उसने पाई॥
यहां वहां दोनों हाकिममें मुख भञ्जन हो जाई।
अन्त समय जब पड़ेगा दण्डा फिर क्या हो पछताई॥
अज्ञानी उपदेश को सुनिये मब धन यहँ छुट जाई।
भाई बन्धू मित्र कुटुम्ब हित सङ्गहि कछुक न जाई॥
अहङ्कारका त्यागरे मनुवां मोक्ष न मुक्ती पाई।
चेत चेत चेत नहिं कोई ज्ञान चेतौनी भाई॥
अन्याई पुरुषों को रहती अपजस कीरत छाई।
बलदेवप्रसाद की जगमें सबको राम राम है भाई॥

(No 81) मृत्यु समाचार।

दोहा।

जगन्नाथ वर्म्मण खत्रे, नामीथे संसार।
मृत्युलोक तनु त्यागके, उतरे भवके पार॥

---

* मृत्युलोक—संस्कृत उच्चारण जानिये, और भाषा अपभ्रंश—मिरतलोक जानिये।

जगन्नाथ दासजी खन्ना कम्पनी कलकत्ता पचागली मुल्लिक अरमनी स्ट्रीट (नं० ६३।१) के आप रोज़गारी पेशोंमें सरनाम पुरुष थे, और आपकी अवस्था ५३ वर्ष छ महीने की थी, याने आपका जन्म श्रीविक्रमी संवत १९०७ में हुआ था, सो आपका ता० ११ सिपटेम्बर सन् १९०४ ई० को लहौर में अन्त जन्मभूमि प्राप्त हुआ,—

अप:भ्रंश शब्दका निर्णय।

इस पुस्तक के पृष्ठ १४१ के ३ पंक्तीमें (लल्लू * मल्ल) और पंक्ती १३ व पंक्ती १४ में, (लाला हरकिशुन † शाह) व लाला जयकिशुन शाह हमारे परदादा अर्थात् प्रपितामह दो सगे भ्राता स्वर्ग-निवासी का ठीक नाम लाला हरकिशुनलाल व लाला जयकिशुन लालजी था,—

पृष्ठ १२५ के (नं० ५४) के ३ पंक्तीमें रजस्वला के शब्दका अपभ्रंश रजस्सुला—पृष्ठ १२९के (नं० ५८) के ३ पंक्तीमें, सारस्वत शब्दका अप:भ्रंश—सारसुत,—

अप.भ्रंश।

(* मल्ल शब्दका अप:भ्रंश—मल उच्चारण होता है अर्थात् मल्ल—पहिलवान को कहते है।

(† शाह शब्दका अपभ्रंश—साव—शाह—अर्थात् याने मुल्कका मालिक बादशाह को कहते हैं, और—साव अर्थात् मिलकियत का मालिक को कहते है, और इस पुस्तक को पृष्ठ ११५ को १५ पंक्तीमें शोरहपुश्त—ठीक उच्चारण—शोहरह् पुश्त अर्थात्—छोट वर्दमाश को कहते हैं, अप.भ्रंश शोरह पुश्त याने—शोरे पुश्त।

पोष्टाफिसमें कलयुगके अन्तर का आक्रमण किञ्चितमात्र क्या है? याने—

इस पुस्तक का मुद्रित लेख पत्र पृष्ठ १०५से पर्यन्त १५२ताईं और खास १ फोटो अपनी प्रकाशित की हुई—प्रभु छोटे लाट साहिब आगरा तथा अवध देशाधिकारी के सेवामें बज़रिये रजिष्ट्री डांक छाज़ाके A.D. नं० ५८ खेङ्गरापट्टी कलकत्तेके द्वारा से ता० १०—८—४ ई० को रवाना किया था, सो मेरा यह पाकेट ता० १२—८—४ ई० को आंजनाब के खि़दमत शरीफ में डिलेवरी हुवा, और यह तारीख १४ को कलकत्ते में पहुचा, और ता० १४ से १६ ताईं हमारी यह रसीद कलकत्ते की शिमला पोष्टाफिस में हवा खाती रही, फिर बाद इसके ता० १७—८—४ ई० को यह इकनालिजमेण्ट मुझे प्राप्त हुवा, और इस पाकेट के पहुंच की कोई चिट्ठी वगैरह आं जनाब के खि़दमत शरीफ से इस मरतबह् बज़रिये डांक छाज़ा के नहीं मरहमत हुई है।

प्रश्नके उत्तर का समाचार।

हे भाइयो! विदित हो कि जब मैंने अपनी बिरादरी की बदनामी और हर एक तरह की शिकायतें कस व नाकस से उड़ती पुड़ती सुना, तब मुझसे रहा नहीं गया, फिर बाद इसके मैंने, बाबू नरसिंह दासजी खत्री जमाई दामोदर दासजी टण्डन खत्री समाभति कलकत्ते बड़ी बाजार कोठी (नं० ५५) से यह सब हाल मैंने दरियाफ्त किया, क्योंकि आपभी हमारे इस बिषयमें बिचारमान हैं, फिर बाद इसके आपने, यह मुझे उत्तर दिया, सो क्या? याने हमारी बिरादरी में लोग अपने को खुद मुख-

तार ब्राम हैं, जो जिसके मनमें आता है, सो कर उठाता है, क्योंकि खौफ और डर किसी को न तो परमेश्वर का है, और न बेशरमों को दुनियां के ज़ात पर ज़ात मेंलज्जा—हया है, और द्रव्य के अहङ्कार से न हाकिम न हुक्कामो का डर है, याने जो जिसके मनमें आता है, सो वैसाही बेखौफ होकर अन्याय कर उठाता है, यदि कोई बात नीत से समझाई जावे, तो अन्याई लोग फौजदारी लड़ाई करने को आमादह् होते हैं।

धर्म्म सम्बन्धी विषय समाचार।

और सुनते हैं कि कोई वैष्णव खत्री कुलीन धनी का लड़का जनेऊदार कलकत्ते का कोई बङ्गालिन रण्डी मुसलमानिन् के साथ छः महीनेसे अवारा होकर भ्रष्ट होगया है, सो इस बातको बहुतेरे लोग जानते हैं, सो हे भाईयो ! इस बातको बिचार करना चाहिये, सो क्या ? याने जैसे मुसलमान से कोई हिन्दू पराश्चित करनेसे नहीं हो सक्ता है, वैसेही इस अवारे पुरुष का भी प्रमाण जानिये ? सो नहीं। रुपये में बड़ी ताकत है, सो क्या ? याने सत्य का असत्य हो सक्ता है. और असत्य का सत्य हो सक्ता है।

कलकत्ते की तेल और मैदे की कलमें कलयुग प्रवेश,

उपदेश।

(No 82) कवित्त।

कलकत्ते के कलवाले, सुनहु तेल मैदे वाले, क्यों अन्धेर मचाते हो ?
निज घर माल उठाने वाले, ' बे पूछे लेजाने वाले, क्यों

अन्याय जनाते, हो ? यह निज स्वारथ के कारण से, एक महीना घरमें रखके, फिर क्यों माल तौलाते हो ? यह सुनके बलदेव कहैं, अनीतको बिचारके, महाजन क्यों सताते हो ?

दोहा।

बैश्य सभा को चाहिये, सब जन करैं बिचार।
उपदेशक बलदेवनें, सुनिहिं शिकायत यार॥

म्युनिसिपलिटिका आक्रमण।

कलकत्ते की म्युनिसिपलिटी के आक्रमण से ता० ३० अगस्त सन १८०४ ई० से पर्य्यन्त ता० १ सिपटेम्बर सन् अलह तक बड़ी-बाजार में हरताल रहा, याने बाजार की सब दुकानें बन्द रहीं,—

स्वीकार पत्र।

अडीटर जगदीश पुरी श्रीमान् पण्डित श्रीशुकदेवजी शर्म्मा श्रीकाशी निवासी वैद्यजी मैंने आपका जगदीश महात्मय पाया, सो आपने बहुत अच्छा भाषानुवाद किया है, और आपने इस पुस्तक का दाम चार आना रखा है, यह पुस्तक सब महाशयों के लिये बहुत सरल भाषा है, और आपने पुरीके पण्डों का अनर्थ प्रचार किया है, सो यह लेख हमारे बहुत पसन्द आया है, विदित हो कि मैं भी दो अढ़ाई वर्षतक नीम षार मिश्रित में रहा, यानें यह तीर्थ इस मृत्युलोक में, बहुत पुराचीण शास्त्र पुराण इत्यादिकोंके प्रमाणसे है, श्रीमहाराज्य श्रीदधीच जीका तपोभूमि पुनीत स्थान है, याने ता० ३० अप्रेल सन् १८८९ ई० में—मैं खास तहसील मिसरिख जिला सीतापुरमें मौजुद था, सो मैंने

भी वहांके पण्डों को बाज़२ लुटेहरा पाया, और पण्डा जो क्षत्री और पण्डाइनजी केथिन, सो यह दोनों पण्डा ब्राह्मण बन कर, ब्राह्मण और क्षत्रियों से तीर्थ स्थानमें पैर पूजाते हैं, याने बाज़ बाज़ यात्रियों को मारते और ग़रीब यात्रियों को भी अक्सर कभी कभी लूट लेते हैं।

अशुद्ध।	शुद्ध।
पृष्ट ७९ के कलके बाद ११ पंक्ती में,	
और और—	और
पृष्ठ १२१ के कलके बाद की ४ पंक्तीमें,	
मुशाहिब—	मुसाहिब,—
पृष्ठ १२२ की चार पंक्ती में परीखत्—	फरीखत्
पृष्ठ १२८ प्रमाण की ७ पंक्तिमे रितरो—	पितरो
पृष्ठ १४४ की ९ पंक्तीमें, प्रमाण—	प्रणाम
पृष्ठ १४८ की कजरी के रागकी अन्तरा प्रथम पंक्तीमें, बजावेना—	बचावेना,—
पृष्ठ १४९ के दो हेके ८ पंक्तीमें कोई—	कोइ
पृष्ठ १५० के ६ पंक्तीमें, प्रकाशीत—	प्रकाशित,—
पृष्ठ १५२ के तात्पर्य्य की ७ पंक्तीमें,	
ताडवाल—	ताडवालु
पृष्ठ १५७ के फुटनोटके प्रथम पंक्तीमें	
रस्के—	इसके
पृष्ठ १५८ की ९ पंक्तीमें बलीमल पीवे—	बलीमल्ल पीवे,—

दोहा।—(No83) बिष रुधिर नरको चखैं, मच्छर मक्खी जोंकु।
सब कण्टक को जानिये, धरम नीत है भोंक॥

पद निरबांणी— मेरे प्यारे सब कोइ भाई हिन्दू मुसलमान हैं।
उनको भी मैं चहता हूं जो किरिश्तान हैं॥
अपने मज़हबमें जो रहते दीनदार हैं।
बलदेव प्रसाद दुनियां में करते सनमान हैं॥

(No 84) **पद-द्वितीय-भाव।**

मेरे प्यारे सब कोइ भाई हिन्दू मुसलमान हैं।
मैं भी उनको चाहता हूँ जो पूरे कोरिस्तान हैं॥
अपने मज़हब औ धर्म्मका जो रखते गुमान हैं।
बलदेव प्रसाद उनकाही करते सनमान हैं॥

ता० १५ अक्तूबर सन १९०४ ई० के (गुप्त मित्र महाशय कलकत्ते जी) हमारी नीत न्यायकी यह क़ानून दफा है, सो क्या? यानें—

(No. 85) **पद।**

चुरुट लगाके ओंठमें चलते मुख साबुन से धोते हैं।
गिट पिट भगवत गीता पढते अज्ञानी जो होते हैं॥
मुसलमानको छूजा पानी क्या न खूरसे रोते हैं।
सोडावाटर लेके पीते कसबीके घर सोते है॥
* कांचका बरतन मट्टी बराबर जिसमें पानी बिकते हैं।
सच्ची बातें धरम नीतकी वैष्णव मतसे लिखते हैं॥
मुंहमें चुक्का देके पीते बाबू धरमको खोते हैं।
ऐनक आंख लगाके चलते खोटे खाते गोते हैं॥
यह अनरीत लखो सब कोई चोरी करें तो रोते हैं।
बलदेव प्रसाद मेहरोत्र अमीन जगमें हितको बोते हैं॥

---

* कांच-और कांसा—और फूलका बरतन यह सब वैष्णव मतसे मट्टीके तुल्य समझे जाते हैं।

पञ्चानन्दजी गुब्बारा उड़के फटा क्यों ? याने,—

अब को साल कलकत्ते में, गुब्बारा कार्त्तिक मासमें, खूब उड़ा, फिर फट जानेसे नतीजा क्या है ? यानें जिसको फूस खर तिनकों को, जिस ग्राममें झोपड़ियां होवें, सो फुक जावें, याने-बाज २ गुब्बारे-उड़के आकाश में तारेके समान होकर तरजाते हैं।

(No. 86) दोहा।

गुप्त सँज्ञा जानिये, * वैश्यों को सरनाम।
गुप्तो गुप्तसे होत है, † एसो-सियन-में काम॥ १॥
वैश्यों को मीटिङ्ग सुमति, कलकत्ते दरम्यान।
एसो-सियन-बङ्गालको, जगमें सभा बखांन॥ २॥
नामके अक्षर अन्तमें, जो रखते हैं दास।
भगवत सेवक जानिये, यह मतलब है खास॥ ३॥

मारवाड़ी चेम्बर आफ कामर्स बड़ोबाज़ार हरीसन रोड, कोठी (नम्बर २०३) के विषयमें।

(No 87) कवित।

मरवाड़ी चेम्बर कमर्स, कलकत्ते व्योपार को, सुमतहि सभा प्रचार है * यह मीटिङ्ग के नेमको, कपड़े की दूकानदार सब रखतो स्वीकार है * वैश्य सभामें जानिये, जो करते हैं कारबार, फैसला बिचार है * यह कहते बलदेव हैं, जहां धरम को चर्चा है अन्याय को फटकार है *

---

* वैश्य सभा नं० १९६।९८ हैरिसनरोड कलकत्ते मे शोभायमान है,—

† मारवाड़ी एसोसियेशन मैंङ्गलाखाव हरीसनरोड नं० १५१ कलकत्ते मे सुशोभित है।

विज्ञापन।

सूर्य्यकर्ण तस्यात्मज कृपाशङ्कर दव्य यजुर्वेद पाठकजी ज्योतिष अनुष्ठान पूजन पाठ कर्म्म यजन याजक इत्यादिक अच्छीतरह से विधिपूर्वक कर्म्म अनेक प्रकारके करानेवाले पण्डित हैं, जिन महाशयों को पूजन पाठ प्रश्न जन्मपत्रिका वर्षफल बनवाना, अथवा देखलाना होय, सो कृपा करके इनके, स्थानमें पधारिये, और वर्षफलका फल गणितके अनुसार ठीक तौरसे घटित करके घटाते हैं।

आप लोगोंका कृपाकांक्षी

पण्डित—कृपाशङ्कर श्रीमाली ब्राह्मण दव्य।

नं० ७४ शिबूठाकुरकी गल्ली कलकत्ता।

श्रीमान् राय राजा श्रीयुक्त बद्रीप्रसादजी साहिब बहादुर रईश आज़म मुक़ीम कलकत्ता जयतिः।

ता० १३ नवम्बर सन् १८०४ ई०

(No88) कसीदा।

जिसने कभी न देखा "हो" सुनां जहांन में।
सो वह भी देखले *कलकत्ते की बग़ान में॥
बैकुण्ठ स्वर्ग द्वार को यहीं पहिचान ले।
जो जानता नहीं है सो वह भी जान ले॥
जेतने हुवे हैं देवता देवी जहांन में।
दरशन को ख़ूब कीजिये भक्तीसे ध्यान में॥

---

* कलकत्ता बस्ती कलके उपर कलिकाल में कहां है? यानि इस मृत्यु लोकमें जानिये।

प्रचण्ड घोर पाप जब हुवा संसार है।
औतार लेके स्वामीने किया संहार है॥
शिक्षा किया था लोगों को अनेक प्रकार से।
सब घोर पाप भस्म किया था संसार से॥
वही विशाल झांकी यहां विराज है।
शिव प्रतच्छ जानिये ज्ञानीधिराज है॥
* मन्दिर को मैंने देखा बैकुण्ठ द्वार है।
† जहां दीये की रोशनी खूबे बहार है॥
देखा नहीं सुना नहीं ऐसे चिराग़ को।
केसरकी पहुंचो खुशबू अजब दिमाग़को॥
फिर ग़ौर करके देखा तो क्या पड़ी नज़र।
चिराग़ बलते देखा बालाय ताक पर॥
धुवां न उसमें काजर जमते ‡ पीले केसर।
दानाई से कियाहै खरच धरममें ज़र॥
मन्दिर बनां कलकत्ते में "क्या" राय अज़ीम का।
श्रीबद्रीदास राज बहादुर मुक़ीम का॥
क्या सुन्दर बनाहै मन्दिर लिखूं जहांनमें।
बलदेव प्रसाद मेहरोत्र यह गाते हैं तानमें॥

(*) मन्दिर के अन्दर कोई मुसलमान नहीं जासक्ता है, ब्राह्मण, छत्री वैश्यों को केवल जाना अधिकार है।

(†) पवित्र पुनीत स्थान—अथवा—दुनियां—जहांन।

(‡) सुनते हैं कि शुद्ध माल कांगनी केसर मिश्रित रोग़नमें भी यह गुण पाये जाते हैं।

गुप्त स्वप्न बिषय का समाचार उपदेश क्या है ? याने,—

(No. 89) । शेर ।

(*) बेवों के पास होता है जो माल खज़ानां ।
उसको भी छीन लेता है कलयुग का ज़मानां ॥
कसबी के घरमें जाके जो तबले को बजानां ।
बेवां की रकम छीन के धरम को गंवानां ॥

दोहा ।

चमड़ी चमड़े चामकी, चली जाय तो जाय ।
गौ बिधवनकी आपसे, खल सब उजड़ें भाय ॥

(*) यह बात संसारमें बहुधा सुनाई देती है सो क्या ? याने अकसर बहुतेरी बिधवायें सब अपना जेवर बेच करके, रुपया महाजनों की कोठियों में, व्याज के लालच से जमा करती हैं, सो हे भाईयो ! याने लालाजी का यदि कहीं देवाला निकला, सो वह सब बिधवावोंका रुपया गोलमाल होकर मारा जाता है, सो हे भाईयो ! इस बात का प्रबन्ध रखना इस भारतखण्ड तपोभूमि पुनीत स्थानमें, याने सब जातियों के सभासदों का धर्म्म है,—

याने किसी मारवाड़ीने, मुझे स्वप्नमें एक बिनय पत्र देकर मुझसे यह निवेदन किया है, सो क्या ? याने बिधवावोंके प्राण धर्म्म की रक्षा करना तो दरकिनार रहा, याने यदि कहीं किसी बिधवा मारवाड़िन के पास धन अथवा जेवर गहिनां बचा बचाया इत्यादिक कहीं गुप्त रहै, सो उस द्रब्य को कुटुम्ब के बाज़ दुष्ट लोग हज़ार में से एक आध जो बिभिचारी पुरुष इस संसार में

हैं, सो वह दुर्ज्जन पुरुष याने सब मालियत को छल कपट करके हर लेता है, और वह मारवाड़ी बच्चा ऐयाशी में, याने सब रकम को फूंक देता है, फिर वह बिधवा मारवाड़िन बिचारी लाचार होकर अत्यन्त दीनताको प्राप्त होती है, और जो लोगों को बिधवा के, नाते रिश्ते में मालिक बन कर मिलकियत के प्रबन्ध करनेवाले करता जो होते हैं, सो वह लोग भी उस रकम जायदात को गोल माल करना चाहते हैं, शोक का कारण यह है कि कोई सभासद इस बातका बिचार करनेवाला अथवा अपनी बिरादरी का कोई पुरुष बिधवा का सहायक नहीं धर्म्म नीतसे दिखलाई पड़ता है, अथवा बिधवा को हलाल करनेकी तदबीर करते हैं, परमेश्वर—हाकिम से नहीं डरते हैं, केवल अपनाही स्वार्थ समझते हैं,—सो हे भाईयो! इस अत्याचर्य्य पर हर एक जातियों की सभासदों को बिचार रखना नीत के अनुसार नेम धर्म्म है।

उपदेश।

(No. 90) दोहा।

सब कैथन को चाहिये, पूजैं कलम हमार।
उपदेशक बलदेवकी, पढ़के नीत बिचार॥
ज्ञानी नर जो श्रेष्ठ हैं, सो नहिं खाते मास*।
जो युद्ध करते शस्त्र से, लहचारहि खाते खास॥

---

* हमारी रायमें यह है सो क्या? याने—जितने न्यायधीश बिचारमान ज्ञानी पुरुष नीतसे न्याय चुकानेवाले हैं, सो उन समस्त महाशयों को मांस इत्यादिकों से, परहेज़ रखना चाहिये, अथवा मांस खाना किसको चाहिये, याने जो लोग को शस्त्रों

हिम्मत कबहुं न छोड़िये, जब लौं तनमें प्रान।
हितकारी बलदेव को, धरम सहित पहिंचान ॥

—:*:—

जन्म कुण्डलीयग्रह पञ्चम स्थान फलानि:—

बिदित हो कि मेरी जन्म कुण्डलीके पञ्चम स्थान से, सूर्य्य ग्रह कुम्भ राशि से चलित उदय होकर षष्टम स्थानमें मीन राशि पर धर्म्म सम्बन्ध से भारत खण्डमें नीतसे शत्रुनको परास्त करनेवाला दावा रखता है, और मेषराशिका चन्द्रमा सप्तम स्थानमें स्थित रहने-वाला, उच्च पदको प्राप्त होकर मेषराशि का स्वामी मङ्गल ग्रह, नवें धर्म्म स्थानमें स्थित उदय होकर इस भारत खण्डके नीत और धर्म्म को रक्षा करानेवाला है, यानि न्यायाधीशों के द्वारों से असत्य का नाश करानेवाला है, और जो दुष्ट जीव लोग जिस जिस दरजे के लायक हैं, सो उस दर्जे पर उन दुर्ज्जनों को पहुंचानेवाला है, यानें हमारे निज लघु बुद्धीके अनुसार न्यायको ब्रह्मा विष्णु महेश जी भी नहीं काट सक्ते हैं, परन्तु अज्ञानी पण्डितों खण्डितों को क्या गिन्ती है।

से संग्राम में जूझने हैं, सो उस समय में जब अन्न प्राप्त न होय तब लहचारी दरजे मांस को ग्रहण करना स्वीकार चाहिये, सो हे भाईयो! हमारी राय में यह है, सो क्या? यानें जैसी मांस आहारियों की राय सलाह होय, सो उन समस्त महाशयों को अपने राय बमोजिब बिचार करना चाहिये, और सब पशुवों पर दया हितके साथ रखना चाहियें।

उपदेश

(No. 91) चौपाई।

जो नारी स्वामी की चेरी। कोमल बोले प्रिय बहुतेरी॥
जो अबला लखिये मरदानी। बोले बचन कुठार समानी॥
जो नारी पतिव्रता लखाई। स्वामि चरण सेवत मनलाई॥
जो नारी पति आज्ञाकारी। अपनी स्वामी की है प्यारी॥
जो नारी पतिको न दुलारी। करत चूक जो देत बिसारी॥
कटुक बचन कहते न उचारी। धरमनीतके जो अधिकारी॥
रतिविवेक मर्दन ब्रह्मचारी। तपको सिद्धकरत जयकारी॥
*मनसे उपजै तनमें कामा। इन्द्रिय जीतै आठो जामा॥
परमेश्वर जा पर अनुकूला। दुर्जन सब रहते प्रतिकूला॥
ऊसर धान न उपजे भाई। करते लोग उपाय बनाई॥
पुत्रो पुत्र करम को †रेखा। नीत प्रमाणको सबने देखा॥

——:*:——

(No. 92) दोहा।

ज्ञानी नरको जानिये, जो तजते हैं नार।
गुण ऐ गुण पहिचानके, लखके दोष बिचार॥
पुनि पुनि माता ना मिले, नारी मिले अनेक
उपदेशक बलदेव की, सुनिये ज्ञान बिवेक॥

——:*:——

---

* मनोज—अर्थात् मनसे उत्पन्न होनेवाला कामदेव।
† प्रमाण—इस पुस्तके पृष्ठ ७७ की ६ पंक्ती को पढ़िये और देखिये—तथा बिचार कीजिये।

(No 93) **शेर।**

किया कलयुग से है संग्राम भारी।
न रखा है सिया वक्तो ने यारी॥

(No. 94) **चौपाई।**

मान अपमान सुनहुँ नहिं काना, दोनों अमृत एक समाना *
धीरज फलको सुधहि समाना, ज्ञानी नर चखते अपमाना *

दोहा।

मान अपमान को जानिये, मृत्युलोक ब्योहार।
उपदेशक बलदेव को, करिये न्याय बिचार॥

(No,95) **शेर।**

याद करो उस मालिक को अज़मत उस्को क्या न्यारी।
ख़बरदार हो रहो मुसाफिर राहन है दयानत दारी॥

कालक्षेप समय के अनुसार बरतमान फल।

याने मैंने अपनी अर्द्धाङ्गीवाली भार्य्या का बहुत नेक पाक चाल चलन पाया, याने जबतक कि यह मेरे पास मेरी खास सेवा में रही, सो मैंने किसी प्रकार का कोई दोष नहीं पाया, याने सेवाय उसने मेरे चरण की सेवामें ध्यान रखा, परन्तु हमारी मातजी को कभी कभी, कड़ी बात कह उठती थी, केवल उनके नेम धर्म्म पूजन भजन पवित्रता के कारण से बिचार न करके तीखे बचन बोल उठती थी, सो मुझसे यह बात कभी सही न गई, सो मैं भी बाज़ वक़ अपनी माता जीके पक्षपाती होकर कटुक बचन कह उठता था, याने दो वर्षसे, मेरी स्त्री और कन्या, हमारे

ससुरार में अपना निर्बाह करती है, यानें वह अपनी बसर अपने—मा—बाप के घरमें हमारे बरतमान समय के अनुसार अपना कालपक्षेप करके अपने माता—पिता चाचा—चाची तथा भाइयों में गुज़रान करती है, और मैंने अपनी स्त्रीको इस कारण से त्याग किया है, याने अपने ससुरारवालों की दमड़ी छदाम की बुद्धियों के कारण से मेरा बिबेक जानिये, याने अब मुझे अज्ञानी निरदई की लड़की से कुछ काम नहीं है, क्योंकि हमारे ससुरारवाले अहङ्कार और अज्ञानता के कारण से, यानें हमारे बलवान शत्रुयों से मिल करके अथवा परमेश्वर और बाला हुक्कामों से बेख़ौफ होकर निडर हैं, सो इस कारण से इन लोगोंने, याने मेरे मात्र पक्ष उपदेश का अपमान करके मेरा अत्यन्त निरादर किया है, सो यह अपराध मेरी जिन्दगी खास से क्षमाके योग्य नहीं है, तथा मेरे चचिया ससुर का लड़का याने मेरा साला (No 3) का मुझसे मेरी ख़ास दो तसवीर लेगया है, याने एक फटोग्राफर की खींची हुई खास फोटो जानिये, और दूसरी बिलाक के द्वारे से याने जो कि इस पुस्तक के वास्ते, प्रेस में मुद्रित होकर प्रकाशित हुई है, सो उस चित्रकी छबिको जानिये, सो अब उस्की हमशीरह् को चाहिये, सो क्या ? यानें मेरी छबीका पूजन किया करे, और मुझसे अब अपने पति का नाता त्याग करे, सो अब इसीमें उसका मोक्ष और कल्याण जानिये, और जब मेरे पास कुछ द्रव्य की हमेशा के वास्ते आमदनी कहीं से प्राप्त होयगी, याने तब में जो कुछ मुनासिब समझूंगा, सो माहवारी देता जाऊंगा, यानें बाद इसके जैसी राय सलाह हमारी माताजी की होयगी, सो मैं उनके आज्ञानुसार करूंगा।

(COPY.)

Lieutenant Governor's Camp.
United Provinces of Agra & oudh.
14th December 1904.

Sir,

I am desired to acknowledge pages 153—176 of your book in Hindi Sumitted with your petition dated the 30th November last.

Yours faithfully
Sd—H. G. S. Tyler I. C. S.
Private Secretary.

To
Baldeo Prasad Mehrottra,
CALCUTTA.

(COPY)

Government House,
CALCUTTA.
16th December 1904.

Sir,

I am desired to (+)thank you for the loyal poem which you sent to His Excellency Lord Ampthill.

Yours faithfully,
Sd—R. Nathan, C. I. E. Private
Secretary to the Viceroy.

To
Baldeo Prasad Mehrottra,
CALCUTTA.

+ यानि मेरी जन्म कुण्डली के पञ्चम स्थानकुम्भराशि पर सूर्य और वृहस्पति ह ग्रह संयुक्त होकर राजस्थान के द्वारों से सन्मानादि फलित प्रामाण यह अंगरेजी चिट्ठी है, सो क्या ? यानि ज्योतिष जातक चन्द्रिकायाम। भावाध्याय: १० पृष्ट ७२ के मूलका अर्थ यह है,—

(COPY)

Government House,

CALCUTTA.

16th December 1904.

Sir,

I am desired to (* thank you for the loyal poem which you sent to His Excellency the Viceroy.

Yours faithfully,

Sd—R. Nathan, C. I. E. Private
Secretary to the Viceroy.

To

Baldeo Prasad Mehrottra,

CALCUTTA.

सो क्या ? याने जो पञ्चम बृहस्पति हो तो सुन्दर मित्र और पुत्र वाला सुख धन मंत वेदिका गमक इन्होंसे युक्त हो, पण्डित पवित्र साम्बर होवे २५॥ और दूसरा प्रमाण अध्याय: ९ की पृष्ट ६४ का यह है, सो क्या ? याने बृहस्पति कुंभमें हो तो मोती मूंगा प्रभृतियों से और स्त्रीविभव पुत्र इन्हों से संयुक्त हो सुख सौभाग्यवान मनुष्य होवे २६, अध्याय: पृष्ट ४३ सङ्गमाद्विग्रह फलानि:—याने सूर्य बृहस्पति युक्त होय तो पर कार्यमें तत्पर विषम अर्थात् तीक्ष्ण स्वभाव वाला, सूर्यचलित भाव फलित शत्रु स्थान में बुध सूर्य मीन राशि पर है यह संयुक्त फलानि:—सूर्य बुध युक्त होवे तो पण्डित और सुन्दर कीर्तिमान् सौख्ययुक्त होय १२ ।

+ याने मेरे यन्म कुण्डली में शुक्रग्रह चतुर्थ स्थान मे मकर राशि १० अंश से उदय प्राप्त है, प्रमाण ज्योतिष फलित जातक चन्द्रिका याम्— भावाध्याय: १० शुक्रग्रह चतुर्थ होय तो भूमि मित्र गृह असवारी मान हर्ष इन्हों से युक्त होवे, सुखी रहे पुन्यात्मा होवे, ७४—७५ २४ पृष्ट प्रमाण चमत्कार चिन्ता मणि: ज्योतिष फलित याने सबपुरुषों से अधिक माननीय पुरुष होवे, अध्याय:—९ पृष्ट ६५ शुक्र मकर कुंभ मे हो तो निंदित स्त्रियों के साथ आसक्त हो, कामी स्त्रियोंके वशमे हो. शोभनी शरीर हो मान वानत मनुष्य होवे ६०॥ यौने चतुर्थ स्थान मे शुक्र ग्रह होने से निंदित स्त्रियां के साथ कामी स्त्रियों के वश

व्याख्यान ।

और हे भाइयो ! हमारी नीत और न्याय धर्म्म उपदेश क्या है ? मानों सूर्य्यका देदीप्यमान प्रचण्ड प्रकाशित निरमल ज्ञान क्षणोंके द्वारों से संसार में उदय विस्तारिक है, और हमारा सरल सुभाव क्या है ? यानें चन्द्रमाकी नम्रता विशेष सम्पूरण जानिये, और मेरा जगमें अपमान और निरादर क्या है ? यानें इलाहाबाद और कलकत्ते की खत्री सभापति का बिरोधी मेरा मात्र पक्ष महाधर्म्म उपदेश है, और मेरे सनमान इत्यादिकोंके शासक परस पर अन्याय विचार करनेवाले, यही दोनों सभासद *राहू और †केतु के समान अज्ञानी हैं, और हमारे ऊपर अत्याचार्य्य प्रहार रखनेवाले, मिथ्या प्रपंची इन दोनों सभासदों के मन्त्री साढ़े साती शनीचर हमारे वास्ते हैं, जैसे २॥ और ५ जोड़ देने से ७॥ हुवा, वैसेही यह दोनों जाती जानिये, यानें २॥ घर और पञ्चा जाती मिलके साढ़े साती शनीचर बाज़ बाज़ कण्टक नज़र हमारी बिरादरी में आते हैं, अथवा इलाहाबाद और कलकत्तमें बाज़ बाज़ कण्टकों को यानें हमारी बिरादरियों के पुरुषों को क्षुद्र शब्द का अपभ्रंश शुद्र के समान जानिये, और हमारी साहस क्या है? यानें अन्याइयों का अन्याय भक्षण है,—

मे वह पुरुष कभी नहीं रहसका है, प्रमाण विवेक अथात् —जिरो ! जिरो ! जिरो ! यानें और ज्योतिष ग्रन्थ का प्रमाण इस पुस्तक के पृष्ट ९८ से परयन्त पृष्ट ९९ ताईं शुक्र ग्रहका फलित फल वेबरबार प्रकाशित मुद्रित प्रमाण जानिये,—

(No 96) ॥ ग़ज़ल ॥

लखता है रामराम है लखताहै रामराम । मुझसे हुवा नहीं है खोटा कभी है काम *
अदालत उसीकी क़ायम दुनियां जहानमें + शाहों का शाह आफताब आसमानमें #
मैं हूं हमेशा खुश अपने इमान में + बलदेव मन रमा है शङ्कर के ध्यान में *

* राहू कौन है ? यानें राहू तमोगुणी धन अधीरम रोगी धर्म्म प्राण प्रिय शासक

माई लार्ड,

मुबारक बादी ।

(No. 97) गज़ल।

आये थे(* लार्ड एम्पथिल भारत के (*ताजपर ।
एवज़ी पूरी करके जाते अपने राज पर ॥
अपनें अपनें काम चारज लिया दिया ।
हिन्दमें फिर (*लार्ड कर्ज़नने हुकुम किया ॥
रवनक़ अफरोज़ आज वाइसराय हमारे ।
क्या हिन्द के परसपर चमके हैं(* सितारे ॥
मुबारिक बादी हो मेरो पैदा जहांन में।
बलदेव प्रसाद मेहरोत्र यह कहते हैं शान में ॥

इलाहाबाद की खत्रीसभा के हेड को जानिये सो क्या? याने इन्होंने हमारी जन्मकुण्डली के विंशोत्तरी माहादशा चन्द्रमा की सुखदाई को ग्रास किया,—

+ और केतु कौन है ? याने केतु वैष्णव तमोगुणी मीनों के हाट मे हिंसक लाभदायक बुद्धि नाशक कलकत्तेकी खत्री सभापतिको जानिये, सो क्या ? याने इसने हमारे ग्रंथ कामका मेहन्ताना राजस्थान से नहीं दिलाया, और वल्कि इसने मेरे प्राण ग्राहक अनेक मूर्खों को तूफान बना दिया, सो क्यों ? याने क्षुद्र बुद्धियों की बुद्धियांने मेरे लाभ पर डाह रखने लगी, सो इस कारण से मेरे सहायक यह लोग न हुवे, याने नीयतों में बेमानियां आगई याने मुझे जे.रबार करने के लिये कमर बस्ता हुवे,—

* His Excellency Lord Ampthill, G. C. S. I. Viceroy and Governor General of India.

+ ताज तख्त—सरताज—मुकुट को कहते है । *सितारा—प्रताप—तेज—रोशनी ।

+ याने आपका सुशोभित इस मुबारिक) इस पुस्तक के २ पृष्ट मे प्रकाशित होकर मुद्रित है , और सुनते हैं कि जनाब आली जाह वाइस राय श्रीसर्वोपरि बिराज मान लार्ड कर्ज़न साहिब बहादुर हिन्द दाम इक़ बालहू- याने आप इस भारतकी राज धानी के राजकाज पर दो साल रवनक अफरोज होकर विलायत चले जायेंगे, सो यह बात मैं नहीं जानता

(No. 98) मुबारक बादी ।

मुनसिफ के हाथ की कलम दुनियां में मुबारिक ।
अदल जबांसे आती है जाती है मुबारिक ॥
यह बन्दे की जबां से यारो नेंकों को मुबारिक ।
मुझको भी मिली आज है ग्राही से मुबारिक ॥
नेंकों को नेंक चलन पर होती है मुबारिक ।
बलदेव (प्रसाद मेहरोत्र की असहाब मुबारिक ॥

भावार्थ,—

आज दिन (ता: १२—१२—४ ई०) को अनकरीब दस बजे याने दिन को आप लण्डन से शोभायमान होकर इस भारत खण्ड तपोभूमि पूनीत स्थान् में, याने आप कलकत्ते की राजस्थान में कैसे प्रकाश मान हुवे हैं, याने मानों चमचमाता हुवा हिन्द के पर्त्तपर चमकीला दो प्रतापी सितारा अद्भुत उदय तेज होकर अत्यन्त महोदय को प्राप्त हुवा है * और इसमाल मैंने एक अपूर्व बात यह देखा, सो क्या ? याने जब आपकी सवारी कलकत्तकी बस्तीमें आई है, तब मैं भी मुत्तिल अर्थात् निकट हरीसन रोड हबड़े के पुलके निकट बस्ती सड़क की पटरी पर खड़ा हुवा

---

* हूं, याने कहां तक ठीक है, और मेरी राय में तो यह है, सोक्या ? याने यदि आप इस भारत खण्ड मे ५ वर्ष और बिराज मान रहैंगे तो मैं यह आशा कर ता हूं कि भारत अच्छी तरह से सुधर जाय गा, सो क्या? याने दुष्ट पुरुषों की दुष्टता—और बैमानी की बैमानियां तथा अज्ञानियों की अज्ञानता और क्षुद्र बुद्धियों का बिनाश घात रखना मिट जायगा—

क्या देखा ? याने (कूदती हुई और उछलती हुई दो गउवें अर्थात् लाल२ रङ्ग की गौवें जय जय कार मनाती हुई सवारी के आगे दौड़ी हुई चली जा रही हैं, सो इन दोनों गौवों की प्रसन्नता परख कर मेरा चित्त अत्यन्त आनन्द को प्राप्त हुवा—फिर बाद इसके मैंने निज लघु बुद्धि के अनुसार यह बात विचार किया, सो क्या ? यानें भारतेश्वर प्रभु सप्तम एडवर्ड सम्राट अभिनन्दन महोदयजी से आपने गौवें और विधवावों के प्राण धर्मकी रक्षाके वास्ते, याने बहुत अच्छा उपकार हमारे सनातन धर्म का किया है, और आपने गौवों के प्राणों को सम्पूर्ण सहायता किया है।

(No. 99) गज़ल।

आकाश में जो देखते हो जेतना सितारा।
हर शख़्स को वह रोशनी रोशन है सितारा॥
जब किसी का होता है दुनियां से छुटकारा।
वह टूटती है रोशनी गिरता है सितारा॥
दुनियां में होता जन्म है आता है सितारा।
आदमी मरता है जब (* जाताहै सितारा॥
प्रताप तेज फलक में रवि सब का सितारा।
बलदेव*प्रसाद मेहरोश्चका (*मेहर है सितारा॥

---

* यानें आकाश का सितारा नहीं आता है, परन्तु मनपड़ शुभ-यह और पापग्रहों का अंश शक्ति तेज प्रकृति चली जाती है।

* प्रसन्न। † मेहरबानी करनेवाला सच्चा हाकिम अथवा परमेश्वर तथा प्रकाशमान सूर्य्य को जानिये।



ॐ नमः शिवाय नमः।

अथ बलदेवप्रसाद मेहरोत्र २॥ वरस्य बिनय कृत:—

(No. 100)

चौपाई।

सुनहु सदाशिव बिनय हमारी।
हरहु निशाचरि माया भारी॥ १
अज्ञानी सब पशु नर नारी।
कलिहिकाल में अत्याचारी॥

दोहा।

असुरन की माया प्रबल, खल कपटी सब यार।
कलिकाल में जानिये, लखिये बहुत गंवार॥ १॥

नेकी के बदले लखो, बदी रखत सब यार।
उपदेशक बलदेव यह, हित लिखत संसार ॥ २ ॥
द्वापर युगमें जानिये, कृष्ण भयो औतार।
सुदामा मित्र ग़रीब के, दुख मेट्यो करतार ॥ ३ ॥
(१सिंह राशि को, ईश है, ज्योतिष भानु प्रमान।
हित शिक्षा बलदेव की, जगमें रविहि समान ॥ ४ ॥
साहस रखना कठिन है, साहस दुसह कराल।
उपदेशक बलदेव को, साहस विदित बिशाल ॥ ५ ॥
हिर्स दवाई ज्ञान की, अज्ञानी सब लेव।
उपदेशक बलदेव को, पढ़के दामहिं देव ॥ ६ ॥
डाह रशक को छोड़िये, अन्याई सब खास।
उपदेशक बलदेव को, रखिये नीतहि पास ॥ ७ ॥
क्या, बहुन को जानिये, अक़िल गई बुढ़ाय।
उपदेशक बलदेव यह, न्याई नहीं कुढ़ाय ॥ ८ ॥
सच्चे को नहिँ आंच है, अन्याई सच बोल।
उपदेशक बलदेव को, लखहु बचन अनमोल ॥ ९ ॥
टी पीके टीँ टीँ करते, अन्याई सब यार।
चाह को बलदेव पीते, चाह चहै संसार ॥ १० ॥
चाह शब्द को अर्थ है, चाह प्रेम को प्यार।
जो चाहे बलदेव को, रखिये भक्ती यार ॥ ११ ॥
टी अङ्गरेजी में कहैं, भाषा कहते चाह।

---

१ (१) यानें हमारी ज्ञान बुद्धी क्या है? मेहर अर्थात् सूर्य है, प्रमाण यह है, सो क्या? याने मेरे जन्म कुण्डली के लाभ स्थान में सिंह राशि ग्यारहवें है, और सिंह राशि का स्वामी पञ्चम स्थान में सूर्य संयुक्त बृहस्पति बैठे है, सो पञ्चम स्थान से बुद्धी का प्रमाण ज्योतिष मत से विचार किया जाता है।

शिवहि भजेहि बलदेव नित, चाह गुरू की चाह ॥१२॥
सफेदी लगे मकान में, (२चूना कहै जहान।
(३चुँनाचुँनी करते सब,(४ चुन चुन खाते धान ॥१३॥
धब्बे में चूँना लगे, मन उज्वल नहिं जान।
ऐसी कबहुं न मारिये, अन्तकरन पहिंचान ॥१४॥
मृत्युलोक में जानिये, (५फूट (६बैर हित खाय।
यह कहते बलदेवलखि, (७जगत अनीत जनाय ॥१५॥
(८तारे को तारा कहत, तारा है संसार।
लखहु नीत बलदेव की, क्या चमके भवपार ॥१६॥
नीत प्रमाण से जानिये, (९कौशिल गोत्र हमार।
उपदेशक बलदेव यह, हित चाहत संसार ॥१७॥
(१०राजमान उपदेश (११हित,(१२जगत भरे को(१३काल।
नीत लेख बलदेव को, लखिये कठिन बिशाल ॥१८॥

---

(२) मेरा उपदेश क्या है ? याने कराहीकों को चूना लगनेवाला है।

(३) लल्लोपत्तो—लल्लोचप्पो—अथवा हम चुनी दीगरनेस्त (४) बिन बिन—गिन गिन—अथवा खजुली कोभी चुन चुन कहते हैं।

(५) फल कुमति (६) फल शत्रुता (७) संसार—जागताहै गरजता है (८) सितारा—तारा अथवा मृत्युलोकके पुरुषों को तथा स्वर्गलोक के पुरुषों की रोशनियाँ (९) प्रमाण गोत्रावली पृष्ठ (४) कौशल्य यजुर्वेद धनुर्वेद माध्यन्दिनी कात्यायन सूत्र (९) कौशिल-प्रवर विश्वामित्र-शिखापाद दाहिन देवताशिव, याने यह पुस्तक भोलानाथ अग्निहोत्री पुस्तकालय चौक इलाहाबाद मे मिलता है, मूल्य ~) सम्वत १९५७ मे सातवी बार २००० मुद्रित हुई है।

(१०) राजा का राजकाज—अथवा कलकत्ते मे राज शब्दका उच्चारण बहुधा लोग क्या करते हैं ? याने जैसे मिस्त्री इमारत का बनाने वाला मजदूर कारिगर—और श्रीकाशीजी मे अहीर—कुनबी—पत्थरके ढोनेवाले मजदूरों को पेशराज कहते हैं, (११) हित कैसा है, याने धर्मनीत कलयुग वरतमान म रिपुके समान है ? (१२) याने कलयुग वैसाम निगोरे की जानिये, (१३) काल—मौत अथवा समय को भी कहते हैं—,

(No. 101) ***ग़ज़ल ।**

दिलतो साफ है नहीं गङ्गा नहाते हैं ।
भजन को खूब करके तीलक जमाते हैं ॥
पराया माल लूटके (†डेकार) जाते हैं ।
लखने पराई नारको तीरथमें जाते हैं ॥
देखलाने को दुनियां में पूजारी कहाते हैं ।
बलदेव राम नाम को निरगुण लखाते हैं ॥

*ACKNOWLEDGMENT.

याने मैंने इस पुस्तक का पृष्ट १०५ से परयन्त पृष्ट १७६ तांह रवाना किया था, किस मेहरबाँन की हरसाल खिदमत शरीफ में ? याने जनाब The Hon. Sir Andrew Fraser, K. C. S. I.

* प्रमाण कवित ।

खड़ी कर दूकाने, सनसिक्का समीप धरे, बिछे क्या गलीचा फरस परी तरे तरे ।
लिखत गुमास्ता, हुण्डी खाते औ जमा खर्च, मानों सब साख तोड़ा फिरे परे परे ॥
उलटाय कर टार कार, अनेकन को जमा करि, करके हिसाब आप फिरने टरे टरे ।
ओढ़े हैं दुसाला, पीछे काढ़के देवाला, क्या ? माला जपते हरे हरे ॥

† हज़म कर जाते हैं ।

* Attested true of receipt. Date of delivery 5—12—1904 and signaturo of addressee Sd.—A. H. L. Fraser याने यह पाकेट बुक का हकमालिजमेह बज़रिये रजिष्ट्री लिफाफ्ह डाँक हाज़ाके, याने जनाब पोष्ट माष्टर जनरल साहिब बङ्गाल के चिट्ठी (No. 91600) Dt. 21 st. February 1905 ई० के बमोजिब (No. A. 237) का हकमालिजमेह ता० ५-१२-४ ई० का याने जनरल पोष्ट आफिस का ता० २१ फेबरीं सन् १९०५ ई० को पाया ।

Lieutenant Governor of Bengal, को सेवा में भेजा था, याने Dt. 5-12-4 ई० को रजिष्ट्री (A. D.) No. A. 237 को बज़रिये डांक ख़ाना जनरल पोष्टाफिस कलकत्ता के रवाना किया था, याने ≠) महसूल पाकेट का दिया था, और ⁄) एकनालिजमेन्ट का अदा किया था, फिर बाद इसके जब हमारे पास (No. A. 237) की रसीद नहीं पहुंची, तब मैं ने लाचार हो कर पोष्ट माष्टर जनरल बङ्गाल तथा प्रेसीडेन्सी पोष्टमाष्टर कलकत्ता को इस बात से बज़रिये चिट्ठी के आगाह किया, फिर बाद इसके दोनों जगह से मेरे पास यह जुवाब सतार्थ हुआ, सो क्या ? याने इन दोनों महाशय की चिट्ठी अङ्गरेजी की कापी मेहरबानों के जवाब को प्रकाशित करता हूं—

(COPY)

From—

The Post Master General, Bengal

To

Babu Baldeo Prasad Khettri Mehrotra 2½ Ghur No 12 Shickder para Street, Room No, 32 Calcutta,

No, 85846—dated Caloutta, the—1—2—1905,

Sir,

In reply to your Letter dated the 18-1-5,

I have the Honour to say that the subject will receive attention, A Furthor communication will be sent you in due course,

I have the honour to be

Sir,

Your most Obedient Servant,

Sd—HENRY SIMITH

(COPY.)

No, 77388 No, R 2—1511 OF 190—190

CALCUTTA GENERAL POST OFFICE,
Dated 3rd February 1905

From.

The Presidency Postmaster,

To

*GURU Baldeo prasad Mehrottra Khettri,
Room No, 32, Shickder para Street, No, 12 Calcutta,

Sir,

In continuation of my Letter No, 60515 dated the 27th December 904, I beg to inform you that the registered Letter in question was delivered to the addressee on the 5th December last. An attested copy of the addressee's receipt has been forwarded to the postmaster General, Bengal, for transmission to you,

I have the honour to be,
SIR,
Your most obedient servant,
Sd—H, Peraira

---

* संसार माया भरमित हरन गुरु कौन है ? याने जगतारन परब्रह्म ईश्वर घट घट व्यापक निरङ्कार प्रचण्ड शक्ति प्रज्वलित देदीप्यमान केवल सूर्यका प्रकाश अन्धकार को दूर करनेवाला जानिये, क्यों कि सूर्यका पवित्र निरमल ज्ञान दोष को भस्म करनेवाला संसार में विस्तारिक है,—

(No. 102) दोहा। " राज ऋषि गुरु मान्यवर, हित उपदेशक यार।
बलदेव को परमात्मा, पूजनीय संसार ॥

प्रमाण—जन्म समय की जन्म कुण्डलीके मेष राशिका चन्द्रग्रह सम्बन्ध विषय फलित,—

चन्द्रादेकादशे भानु:—जन्मकाले यदा भवेत्।
राजगर्व्यंति वेता च: प्रसिद्ध कुलनायक: ॥ १ ॥
चन्द्रात द्वादशे सौम्यो राजयोगी नर' सदा।
राशि कर्म्म यदा चन्द्र: कुटुम्बे नायको भवेत् ॥ २ ॥

" ऋषिराज के गर्वका शान्ति करनेवाला क्या है ? याने राजगर्व्यंति वेता च:—अर्थात् मेरे अन्त:करण का ज्ञान अशद्ध से महाधर्म, उपदेशों को जानिये,—

यह भूल नहीं है अथवा अंधेर का दृष्टान्त / ERRATA.

अशुद्ध	शुद्ध ।
पृष्ट ४९ की ६ पंक्ती में, श्रीउवेटेश्वर—	श्रीवेंङ्कटेश्वर—
पृष्ट ७६ की १० पंक्ती मे—	
क्या क्या खूब लोगोंने कपट हसद किया—	क्याही खूब लोगोंने कपट हसद किया—
पृष्ट ८७ के (No. 40) की ४ पंक्ती में	
बङ्गाल के—	बङ्गाल की—
पृष्ट ११७ की ५ पंक्ती मे अपने—	अपनी—
पृष्ट १२० के रूलके बाद १२ पंक्ती में—	
मौसूक तथा १७ पंक्ती में—	मौसूफ—
सगे—	सगी—
पृष्ट १५४ की (नं० ७२) के २ पंक्तीमें	
अनहित की—	अनहित की—
पृष्ट१५५ (No, 73) की ५ पंक्तीमें	
संची—	ऊंची—
पृष्ट १६१ के शेर की (No. 77) की	
प्रथम पंक्ती में— शिनाख्या—	शिनाख्ता—
पृष्ट १६२ के फुट नोट की प्रथम पंक्ती मे	
प्रहित—	प्रेहित -
पृष्ट १६४ की ६ पंक्ती मे ढीट—	ढींट—
पृष्ट १६५ के प्रश्न के उत्तर के ३ पंक्ती में—	
सुना— ऐजन—	सुनी—
८ पंक्ती में साक्या ?	साक्या ?
पृष्ट १६८ (No, 83) की पदमिरचाची के २ पंक्ती मे	
उनको भी मैं चाहत हूं जो कौरिस्तानहैं,	उनको भी मैं चाहता हूं जो आधे कौरिस्तान हैं—याने आध कौरिस्तान अथवा कौरिस्तान अत: पूरे कौरिस्तान याने इन तीनों को मैं चाहता हूं, जो लोगों को अपने सच्चे ईमान पर कायम हैं—
पृष्ट१७१ की रूल के बाद हेडिङ्ग की भूल श्रीमान रायराजा बद्री प्रसादजी मुकीम—	श्रीमान रायबद्रीदासजी राज बहादुर मुकीम

अशुद्ध	शुद्ध
पृष्ट १७७ की (No, 95) की २ पंक्ती में-- खबरदार हो रहो मुसाफिर राहत है "छित" दयानत दारी	खबरदार हो रहो मुसाफिर राहत है दयानतदारी—
पृष्ट १८० के फुटनोट के प्रथम पंक्ती में को क ?	को क्या ?
पृष्ठ १८१ के फुटनोट के २ पंक्ती में प्रकशित—	प्रकाशित—
पृष्ठ १८२ के याने (No, 97) की ३ पंक्ती में— अपनें अपनें काम चारज लिया दिया—	अपनें अपनें काम का चारज लिया दिया
पृष्ठ १८४ के फुटनोट के २ पंक्ती में– हामिम—	हाकिम—
कवरिङ्ग टाइटिल पेज ग्रब पृष्ट की तीसिर पेंच के कम्पीज में, यानें दोहे के बाद श्रीलक्ष्मीं जी के विज्ञापन की ६ पंक्ती में, ब्राह्मण को भोजन होता है,	ब्राह्मणों को भोजन कराया जाता है—

पृष्ट २ (No, 2) के २ पंक्ती तथा पृष्ट १८२ के (No 97) की ४ पंक्ती का फुटनोट यह है, His Excellency the Right Hon'ble george Nath aniel Barron Lord Curzon, kedleston, in the county of Derby. in the Peerage of Ireland, P, C, G, M, S, I, G, M, I, E, Viceroy and Governor General of India,

उपदेश

(No. 103)

शेर

रहम दुनियाँ के मालिक से डरो सब।
यह बन्दको लखो बातें पढ़ो अब॥
नीयत में क्या फरक् सब के भई है।
यह कलयुग में पलट दिज को दई है॥

"स्वर्गप्राप्ति:—

पृष्ठ १८—* बाबू लालबिहारीलालजी खन्नां हेड आफिस इलाहाबाद बङ्क के एकाउनटेन्ट थे, सो ता० १८ । ६ । ०५ ई० को इनका देहान्त हुवा—

पृष्ठ २१— बाबूसीतावचन्द जी जौहरीका मि० माघ शुक्ल १५ सम्वत् १९६२ में देहान्त हुआ—

पृष्ठ ८६—राय लालाशिवप्रसादजी बहादुर रईश कानपुर का मि० चैत्र शुक्ल ११ सम्वत् १९६३ को देहान्त हुआ—

पृष्ठ १४५—पण्डित रामगोपालजी पूजारी मथुरिया घर-वारी—का अस्थान कमतरी—ज़िला आगरा में मि० वैसाख शुक्ल ४ सम्वत १९६३-ता०-२७ अप्रेल सन् १९०६-ई०को देहान्त हुआ—

पृष्ठ७१—विश्वेश्वरप्रसाद उर्फ़ मन्नू मन्न (No. 2) का देहान्त मि० जेष्ठ शुक्ल १२ सम्वत १९६२—को प्राप्ति हुआ—यह हमारे स्वसुरके सगी छोटे भाई थे—

गरीब विधवावोंकि ऊपर चमर पंथोंका आक्रमण—

ता० ३ री जौलाई सन् १९०५ ई० का समाहिक बङ्गवासी के लेखका समाचार यह है, सो क्या ? याने—एक खतरानी विधवाके ऊपर लाहौरमें पुनर विवाहके वास्ते खत्री प्रचारणी आर्य्य समाजों के तरफ़से—उस बिधवा औरत के माता पिताको कष्ट देकर पुनर बिवाह के वास्ते ज़ोर जु़ल्म किया गया—

और ता० २६ जौलाई सन् १९०५ ई०के लाहौरका सनातन धर्म्म हिन्दी गज़ट लिखताहै कि एक बिधवा औरत शरीफ़ाखन्दानकी कोई थी, सो उस्को कोई मेमईसाहन ने धोखा देकर के निकाल

---

* यहलाला कुञ्जबिहारीलालजी खन्ना के सगे छोटे भाईथे और बाबू रामनरायण इनके सगे भांजे हैं, जो कि इस पुस्तक के पृष्ठ १९ में वैवराजिस्व चुके हैं।

होगई, और उसके धर्म्मको नष्टकर डाला—धिक्कार है—किनको ? जो हिन्दू से काफ़र होगये हैं— (No 104)

दोहा   *हिन्दूको काफ़िर कहैं, जो काफ़र हैं यार।
सुचि पवित्रसे जानिये, हिन्दू करम विचार॥

इलाहाबादके चुंगी सदर चौकके आफिसमें एक चपरासी खत्री मुलाज़िम था, सो वह थोड़ी तलबका आदमी रिशवत खोरी और ईनाम वगैरहसे अपनी बसर करता था, सो उस्की इज्जत आबरूकी ओर खत्री कुलमें कमीने तथा नीच उत्पन्न हुवे है, सो दुर्ज्जनोने रुपयेके श्रीकमके हारोंसे इस्की स्त्रीके इज्जत आबरूको मट्टीमें मिला दिया है, और यह चपरासी खत्री बड़े२ कुलीन खत्रियों का रिशतेदार है, जिन२ अपराधियोंने इस्की इज्जत आबरू को बिगाड़ डाला है, सो इस पुस्तक के पृष्ठ १०९ से १११ के प्रमाण के बमोजिब दण्ड होना चाहिये— इस बातको अनकरीब २ सालका अरसा होता है—

८९०० पृष्ठ १०३ से पर्यन्त १०५ तक को मीज़ान ८९०० तक़ खीम जो मैंने अपने लेख को प्रकाशित करके संसारमें अर्पण किया था।

१००० Dt. 3 rd. June 1905 ई० को एक मारवाड़ीकी कन्याके झगड़ेके विषय में एक नोटिस गद्य पद्य में प्रकाशित किया था।

१००० Dt. 5th. October 1905 ई० को पृष्ठ ४ का लेख बङ्गाल के दो खण्डके विषयमें प्रकाशित किया था।

१००० Dated the No 28/30 November 1905 ई० को पृष्ठ ४ का अपना लेख गद्य पद्य मे व्योपार के विषयमें प्रकाशित किया था।

---

† इस पुस्तक के पृष्ठ १०८ मे यह लिख चुके हैं, सो क्या ? यानी—हीनम नीच वर्णम् दूषयन्ति ये ते हिन्दुवः—

१००० Dated the 15th February 1906 ई०. को एक अपना लेख गद्य पद्यमें Highness the Royal Prince of Wales के आगमनमें प्रकाशित किया था।

१००० Dated the 19th June 1906 ई० को एक नोटिस गद्य पद्य में Application मकान के झगड़े के बारेमें प्रकाशित किया था, सो सिकधर पाड़ा ष्ट्रीट नं० १२ के कमरे नं० ३२ में मेरा, कुफुलबन्द हैं, सो इसका फैसला अबतक जनाब आलोजाहा वाइस राय हिन्द के यहांसे नहीं हुवा है।

१००० यह पुस्तक पृष्ठ १८६ को प्रकाशित कीगई है।

१४९०० मीज़ान कुल

इस पुस्तकमें ३ फर्म्मेका लेख बहुत ज़रूरी और प्रकाशित करनेको बाकी रह गया, थोड़ेसे द्रव्यकी सहायताकी दरकार थी, सो किसी महाशयने अज्ञानताके कारणसे दिया नहीं, सो इस कारणसे निज लेखनीके लेखको लाचार होयकर बन्द करता हूं।

Government House.
LUCKNOW.
*17th March 1905.

Sir,

I am desired to acknowledge your letter of the 8th instant, together with its enclosures.

Yours faithfully,
H. G. S Tyler Esq I. C. S.
Private Secretary.

Baldeo Prasad Mehrottra, CALCUTTA.

---

* यह अङ्गरेज़ी चिट्ठी ता० १७ मार्च सन् १९०५ ई० की जो है सो, इस पुस्तककी १६८ से १९२ तारीका इकनालिजमेन्ट है।

Dated 15th. August 1906

अशुद्ध	शुद्ध
पृष्ठ १११ की २ पंक्ती में	
बरणशङ्कर	बरनसंङ्कर
पृष्ठ १२८ की १ पंक्ती में,	
डंसडहि	दण्डहि
पृष्ठ ९४४ की २ पंक्ती में	जो हम सब भारतनिवासियों
पाकशान क्या है ?	पर आपकी अनुग्रह है,
पृष्ठ १८७ की २ फुटनोट की	
पंक्तीमें कण्टो	कंटकों
पंक्ती १२ में नि गोड़	निगोड़ अर्थातु पातकी
पृष्ठ १९० की फुटनोटके	
प्रमाण के ३ पंक्तीमें	
चंद्रा द्वादशे सग सौम्यो	चन्द्रा द्वादशे सौम्यो
पृष्ठ १८२ की (No. 103)	
के ४ पंक्तीमें—में	ने

राज्यमान्य, जगत हितकारी, श्रीकाशीजीके विश्वनाथजी का
बारिष्टर अत्यन्त गरीब साहस का रखनेवाला न्याई
प्रमाणनीय मान्यवर।

BALDEO PRASAD MEHROTTRA
KHATTRI ARHAYI GHAR

C/o Lalla Kunj Behari Lall jee Sahib Khanna—Raja Burdwan's Katra
Clive Street Calcutta.

ता० १८।९।०६ई० को आपके बासेमें रात्रिके समयमें केवल चैन कर रहता हूं और लिखूं तो क्या लिखूं ? यानी—किसीने मुझे अज्ञानताके कारणसे रहनेके लिये जगह तक नहीं दिया।

I Present this Book.

To The Editor Vankle
… war Sama Char
Patrika Hindi,
Kalbadevi Road
Bombay

Jagat Hitkari
Shri Kashiniwasi
Baldeoprasad Mehrottra
Khatri Arhayi Ghar
Dt. 21/9/1906